* श्रीः *

शैवमनोरंजनी ।

चारो भाग ।

श्री वाजपेयी देवीसहायजी कृत

जिसे

हाल मुकाम विंध्याचल सें काशिस्थ
पण्डित मोतीराम औदीच्य ने
भक्तजनों के विनोदार्थ
प्रकाशित किया

बी० एल्० पावगी द्वारा-
हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, काशी में मुद्रित ।

१९१०



विशेष द्रष्टव्य ।

सर्व भक्तजनों को ज्ञात हो कि प्रथम भाग में से संपूर्ण कवित्तादिक द्वितीय भाग में रखदिये हैं और कुछ भजन तृतीय भाग में रखदिये हैं। इसका कारण यह है कि प्रथम भाग में केवल श्री-वाजपेयी देवीसहायजी के बनाये हुये भजन हैं, और द्वितीय भाग में केवल महाराज के पौत्र महेश दत्त वाजपेयी जी की उक्ती रक्खी गई हैं। और तृतीय भाग में महाराज के शिष्य शिवगोविंद जी की कृती हैं। और चतुर्थभाग में कुछ महाराज दे० के बनाये हुये भजन हैं, और अन्य शिवभक्तों के बनाये भजन कवित्तादिक हैं ॥ इति ॥

भूमिका।

विदित होकि श्रीमन्महाराज सकल समाज राजमान मान्यवर आकर मणिमाणिक्य कान्यकुब्ज कुलकुमुद उपमन्यु गोत्रज श्रीरामचन्द्र वंशवर मुकुल श्रीवाजपेयी माखनलालात्मज महानुभाव मनीषि मनमोदक श्री ६ वाजपेयी देवीसहाय (१) पूर्वकालमें ६ वर्ष अन्ध रहे तब सब संगी और मित्र वर्गों ने उनके उस अवस्थामें भी शिवाराधनमें प्रतिदिन विशेष अनुरक्त और सर्वदा आनन्द निमग्न देखकर विचार किया कि यह तो कुछ औषध के वास्ते कहते ही नहीं, और इनको कुछ चिन्ता भी नहीं हैं पर अपने लोगों को नहीं चूकना चाहिये ऐसी सलाह करके बड़े २ वैद्य और साथीयो लोगों को बुला के उनकी सम्मति से भाँति २ की औषधि करने लगे, पर गुण किसी ने न किया, तब विवश हो, सलाई, डलाई उससे भी कुछ न हुआ किन्तु नेत्र पक गये, यह दशा देख सब साथियों ने जवाब दे दिया कि यदि "पश्चिम में सूर्योदय हो और हथेली पर लोम जमें तो जमें परन्तु इनके नेत्र तो, धन्वन्तरी भी नहीं आराम कर सके, यह सुन उनके परममित्र श्रीमोहनलाल वर्मा अति उदासीन हो, श्रीवाजपेयी देवीसहायजी के पास आये, और उक्त वृत्त सुनाया, तब श्रीमहाराज देवीसहायजी परम हर्षित की नाई बोले कि हम तो पहले ही उपचार करने

---

(१) जिन्हें इसकाल में लोग शंकराचार्य्यका अवतार अनुमान करते हैं। प्राय. उनका जीवन चरित्र और शिवभक्ति तथा धर्म की स्थापनता देखकर ऐसा निश्चय भी होता है।

का उत्साह नहीं करते थे परन्तु तुम्हारे हठ मे दिया क्योंकि हम ऐसे बहुत सुखी हैं हरिए विकार के छूट जाने मे शंकर के चरणों में निरन्तर मन लगा रहता है और सधिया हमारे नेत्र क्या आराम करेगा, हमारे सधिया तो श्रीविश्वनाथजी हे यदि वह ऐसा कहता है, कि नेत्र नहीं अच्छे होंगे तो, हम यह कहते हैं कि विश्वनाथजी हमारे नेत्रों को अच्छा करेंगे। यदि कदाचित न अच्छे हुए तो हमारे मस्तक में नेत्र जमेंगे, यह कठिन प्रण कर श्रीमहाराज दे० जी. अतिशोकनिमग्न हुए, और लोकप्रसिद्ध भाषा में एक पद्य गीत से शंकर मे कुछ क्रोध और दीनता युक्त प्रार्थना की उस पद्य को सुनते ही श्री उमामहेश्वर ने करुणातुर हो पूर्ववत दृष्टि दी तदुपरान्त बहुत से भजनों में काशी वास की प्रार्थना की, सो भी उनको यथोक्त प्राप्त हुई। विशेष वृत्तान्त विस्तार भय से यहां नहीं लिखा जाता है, महाराज दे०जी का जीवन चरित्र मगाय के देखिये इति शुभम्।

ऐसा इन भजनों का चमत्कार देख मैंने श्रीमहाराज दे०जी से आज्ञा ले उनके पौत्र से शुद्ध रवाय भक्तजनों के मनो-रंजनार्थ प्रकाशित किया।

सदनुगृहीत

पं० मोतीराम औदीच्य

शारदा प्रकाश पुस्तकालय विंध्याचल।

---

(१) जिसका अन्तिम पद यह है, दीनबन्धु यह नाम तजो नहि नैनन रोग नशावोरे। देवीसहाय पुकारत भारत गिरिजा तुम समुझावोरे।

(२) जिनका नाम महेशदत्त बाजपेयी था।

॥ श्री ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शैवमनोरंजनी

प्रथम भाग।

॥ रागिनी भैरवी ॥

गणपति विघन विनाशन हारे ॥ टेक ॥ लंबोदर पीतांबर सोहै फणिमणि मुकुट नयन रतनारे। गजमणिमाल गलेबिच सोहै भाल लाल में चन्द्रकला रे ॥ मोदक लेत देत जननी जब ठुमुक चलत नूपुर झनकारे। रिद्धिसिद्धि दोउ चमर ढुरावत सुर समूह लखि होत सुखारे ॥ उठि प्रभात गिरिजा सुत सुमिरे दुख दारिद्र न आवत द्वारे। देविसहाय बसैं आनन्दवन यह वर देहु महेश दुलारे ॥ १ ॥

॥ भैरवी ॥

ढुंढिराज यह कारज मेरो, शिवसुत जानि तात तोहि टेरो ॥ टे० ॥ अमरा अजर चहत

जा पुर को तापुर में प्रभु देहु बसेरो ॥ आनँद-बन वीथिन के भीतर सुजस कहौं गिरिजापति केरो । देवीसहाय यहै वर मांगत बेग कृपानिधि करौ निवेरो ॥ २ ॥

॥ भैरवी ॥

हमारे भाई ढुण्ढिराज महँराज ॥ टेक ॥ इनकी कृपा कटाक्ष किये तें होत सफल सब काज ॥ हमारे० ॥ अपने जन को देत दयानिधि सुखसमूह को साज ॥ हमारे० ॥ जहँ लग देवचराचर जगमें ये सबके सिरताज ॥ हमारे० ॥ देवीसहाय दास अपने की निन उठि राखत लाज ॥ हमारे० ॥ ३ ॥

॥ भैरवी कालभैरव जी की ॥

हमारे भाई भैरव काल कृपाल ॥ टेक ॥ इनकी कृपा कटाक्ष किये तें छूट जात भ्रम जाल ॥ हमारे० ॥ सुवरण वरण केश अति सुन्दर श्याम चरण नख लाल ॥ हमारे० ॥

असी वरुण के बीच बसत हैं काशी के कुतवाल ॥ हमारे० ॥ देव दनुज नर किन्नर ध्यावत कर जोरे दिगपाल ॥ हमारे० ॥ देवीसहायदास अपनेको छिन में करत निहाल ॥ हमारे० ॥४॥

दोहा ।

उठि प्रभात नित कीजिये, गुरु चरनन को ध्यान
जिनकी कृपा कटाक्षते, चीन्हि परैं भगवान ५

॥ प्रभाती ॥

श्रीगुरुचरन बसो मनमेरे, जाते सरैं काज सब तेरे ॥ टे० ॥ दल सहस्र में आप विराजत झर झर बरषत अमृत घनेरे। अजपा जपौ तपौ हिय मण्डल, मूलचक्र दृढ़ बांधि सबेरे ॥ शक्ति मालिनी चढ़ि उतरत खेलत पूरन बंस हंसके नेरे । रत्नलाल अवधूत दयानिधि, तजि को परै यमन के फेरे ॥ ६ ॥

॥ अर्जी लयलावनी की ॥

हे काशीनाथ कृपाल कृपा यह कीजे ।

आनँद्बन बासी होउँ दरस नित दीजै ॥
तन पीन भयो अति छीन दीनता घेरी ।
अब लीजै बेगि बुलाय करौं मत देरा ॥
द्विजदीन पुकारत द्वार ताहि बुलवाओ ।
अपनो जन जानों ताहि आप अपनावो ॥
मैं धरम करम गौरीश तुम्है दै दीन्हो ।
तुम बैठे ध्यान लगाय मोहिं नहिं चीन्हो ॥
तुम दीनदयाल कहाय दीनता मेटो ।
शरणागत आयो ताहि बेगि उठि भेटो ॥
तुम अजित अनंत अनादि सदा सुखरासी ।
जस गावत वेद पुराण सकल उरबासी ॥
यह पावन पुरी पवित्र तुम्हारी काशी ॥
जे जीव करैं तन त्याग होय अविनाशी ॥
यह तृष्णातरुण तुरंग लिये मोहिं डोलै ।
तुम बिन ममता की ग्रन्थि कौन प्रभु खोलै ॥
जहँ भैरव काल कृपाल ब्याल कर लीन्हे ।
बहु पाप पहार बिलाय दरश के कीन्हे ॥

मैं भैरव सन्मुख जाय भैरवी गैहौं।
आनन्द वन बीथिन वीच प्रेम बरसैहौं॥
मैं कैहौं बात बिचार तिहारे मन कीं।
पूरण करिये प्रभु पैज आपने जनकी॥
चौथोपन लागो नाथ सोच अधिकाई।
देवीसहाय यह अरज गरज सों गाई॥ ७॥

॥ लावनी सूर्य्य नारायण जी की॥

हे दीन दयाल दिनेश कलेश नसावो।
तुम हौ प्रत्यक्ष भगवान ज्ञान दरसावो॥
ममता मायामें फँसो कसो तन मेरो। करिये किरणन सों कृपा होय निरवेरो॥ तुम हौ ब्रह्मा अरु विष्णु महेश हमारे। हमहैं आरत महँराज पुकारत द्वारे॥ तुम्हरे दरशन को देखि. जगत सुख पावै॥ तुम्हरे पद पूजे बिना भाव नहिं आवै॥ तुमहौ मनदीपक देव हगन के वासी। तुमहौ जीवन के मीत सकल सुख रासी॥ भवसागर में मैं परो हरो दुख मेरो। मैं

हौं सविता महराज चरणन को चेरो ॥ तुम्हरे अस्ताचल होन तिमिर घिर आवै । आलस बस ह्वै सब जीव सयन मन लावै ॥ तुम्हरे आगमन निहार जगत सब जागे । निज निज सब काम कृपाल करन सब लागे ॥ पापी औ अजापी जीव प्रात नित सोवैं । तिनको कैसे सुख मिले देखि दुख रोवैं ॥ सुर सिद्ध सुरेश धनेश ध्यान कर ध्यावैं । तुम्हरे बन्दीजन बेद विमल जस गावैं ॥ सुचि होय प्रभात कर जोर निहारै कोई । ताको सुख सम्पत मिलै दरिद्र न होई ॥ रविके सेवक सुख करैं होय नहि रोगी । तनत्यागे सुभगति पाय जायँ जहँ जोगी ॥ तिल तन्दुल अञ्जुलि साज भानु को दीजै । नरतन दुर्लभ द्विजदेह सुफल कर लीजै । देवीसहाय बर देहु दास अपनावो ॥ आनँदबन बीथिन वीच महेश मिलावो ॥ ८ ॥

॥ प्रभाती गणेश जी की ॥

खेलत गणराज आज आवत नहिं कनियां । ठुमुकि चपल चाल चलत बाजत पैंजनियां ॥ माणिक मणि मुकुट लाल, तै सोई सिंदुर भाल, चन्द्रकला फैलि रही चमकत बहु मनियां। सुंदर कुण्डल विसाल, गजमणि की गले माल, करको कंकनसम्हाल, बांधत चौतनियां ॥ देवी को सहाय सदा तेरो सुजस गाय, आनंदघन देहु बास मोहिं शंभु रनिया ॥ ६ ॥

॥ प्रभाती गङ्गाजी की ॥

जै जै जगदम्ब गंग देहु दरस माई ॥टे०॥ ब्रह्म धाम करि अराम सुर पुर कीन्हो पयान देखत गौरीश लई सीसपै चढ़ाई । भागीरथि तप निहारि दीन्हों प्रभु बुंद वारि, घूम करत धार धसी भूतल पर छाई ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत तेरे तट आई, पीवत तुव नीर पीर दारुन मिटि जाई । देवीको सहाय

ताहि लीजै अपनाई, आनँदबन वास देहु शङ्कर सिवकाई ॥ १० ॥

॥ भैरवी महादेव जी की ॥

गङ्गाधर महादेव सुन, पुकार मेरी । दीजै बर बेगि नाथ कहा करत देरी ॥ दीनबन्धु काटु फन्द कलिमल अघबोरी । बेगि मोहि दरश देहु आस गही तोरी ॥ चन्द्रभाल करु निहाल मेटो भ्रम मोह जाल । काशी में बसाउ नाथ कृपा दृष्टि हेरी ॥ देवीको सहाय सदा सेवक तेरो कहाय ! आनन्द बनवास आस मांगत करजोरी ॥ ११ ॥

॥ भैरवी ॥

विश्वनाथ चरण- कमल ध्यावो मनलाई । जन्म मरन छूटिजाय सतगति ह्वै जाई ॥ वि० ॥ जाके पुरको प्रभाव रह्यो जगत छाई । तीरथ सुरसिद्ध सबै बास करत आई ॥ विश्व० ॥ देस देस के नरेश आवत सब धाई । काशी

में मृत्यु चहत मांगत हरखाई ॥ विश्व० ॥ बिधिहरिहर पुरते महिमा अधिकाई। काशी कैवल्य देत निगमागम गाई ॥ विश्व० ॥ शिव पद अनुराग जाग भाग बड़े भाई। बिगरी जन्म जन्मन की देत शिव बनाई ॥ विश्व० ॥ असी वरुन बीच मरे देखि सुर सिहाई। शङ्कर तेहिं ज्ञान देत मंत्रको सुनाई ॥ बि० ॥ अप्सरा अनेक करैं तान गान गाई। दिव्य देह पाय चले दुन्दुभी बजाई ॥ बिश्व० ॥ जो गति जपतप औ दान किये ना दिखाई। सोइ मुक्ति बांटत शिव निस दिन हरखाई। विश्वनाथचर० ॥ छाड़ो सब खटक भटक आनँदबन जाई। देविको सहाय ताहि शंकर मिलिजाई ॥ बिश्वनाथ० ॥ १२ ॥

लावनी अन्नपूर्णा जी की ॥

हौं कपूत निजपूत तिहारो अन्नपूरणे माईरी। तेरी कृपा कटाक्ष किये तें मेरी सब बनिजाईरी ॥

काशीपुरी सकल जगपावनि भूमि तें भिन्न बनाईरी। यमपुर जीव जान नहिं पावैं तहँ तेरी ठकुराईरी॥ भागीरथी और रवितनया सादर संग लिवाईरी। तुव पुरको प्रताप लखि जननी बास कियो तहँ आईरी॥ अणिमादिक सब अन्न मधुर लै करत फिरत पहुनाईरी। सुरदुर्लभ सुख देत सबन को अंत मोक्ष पद पाईरी॥ आनँद मगन सुमन सुर बरखैं बाजत गगन वधाईरी। दस अरु चार भुवन चौधो से शोभा अति अधिकाईरी॥ दरसन से अघ दूर होत हैं कवि वरणत सकुचाईरी। आप पियारे पास बसाये हमैं दियो बिसराईरी॥ गो द्विज दुखित देखि जब जननी तब तुम करत सहाईरी। भवसागर तारण को तरणीपुरी पुनीत बनाईरी॥ देबी सहाय असी बरुण बिच मो मन रह्यो समाईरी। तेरे चरन कमल नँख निरखत शोक समूह नसाईरो॥ १२॥

॥ लावनी ॥

वाराणसी वसावो शङ्कर, वाराणसी वसावोरे । बहुत दिननसे आस लगी है अब क्या देर लगावो रे ॥ मणीकर्णिका घाट के ऊपर गङ्गा नित्य नहाँवों रे । तारकेश्वर पूजन करिके ढूंढिराज पहँ जावों रे ॥ भैरोनाथपुरी के मालिक तिनकै दरसन पावों रे । अन्नपूरणा पुरन करिहै चरन सरन चित लावों रे । विश्वनाथ पद पूजन करिकैं सभा जाय जस गावों रे । ज्ञान बाउरी करौं आचमन आवागमन मिटावोंरे ॥ दीन बंधु यह नाम तजो नहि नयनरोग नसावोंरे । देविसहाय पुकारत आरत गिरिजा तुम समुझावो रे ॥ १४ ॥

---

१ दो०-रहे वर्षछट अध जब, शुभ मति देवि सहाय ।
भजन कह्यो यह प्रेम सो, तन मन सकल लगाय ॥ १ ॥
दीन वचन सुनि शंभु सो, कह्योगौरि अकुलाय ।
दीजिय दृग निज दास को, नाथ हिये हरषाय ॥ २ ॥
यह सुनि दीन दयालु हर, दई पूर्व समदीठि ।
लखहु भक्त हित आपही गिरिजा भई बसीठि ॥ ३ ॥

॥ लावनी ॥

दीनबन्धु[१] प्रभु नाम राखि मेर नयनन रोग नसायोरे । सुजस प्रताप कहालों वरणो फिर मोहि जग दिखलायोरे ॥ कालकूट ज्वर जरत सुरासुर तीन लोक विष छायोरे । जग हित आप आचमन कीन्हों नीलकण्ठ झलकायोरे ॥ सुरसरि वेगि देखि सुर बोले अब कैलाश वहायोरे । आप उठाय सीस धरि लीन्ही जटन बीच बिलमायोरे ॥ कोटि भानु तन तेज विराजै चन्द्र कोटि छवि छायोरे । वाम अंग गौरी अति सोहै त्रिभुवन में सुख छायोरे ॥ काम धेनु कोटिन जंहं डोलैं सुरतरुवाग वनायोरे । शची रम नित करैं आरती मन वांछित फल पायोरे ॥ जै जै जै गौरिश दयानिधि मैं सरणागत आयो रे ।

---

१ दो०–दीनबंधु यह नाभ निज, तजो देहु वा नैन ।
पूर्व भजन मह यह कह्यो, निज मुख करुओ वैन ॥१॥
पाय नैन अपराध निज, समुझि समुझि अकुलाय ।
शमन हेत गायो उलटि, अन्तिम पद हर बाय ॥ २ ॥

देवीसहाय को रोग हरो जब गिरिजा ने समुझायोरे ॥ १५ ॥

॥ लावनी ॥

हे शङ्कर करुणानिधान प्रभु लीजे खबर हमारोरे। भवसागर से पार करो मैं आयो शरण तिहारीरे ॥ यह कलिकाल विहाल किये जेहि धरम दिये सब टारीरे। नीच करत आचार बहुत द्विज होन लगे व्यभिचारीरे ॥ याहु पर अनरीत करत कलिने माया विस्तारीरे। जती करत बैपार बहुत धन हीन कुलीन दुखारीरे ॥ देवीसहाय जपो शिव शिव व्है हैं मुद मंगल कारीरे। मैं तो प्रभु की गोद भयो शिव पितु गिरिजा महँतारी रे ॥ १६ ॥

॥ लावनी ॥

ऐसेइ उमिर वितीत भई शिव प्रीतरीत नहिं जानीरे॥ टेक ॥ बालविनोद किये सुख में मस भीजत लखी जवानीरे। ताहू पैं शिव

नाम लियो नहिं जश आय नियशनी रे ॥ सेवा टहल बनत नहिं मोसों मन्द महा अभिमानी रे । मेरे मातु पिता गिरिजा शिव मै उरमें यह आनीरे ॥ वे तो हैं प्रभु दीनबंधु सेवक सों अति-हित मानीरे । याही ते शिव सरन गह्यो त्रिभुवन पति अरु बिज्ञानीरे ॥ देवी सहाय उमापत्ति को नित चरण कमल अनुगामीरे । दरशन हेत लालसा लागी प्रभु तुम अन्तरजामीरे ॥ १७ ॥

॥ ख्याल ॥

गौरिपति सों प्रेम नहीं मन काम के हाथ बिकानेरे । वाही में लौलीन रहत हैं दिवसज़ात नहिं जानेरे ॥ गर्भ बास में तोहिं उरध करि मल कफ़ मुख लपटानेरे । जठर अगिन की आंच लगी तब सुधिकरि अतिपछिताने रे ॥ सज्जन संग तोहि नहिं भावै लंपट साथ सुहाने रे । तिनके सुनस जाय गणिकन में धन अरु धर्म ठगाने रे ॥ देविसहाय भजन के कीन्हे पाप

पहाड़ बिलाने रे । नरतन पाय करो मन थिर जे भजन करैं ते स्याने रे ॥ १८ ॥

॥ ख्याल ॥

सुनो सदा शिव सांब गोसाँई मन अनीत रत मेरारे ॥ टेक ॥ पूजन भजन करत निस-बासर तब सुख होत घनेरा रे । नेकौ तुव पद भूलि जाय तब विषइनको मन चेरा रे ॥ मानत नहीं मूढ़मन मेरो समुझायो बहुतेरा रे । अबतो कृपादृष्टि करि हेरो मैं सेवक प्रभु तेरारे ॥ मोकों नाथ निहारहु आरत निजपुर देहु बसेरा रे । सखा समेत सुजस नित गैहौं मिलि जे हैं भववेरा रे ॥ असरणसरण दीनके बन्धू अब करिये निरवेरा रे । देविसहाय कि त्रास मिट जब करौ हृदय महँ डेरा रे ॥ १९ ॥

॥ ख्याल ॥

है जगसार बिचारयही शिवनाम जपो दिन-रातीरे । जन्म मरन दुख छूटजाय तब तीनों

ताप नसातीरे ।। सोई ज्ञानी सुसील जगमें जो देत सलाह सुहातीरे । गौरीपति के भजन बिना यह बैस बृथा सब जातीरे ।। शिवपद बिमुख मनुज जगमें ते जानहु आतमघातीरे । नरक परे पछतात सदा जमगन मारत घन छातीरे ॥ देवीसहाय समाय रह्यो शिव प्रेम नेम बहु भांतीरे । हृदय कमलमें देखि परैं शिव चरण कमल नख पांतीरे ॥२० ॥

॥ ख्याल ॥

है जगसार विचार यही शिव नाम सदा सुखदाई रे ॥ टेक ॥ जोग समाधि बनै नहिं कलिमें भूख प्यास अधिकाईरे । तापरकाम कमान लिये सर मारत मोह दिखाई रे ।। व्याध महा अघरासि रह्यो मृगया हित गो बन धाई रे । सीत बिबस शिवनाम कह्यो तजि तन शुभ गति पाई रे ॥ अजामील गज गनिका तारी नाम मंत्र अस भाई रे । ता प्रभुको नित

भजन करो तुव बिगरी सब बनजाई रे ॥ देबी-
सहाय भजन के कीन्हे हृदय विमल व्है जाई रे
तहँ गौरीपति रूप निरखि नित नूतन प्रीत
लगाई रे ॥ २१ ॥

॥ ख्याल ॥

गौरी शिवशंकर सों बोली सेवक लेहु
बुलाईरे । तारक मंत्र जपत निसवासर ताकी
सुध विसराई रे ॥ सखा समेत बसावहु निजपुर
दुख दारिद्र मिटाईरे । अन्नपूरना अन्न देत हैं
सुख संपति अधिकाई रे ॥ गिरिजा वचन सुनत
शिवशंकर बोले अति हरखाई रे । कछुदिन बीते
बोलि लिहो मेरो वचन वृथा नहिं जाई रे ॥
देबिसहाय अनन्य भक्त तुव नूतन प्रीत लगाई रे।
ताकोनाथ विलंब न कीजै भृंगी देहु पठाई रे ॥२२॥

॥ भैरवी ॥

मैं शिव सरन तिहारी आयो ॥ टेक ॥
दीनदयाल दयानिधि मोकों कबहुँ न दरश

दिखायो । शरणागतको त्याग कहां प्रभु तुम काहे बिसरावो ॥ तृष्णा तरुण भई करुणा निधि चाहत मोहि नचायो । देविसहाय दास अपने को अब चहिये अपनायो ॥ २३ ॥

॥ भैरवी ॥

मैं तो शिव सदा कहावत तेरो ॥ टेक ॥ तुम्हरी कृपा कटाक्ष कियेतें मेरो सब निरुवेरो ॥ करहु कृपा जानि निज सेवक जातें होय निवेरो । जिनके मन महेश चरणन में मैं तिनहूं को चेरो ॥ जरा जरूर आय नगिचानो चित चिंता ने घेरो । देविसहाय दास अपने को निजपुर देहु बसेरो ॥ २४ ॥

॥ भैरवी ॥

मैं शुचि सेवक गौरीपति को ॥ टेक ॥ भस्मभाल रुद्राक्ष गले मे सोई हमारे मति को । सत संगत को सार निहारत त्यागन करत कुमति को ॥ अधमहुं नाम लेत शङ्कर को

अधिकारी शुभगति को । देविसहाय बसे आनन्दवन फल पायो जपतप को ॥ २५ ॥

॥ प्रभाती ॥

मैं तो भाई सेवक हौं शिवकेरो ॥ टेक ॥ उनही को नाम जपत निसबासर सांझ गनौं न सबेरो । जाके चरन कमल के नीचे मुनि मन करत बसेरो ॥ सेस सुरस धनेसहु ध्यावत जस गावत बहु तेरो । देविसहाय दास अपने को भवसागर से निवेरो ॥ २६ ॥

॥ प्रभाती ॥

मैं शिव सेवक सदा निकट को ॥ टेक ॥ बिछुरे भये बहुत दिन मोंकों तुमही सों मन अटको ॥ शिव पद भक्ति भाव निरखनको भवसागर में भटको । शिवपद बिमुख दुखित नर निरखत मन मलीन मुख लटको ॥ अजित अनन्त अनादि सदा शिव है व्यापी घटको ।

देविसहाय बसों आनँद बन छुटि गयो सब खटको ॥ २७ ॥

॥ प्रभाती ॥

मैं शिव सदा यहै बर पाऊँ ॥ टेक ॥ बसों समीप सदा सुरसरिके अन्त कहूँ नहिं जाऊँ । साचो करों सनेह शम्भु सों बिमल २ गुण गाऊँ ॥ शिवपद पद्मपराग पियन हित चित चंचल चपटाऊँ । देविसहाय स्वांस सितार सो उमा महेश रिझाऊँ ॥ २८ ॥

॥ भैरवी ॥

मैं शिव नाम काम तजि गैहौं ॥ टेक ॥ जन्म जरादिक दोष जगत के ते सब धोय बहैहौं । ह्वै हैं बिमल हृदय तब मेरो उमा महेश बसैहौं ॥ जाको भजत बेद बिधि हरिहर ताही को ह्वै रैहौं । देबिसहाय सदा शिव सन्मुख प्रेम प्रभाव दिखैहौं ॥ २९ ॥

॥ भैरवी ॥

मैं शिव सुमिरत उमिर बितैहों ॥ टेक ॥ शिवपद बिमुख पुरातन पापी उन तन मैं न चितैहों। धरिहौं ध्यान सदा शङ्कर को लघु किङ्कर ह्वै रैहों ॥ सुनिहौं सुजस उमापति को नित नाम सुधा रस पैहों। देबिसहाय शिवा शिव सुमिरत भवसागर तरिजैहौं ॥ २० ॥

॥ प्रभाती ॥

मैं शिवसरण तिहारी रैहौं ॥ टेक ॥ करिहौं नीच टहल गृहकी सब ओर कछु नहीं कैहौं। तेरे चरनकमल नख नीचे चित चंचल चपटैहों ॥ सुनिहौं जे अनन्य शिव सेवक तिनही के घर जैहौं ॥ भैरव ढूंढराज के सन्मुख बिनती विविध सुनैहौं। देविसहाय शिवाशिव सुमिरत भवसागर तरि जैहौं ॥ २१ ॥

॥ भैरवी ॥

अब मोहिं गौरीनाथ बुलायो ॥ टेक ॥

महाँराज महरानीजी ने लिखि कर पत्र पठायो। बाँचत पत्र पवित्र भयो मन धाम ग्राम बिसरायो। आनदबन बीथिन की शोभा चाहत मोंहि दिखायो। देविसहाय दास अपने को चौथेपन अपनायो ॥ ३२ ॥

॥ प्रभाती ॥

अब मोहि कासीबास बतायो ॥ टेक॥ ममता मोह फांस से मांको छिनमें आप छुड़ायो। आत्माबीरेश्वर के समीप प्रभु सुरगुरु पास बसायो ॥ बैठत उठत दरस सुरसरि के मन बांछित फल पायो। मखमल माखन से अति कोमल जावक भस्म लगायो ॥ ऐसे चरन उमा महेश के लखि आनँद अति उर छायो। देविसहाय दास अपने को जम जाचन से बचायो ॥३३॥

॥ भैरवी ॥

अब हम नाम रतन धन पायो ॥ टेक ॥ जाके लिये होत विमल उर सो गुरुदेव बतायो।

जाको सुजस महा मुनि गावैं ताको दास कहायो ॥ श्रीगुरुचरन कृपाके कीन्हे साम्ब सरन महं आयो। देबिसहाय पाय प्रभु अपनो हिय में अति हरखायो ॥ ३४ ॥

॥ प्रभाती ॥

अब प्रभु करहु कृपा यहि भाँती ॥ जाते मिटै मोह ममता मद शिव सुमिरों दिनराती। विश्वनाथ पद पूजन कीन्हें उमगि उठे मम छाती ॥ आनन्द बन बीथिन में डोलों भूलि जाहुँ निज जाती। देवीसहाय उमा शङ्करको लिखत अरज की पाँती॥ ३५ ॥

॥ भैरवी ॥

अब मोहि नाथ भरोसो आयो ॥ टेक ॥ जालगि भ्रम्यो बहुत अवनीतल सो भ्रम मोह मिटायो ॥ गर्भवास में मोंहि दया निधि अश्वनें चरण चलायो। करि तुम कृपा जानि निज सेवक निज कर मोंहिं बचायो॥ तबते हद्द

विश्वास भयो उर शिव सेवक में कहायो । प्राणनाथ गिरिजेस हृदय वसि तब सब सोच मिटायो ॥ देवी सहाय स्ववस मनकों करि प्रभु चरणन में लगायो । तीरथ अटन दानको फलजो सो घर वैठे पायो ॥ २६ ॥

॥ प्रभाती ॥

अब हम सांब चरन रति मानी ॥ टेक ॥ लोग कुटुब की आस न कीन्ही गिरिजापति हित जानी । जाको नाम जपत निस बासर नित नवमङ्गल खानी ॥ आदि शक्ति जेहि वेद बखानत सो सङ्कर की रानी । देविसहाय सदा-गुन गावत करम वचन मृदुबानी ॥ २७ ॥

॥ भैरवी ॥

करब का काशी वसिबो जाय ॥ टेक ॥ ऐहै काल अचानक जवही तब को लीहे बचाय । उन सों प्रीत पुरातन मेरी वेई रहे हैं समाय ॥ भये सपेद केश तन निरबल नैनन नेक दि-

खाय । छोटे पतित बहुत तुम तारे मैं पतितन को राय ॥ वापुर जाय तजै तन कोई दुर्लभ तन ह्वै जाय । देवीसहाय बसौ आनँदबन ममता मोह बिहाय ॥ ३८ ॥

॥ प्रभाती ॥

कसक सब काशी में मिटिजाय ॥ टेक ॥ जन्म जन्मकी जमी जमनिका सो शिव देत छुटाय ॥ अघ औगुनके भरे खजाने राखे बहुत छिपाय । पुर पैठत प्रणाम करि प्रभु को दैहौं पाप लुटाय ॥ ऐहैं मिलन महेश भक्त जब परिहौं चरन लपटाय । देवीसहाय दास अपने को निज पुर देहु बसाय ॥ ३६ ॥

॥ भैरवी ॥

भोला! भली बनाई काशी ॥ टेक ॥ शिवशिव नाम जपै निसवासर कबहुँन होत उदासी । असी बरुन के बीच बसतु हैं विश्वनाथ अविनासी ॥ सुरपुर सरिस सदन सब केरे मुक्तिद्वार पर दासी ।

देवीसहाय वसावहु निजपुर तुम अन्तर घट वासी ॥ ४० ॥

॥ प्रभाती ॥

बाबा हमें वसाओ काशी ॥टेक॥ जाको नाम लिये अघ भाजत तन में रहै समासो । अन्नपूरना अन्न देत जहँ सुरसरि वहत सुधासी ॥ विश्वनाथ पद पूजन कीन्हे सतगति रहत खवासी । देवीसहाय शिवा शिव सुमिरे मोह मिटै भ्रम फांसी ॥ ४१ ॥

॥ भैरवी ॥

जो तुम दीनदयाल कहावो ॥ टेक ॥ तौ मम हृदय बिमल करिये प्रभु भक्तिभाव दरसावो । श्रीगौरी हिय रंजन शङ्कर मन मेरे वसि जावो ॥ बेगि हरो दारुण दुख दारिद अब जनि देर लगावो । देवीसहाय दास अपने को निज पुर बेगि बुलावो ॥ ४२ ॥

॥ प्रभाती ॥

शिवशिव सुमिरत प्राण हमारो ॥ टेक ॥

गर्भवास में मोहि बचायो जिन सेवक लखि-बारो । उनहिंको ध्यान ग्यान उनहीं को उनहीं को चरण निहारो ॥ पूजन भजन नेम ब्रत संयम शिव हित हम दै डारो । देवीसहाय भजन भव दीपक दोउ पुर में उजियारो ॥ ४३ ॥

॥ प्रभाती ॥

गौरीपति सो प्रेम हमारो ॥ टेक ॥ उनहि को नाम सुधा रस पीवत लगत मोंहिं अति प्यारो । उनहि के चरण कमलके ऊपर मन मेरो मतवारो ॥ छिनपल मोकों बिसरत नाहीं फणि-गण भूषणवारो । देवीसहाय कह्यो गुरु मोंसों उरअन्तर में निहारो ॥ ४४ ॥

॥ प्रभाती ॥

पतितशिरोमणि नाम हमारो ॥ टे० ॥ कब-हुँन ध्यान धरत उर अन्तर कबहुँन नाम उ-चारो । कबहुँन सुयश सुनत शङ्कर को लगत कुसंग पियारो ॥ कबहुँन सन्त चरण करि सेवा

नहि निज पाप निकारो। देवीसहाय दास अपने को अबकी बेर उबारो ॥ ४५ ॥

॥ भैरवी ॥

जबते भयो सांब को चेरो ॥ टे० ॥ तबते शत्रु मित्र भये मेरे बैर छुट्यो सब केरो ॥ दरसन बिना बहुत दिन बीते लगो रहत मन मेरो। मोह निसा हर हेत सिरानी अब शिव सुमिरु सवेरो ॥ आनन्दबन बसाय सुख दीजै शङ्कर किंकर तेरो। देवीसहाय जानि जन अपनो खोलि पलक प्रभु हेरो ॥ ४६ ॥

॥ भैरवी ॥

भजन बिनु दीन्ही बयस बिताय ॥ टेक। जाके लिये जनमजग लीन्हों कीन्हों न कछू उपाय। कियेविनोद गोद जननी के पय पीवत मुसुकाय ॥ तरुण भये तन निरखन लागे तरुणी तरुण सुहाय। भये सपेद केश तन निरबल नैनन नेक दिखाय ॥ धन अरु धाम काम नहिं

ऐहैं छिन में सब छुटि जाय । देवीसहाय बसो आनँदवन साचो यहै उपाय ॥ ४७ ॥

॥ भैरवी ॥

रसना राम कहो मनलाई ॥ टे० ॥ राम बिना कोउ काम न ऐहैं सुत परिवार बड़ाई। अन्त समै ये तोहि तजैंगे फिर पीछे पछिताई ॥ नाम प्रताप जानि घटयोनी वाल्मीकि मुनिराई । निज मुख राम चरित जिन गायो भक्ति कल्पतरु पाई ॥ दुर्लभ देह फेरि नहि पैहैं छाड़ु कपट चतुराई । जब यमराज करैंगे लेखा सब कलई खुलि जाई ॥ आतम ज्ञान जोग अरु साधन या युग में कठिनाई । देवी सहाय विमल गुण गावो कृपा करैं रघुराई ॥ ४८॥

॥ भैरवी ॥

शिवशिव नाम धाम दिखरावै ॥ टे० ॥ नाम से होत काम परिपूरण भक्ति भाव उर आवै । करि विश्वास आस चरनन की भव-

बन्धन छुटिजावै ॥ है षट चार अठारहु को मत नर वर भवतरि जावै । देवीसहाय सुखी सोइ जग मे नाम निरंतर गावै ॥ ४९ ॥

॥ भैरवी ॥

हे गौरीश शरण मैं तेरी ॥ टेक ॥ तुम उदार त्रिभुवन पति स्वामी करहु कृपा निज जन तन हेरी ॥ दीनन की सुधि लेत सदा तुम हमरी बेर करी किमि देरी । निसदिन बसौ नाथ उर मेरे बेगि करहु प्रभु कृपा घनेरी ॥ आनँदवन वसिवे को दीजै विश्वनाथ यह आसा मेरी । अबतो दरस चहत मन मेरो चितवो वेगि कमल मुखफेरी ॥ भव सागर को पार मिलै नहिं याते दुखित कहत हों टेरी । देवीसहाय सकल सुर सेवत अणिमादिक जाकी सब चेरी ॥५० ॥

॥ भैरवी ॥

जे शिव साम्ब चरण मन लाये ॥ टेक ॥ तिनके विमल प्रकाश भये उर कलिमल धोये

बहाये ॥ जे निगमागम सार समझ ते नाम जपत सुख पाये। तिनकी जननी जनक बड़ भागी जिन ऐसे सुत जाये ॥ शिव गिरिजा मय जगत निहारत सबसों प्रीत लगाये। परनिन्दा परधन परदारा इनसों रहत बराये ॥ देवीसहाय धन्य तेइ जे शिव शरणागत आये। तिनको नाथ अभय पद दीन्हे विमल विमल गुण गाये ॥ ५१ ॥

॥ प्रभाती ॥

तुम विन शङ्कर कोइ नहिं मेरा ॥ टेक ॥ भवसागर को पार न जानो नाव मिले नहिं बेरा ॥ मोंको नाथ जानि निजसेवक निज पुरदेहु बसेरा। देवीसहाय दरसको लोभी उमा सहित कीजै फेरा ॥ ५२ ॥

॥ प्रभाती ॥

है गौरीपति नाथ हमारा ॥ टेक ॥ जाको ज्योतिरूप सुर बरणत बेदन ब्रह्म बिचारा। सो

महेश त्रिभुवन पतिं स्वामी मैन नैनसों जारा॥ त्रिपुरासुर तिहु लोक विकल किये दियो महाँ दुख भारा। तहँ गिरिजा पति अभै किये सुर जाय असुर पति मारा॥ कर कपाल अरु शूल अभै बर देत सकल दुख टारा। गौरशरीर अधिक छबि तामे नीलकण्ठ अति कारा॥ सब उर वसत सुनत सबकी शिव है सब जगसे न्यारा। देवीसहाय पतित पावन भये जब शिव नाम उचारा॥ ५२॥

॥ भैरवी ॥

जो शिव सांब चरण मन लैहै ॥ टेक ॥ तो परिवार पवित्र होयगो कलिमल सब नसिजै है ॥ व्है है बिमल बिराग ज्ञान उर जीको तपन बुझैहै। करिहैं कृपा जानि निजसेवक भवसागर तरि जैहै ॥ असरण सरण दीनहित कारी सो तोको अपनैहै। दीहैं दृढ़ अनुराग चरण में माया फिर न सतैहै॥ देवीसहाय उमापति

तोकों आनँदवनहि बसै है। तारेक मंत्र सुनाय श्रवनमें आवागवन मिटै है ॥ ५४ ॥

॥ भैरवी ॥

शिव पद सुमिर सदा सुख लैहै, नाहि तो जन्म अकारथ जैहै ॥ टेक ॥ जन्म जन्म के पाप पुरातन यमयातन से तूँ बचि जैहै। जो गै है शिवनाम कामतजि तो शिव संग सनातन रैहै ॥ जप स्वतंत्र गुरु मन्त्र निरन्तर अन्तर घट प्रकाश व्हैजैहै। तबहि महेश कलेश काटि तोहि निज स्वरूप उर आनि दिखैहै ॥ देवी सहाय भजन के कीन्हे भक्ति बिराग ज्ञान उर ऐह। छुटि जै हैं भवके दुख दारुन शिव स्वरूप में जाय समैहै ॥ ५५ ॥

॥ प्रभाती ॥

गौरीनाथ शरण तकि आया ॥ टेक ॥ बिनु तुव कृपा दयाल उमापति मोह मिटै नहिं माया ॥ भ्रमत रह्यो निस दिवस अवनितल विषैभोग मन

लाया । तब तुम दया दास पर कीन्हो कलिमल धोय बहाया ॥ असरन सरन दीन हितकारी बेद पुरानन गाया । श्रीगुरुदेव दया करि मोकों जिन यह रूप दिखाया ॥ देवीसहाय उमापति सेवत नामरतन धन पाया । सखा समेत बसावहु निजपुर यहै आप की दाया ॥ ५६ ॥

॥ भैरवी ॥

भजन बिन जीवत पशू समान ॥ टेक ॥ देव पितर गुरु पोषत नाहीं उदर भरत ज्यों श्वान । सत संगत सो दूर बसत हैं सुने न वेदपुरान ॥ सपने न करत विप्रपद पूजा गनिकन को सनमान । देवीसहाय सार है कलि में करैं जो प्रभु पदध्यान ॥ ५७ ॥

॥ प्रभाती ॥

शिव शिव नाम रटौ करो रसना ॥ टेक ॥ झूठ मीठ तोकों अति भावत हरसों प्रीत करत तूं कसना । यह कंकाल उपाधिबडि एक

परत्रिय रूप देखि नहिं फसना ॥ तन मन से गौरीस भजन कर है संसार रैनको सपना । देवीसहाय कहत सब सों यह है जगसार शिवा शिव जपना ॥ ५८ ॥

॥ प्रभाती ॥

जो शिव नाम लेत अलसैहै ॥ टेक ॥ तो फिर जन्म जन्म के पातक तेरे कौन छूटै हैं। है शुभ अशुभ करम को मालिक तासो तूं का कैहै ॥ सुन्दर वयस ऐसमें खोई अन्त आप पछितैहै । देवीसहाय भजन बिनु कीन्हे रसना रस नहिं पैहै ॥ ५९ ॥

॥ प्रभाती ॥

है शिव नाम सुधा से नीको ॥ टेक ॥ जाकेलिये विराग होत उर भक्ति भावको टीको॥ दृढ़ विश्वास आस चरणनको सुख दाई सबही को ॥ श्रुति सिद्धांत सराहत जाको ब्रह्मनाम

शिवही को । देवी सहाय छाछ नहिं छूवत स्वाद सराहत घीको ॥ ६० ॥

॥ भैरवी ॥

राखो लाज आज त्रिपुरारी ॥ टेक ॥ यह कलिकाल हाल अस कीन्हे दीन्हे वरण बिगारी भूसुर भूत पूत हित पूजत पतित वेद वृत धारी ॥ जरा जरूर जोर करि बैठीं देखि भयो भ्रम भारी । यह तन पीन छीन भयी मेरी बहन लगी मुखलारी ॥ आनंद वन सुरसरि समीप प्रभु दीजैवास विचारी । तुमरो दास कहाय हाय हर होय न हँसी हमारी ॥ ममता मोह फांस में बांध्यो लीजे वेगि उबारी । देवीसहाय दास दुखदेखत दीजै पलक उघारी ॥ ६१ ॥

॥ प्रभाती ॥

भोला भली विपति निरवारी ॥ टेक ॥ नाहक लोग दोष मोहि देते सन्मुख सहतो गारी । निजजन दुखित देखि तब दौरे नन्दी-

यान बिसारी ॥ अभय कियो प्रभुदास आपनो कृपा कटाक्ष निहारी। देवीसहाय मगन मुख बोलो जैशङ्कर बलिहारी ॥ ६२ ॥

प्रभाती ॥

मैं शिवहेत जन्म जग लीन्हों ॥ टेक ॥ गौरीपति कृपाल शङ्करको तनमन सब दैदीन्हो। तबसे गये रोग तजि तनसे नाम सुधारस पीन्हो ॥ शिवपद पदम पराग पियन हित नेम निरंतर कीन्हो। देवी सहाय सदा शिव को यश कहत प्रेमरंग भीन्हो ॥ ६३ ॥

॥ प्रभाती ॥

हे विधि वृथा जन्म जग दीनो ॥ टेक ॥ गौरीपति के चरन कमल में मैं मन मधुपन कीनो। तीरथ गयो न ज्ञान भयो उर भक्ति भावसो हीनो ॥ देव अदेव भजत जाको नित सो शिवनाम न लीनो। देविसहाय उमापति को यश कहत प्रेमरँग भीनों ॥ ६४ ॥

॥ प्रभाती ॥

हे विधि कौन करम मैं कीन्हों ॥टेक॥ जाते मोहि दयानिधि शङ्कर कर गहि दरस न दीन्हो ॥ सुनि सुनि हाल ग्वाल सवरी को उन सम मोहि न चीन्हो। देवीसहाय सदा शिवको यश कहत प्रेम रँग भीन्हो ॥ ६५ ॥

॥ प्रभाती ॥

जग पितुमातु महेश भवानी ॥टेक॥ गर्भवास में मोहि बचायो सो सब सुनी कहानी ॥ तीनों लोक उदर में जाके कहत वेद बुध बानी । तीनों देव प्रगट जेहि कीन्हे तीनों गुण की खानी ॥ जहँ लग जीव चराचर जगमें तहँ शिव सक्ति समानी । देविसहाय भजन शङ्कर को सुख समूह की खानी ॥ ६६ ॥

॥ प्रभाती ॥

है शिवनाम नफा जग माहीं ॥ टेक ॥ जाके लिये छुटै भवबन्धन पाप ताप नसिजाहीं । यह

बैपार पार जाने को शिव पद प्रीत सराहीं ॥ कर उरबोध सोध करतलमें आप में आप दिखाहीं। देवीसहाय सुन्यौ संतन सों नाम सरिस कछुनाहीं ॥ ६७ ॥

प्रभाती।

मैं शिव सेवक झूठ कहायो ॥ टे० ॥ आनँद बन बोथिनके भीतर कबहु न मोहि फिरायो। काम क्रोध मद लोभ न छूट्यो तृष्णा तरुण नचायो। देवीसहाय को दोष न देख्यो प्रेम मगन भ्रम छायो ॥ ६८ ॥

॥ भैरवी कृष्ण के जन्म की ॥

जो सुख नंद जसोदा पायो ॥ टे.॥ सो सुख चहत रहे ब्रह्मादिक जोग समाधि लगायो। जाको नेति नेति श्रुति गावत सो प्रभु प्रगट खिलायो ॥ गोपुर सरिस लखत सुर गोकुल सुख संपति सों छायो। देविसहाय शरण शङ्कर की कृष्ण जन्म सुनि आयो ॥ ६९ ॥

॥ प्रभाती ॥

मो सम भयो अधम कोउ नाहीं ॥ टेक ॥ श्री महेश पदपंकज तजी मन भ्रमत फिरत जग मांहीं । कबहु न ध्यान धरत शंकरको नाम जपत अलसाहीं ॥ छूटन ग्रंथि पंथ नहि सूझत आप उलटि उरझाँहीं । देविसहाय सीख मन मानों शिव सुमिरत दुख जाहीं ॥ ७० ॥

॥ प्रभाती ॥

अब कछु और तें और दिखानो ॥ टे० ॥ जाके लिये जनम जग लीन्हो सो सब सुरति भुलानो ॥ सुधा बिहाय धाय विष पीवत भावत काम कहानी । ताहूपै हरनाम लेत नहि ममता मति लपटानी ॥ कबहुन सुयस सुन्यो शंकर को सतसंगत नहिं जानी । अबहुँ भजो महेश पदपंकज होय सकल अघ हानी ॥ भये सफेद केश तन निर्बल मुख द्युति अति कुम्हिलानी ।

देबिसहाय अधम खल पामर शिव सुमिरत भये ज्ञानी ॥ ७१ ॥

॥ भैरवी ॥

जबते भयो शरण दिनकरकी ॥ टे० ॥ तब ते भयो सकल सुख मोकों खटक भटक गइ मनकी । ये सविता शङ्कर स्वरूप हैं पीर हरत निज जनकी ॥ उठि प्रभात रवि के पद पूजत अटक रहत नहि धनकी । देविसहाय बसै आनँद बन जहँ सरायँ सिद्धन की ॥ ७२ ॥

॥ प्रभाती ॥

को प्रभु दीनबन्धु दिनकरसो ॥ टेक ॥ उदय होत दुख दूर होत हैं ताप तिमिर सब झरसो ॥ जो ध्यावत पावत फल चारो देत सदा शुभ बरसो । देवीसहाय सरन ताही के ब्रह्मरूप हरिहरसो ॥ ७३ ॥

॥ राग देश ॥

भज मन चन्द्रशेखर चरण ॥ टेक ॥ सगुण

निर्गुण रूप जाको नाम मंगल करन ॥ शेष सुमिरन करत जाको धरे रज सम धरन । सिद्ध औ सनकादि नारद निगम आगम अरन ॥ ब्याध महा असाधु पामर अन्त लाग्यो मरन । शीत वस शिवनाम सुमिरत मिटी जियकी जरन ॥ इन्द्र चन्द्र कुवेर विधि हरि रहत जाकी शरन । कहत देविसहाय शिव भज मिटै आवागमन ॥ ७४ ॥

॥ रागिनी देश ॥

शंकर दीनबंधु दयाल ॥ टे. ॥ जासु कृपा कटाक्ष कीन्हे मिटै बहु भ्रमजाल ॥ परी विपत मृकण्ड सुत को आनि घेरयो काल । जानि निज सेवक दयानिधि दई वयस विशाल ॥ धवल रूप अनूप शिवको भस्म भूषित व्याल । तीन नयन त्रिशूल करमे चन्द्र सोहत भाल ॥ नाम तें अघओघ नाशत होत जम उर साल । दरस देविसहाय चाहत करो बेगि निहाल ॥७५॥

॥ राग देश ॥

शिव शिव रटत संकट कटत ॥ टेक ॥ जन्म जन्म के पापपुरातन आपहो सब हटत । अटक कछु न रहत ताको जो शिवा शिव जपत ॥ नाममें शिव रूप दरसत धन्यनर जे लखत । वेद और पुराण के फल नाम में ही बसत ॥ देवि-सहाय महेश पदरज प्रेम पूरन करत । तरत भवसागर तेई जगयोनिसे नर छुटत ॥ ७६ ॥

॥ रागिनी भैरवी ॥

सोच ना करो रे मनमें भोला देने वाला है ॥ टेक ॥ गौरी अरधंग जाके भंग को अहारा है । हाथमें पिनाक लीन्हे सोई बैल वाला है ॥ गोरो सो शरीर जाको और कंठकाला है । सोई अव-धूत मेरो मोहि प्रतिपाला है ॥ महाविष पान कीन्हे नैन जाके लाला है । दुष्टन के नाशिवे को तीजे नैन ज्वाला है ॥ देवी को सहाय तेरो

सेवक निराला है । वोही मेरो स्वामी जाके गले मुण्डमाला है ॥ ७७ ॥

॥ भैरवी ॥

शिवके समान दूजो देत कौन दान है ॥टे.॥ हरिको सुदर्शन दीन्हो मानो कोटि भानु है । आपतौ दिगंबर जाके नंदीसो विमान है ॥ ब्रह्मरूप जानि जाको वेद करैं गान है । सोई गौरीश तीनो पुरमें प्रधान है ॥ कालकूट देखि के सुरासुरे मुरझान है । आयके महेश स्वामी कियो विषपान है ॥ देविको सहाय सोई सेवक सुजान है । हियमें निहारे शिव को सोई ज्ञानवान है ॥ ७८ ॥

॥ भैरवी ॥

गौरी नाथ ध्यावों जाते जियको अराम है ॥टेक ॥ जमपुर जाने नहिं पैहै जपो जाने नाम है : नंदी भृङ्गीलै करि जैहैं जहां शिवको धाम है ॥ रजत के पहार जहां वटके वितान है ।

तहां ही गौरीश आगे गावैं सुर वाम है॥ देवि-को सहाय सदा शिवको गुलाम है। काशीबास दीजै स्वामी यही मेरो काम है॥ ७९॥

॥ भैरवी भैरोनाथ जी की॥

भैरोनाथ भाई मेरे मोहू को बुलाय हैं॥टे०॥ जनम जनम के मेरे पातक नसाय हैं। आपतो समुझ के मोंकों काशी में बसाय हैं॥ शिवके सनेही तेइ मेरे साथ आय हैं। करिहैं तिहारी सेवा सुख उपजाय हैं॥ खीर खाँड पूरी बरा भातहू बनाय हैं। आपतो प्रसाद करिये बीजना डुलाय हैं॥ कोई तो शितार कोई ढोलकी बजाय हैं। आपको पियारि प्रिया भैरवी सुनाय हैं॥ देवीको सहाय ऐसे उमिर बिताय हैं। करिहैं महेश पूजा भुक्ति मुक्ति पाय हैं॥८०॥

॥ भैरवी॥

नरजी बनाय शंभु करजा न कीजिये॥टे०॥ जीवोंमें जगत मे जौलौं ऐसी बित्त दीजिये।

नेम प्रेम जामे निबहे नाम सुधा पीजिये ॥ अबतो दयाकरि स्वामी दोष शोक छीजिये । गौरीनाथ शोभा हियमे देखि २ रीझिये ॥ जग है अपार ताके पार कैसे हूजिये । शिव कों कहावो मेरा करगहि लीजिये ॥ देबिको सहाय ताकी अरजी सूनीजिये । गरजी गरीब जाँचे मरजी करीजिये ॥ ८१ ॥

॥ भैरवी ॥

ऐसेही बितैहो की चितैहो चितलायके ॥टे०॥ तात मात मेरे शंभू कहाँ मैं रिसाय के । सरेन तिहारी आयो कासों कहौं जाय के ॥ दीन के दयालु मेरी दीनता मिटायके । सुख को समूह दीजै दरस अघाय के ॥ अपनो समुझि के मोंकों लीजे अपनाय के । जननी हमारी अंबे कहौ समुझाय के ॥ देवी को सहाय सदा नाम कहै गायके । काशी बास दीजै स्वामी बेगिही बुलाय के ॥ ८२ ॥

॥ प्रभाती ॥

शिवको निहारो हिय में यहै योग की गली ॥ टे० ॥ भटक मिटैगी तेरी मानेगा जो ये कही ॥ गौरीनाथ ध्यावो प्यारे याही में भला भली । सुख को निवास है है दुःख की दला दली ॥ चरण कमलकी शोभा देखेगा झला झली । जमपुर मार परि हैं काटैंगे डला डली ॥ देवी को सहाय करो प्रेमसों मिला मिली । घट २ छायो देखो सोई साम्ब है बली ॥ ८३ ॥

॥ प्रभाती ॥

दामको गुलाम डोलै कहै मैंतो रामको ॥टे०॥ झूठी मिठी बात बोलै जोरे धन धाम को। नामको बिसारै फिरै मागै खान पान को ॥ लम्पट लपटे पट भरो अभिमान को । स्वामीको निहारे नाही देखे गोरे चाम को ॥ देवी को सहाय सोई साधु सदा काम को । आपतो अमानी रहे करै सनमान को ॥ ८४ ॥

॥ रागिनी ठुमरी ॥

यही साल में हाल बिचार यही, आनँद-वन को हम जावैंगे ॥ टे० ॥ जिनके हित जन्म लियो जगमें, उनके दरशन वहां पावैंगे । नन्दी भृंगी दोउ ओर चलैं, पग २ पर पंथ बतावैंगे ॥ अघ जोरे जन्म करोरनतें, पुर पैठत पाप लुटावैंगे । शिव के पद अङ्कित भूमि निरखि, सोई रज सीस चढ़ावैंगे ॥ ऐहैं शिव सेवक लेन हमें, हर हर कर कंठ लगावैंगे । देवीसहाय काशी में जाय, शिव नाम निरन्तर गावैंगे ८५

॥ ठुमरी ॥

गुरु देव द्विजन को करि प्रणाम, आनँद वनको हम जाते हैं । जिनके हित नेम प्रेम कन्हो, उनही के हाथ बिकाते हैं ।।टेक।। गावत नित नाम शिवाशिवको, ममता अरु मोह मिटाते हैं । काहू सों बात कही करुई करुणाकर हम बकसाते हैं ॥ शिव सेवक तदगत शान्त रूप,

उनसों सनेह नित नाते हैं। देबीसहाय शिव शरण पाय, नित ब्रह्मानन्द लुटाते हैं॥ ८६॥

॥ ठुमरी॥

शिवशङ्कर गौरी सङ्ग लिये, नन्दी बिमान पर आवन हैं॥ टे०॥ डमरू पिनाक लिये कर में वरदान अभय कर राजत हैं॥ इत दिव्य विभूषण बरण अरूण, उत श्वेत विभूति सुहावत हैं। गिरिसुता करण में मणि चमके उत कुंडल तरल सुहावत हैं॥ सिर जटा गंग अरुपिये भङ्ग, हर चन्द्र भाल झलकावन है। ब्रह्मा अरु विष्णु गणेश शेश सब, उमानाथ गुण गावत हैं॥ दिगपाल बधू कर चमर व्यजन, सब देव सुमन झर लावत हैं। भृङ्गी भृङ्गीको नाद करैं, नारद मुनि वीन बजवात हैं॥ नाचत भैरव गण वीरभद्र, शारद शुचि राग सुनावत हैं। यह शोभा देबिसहाय निरखि तुव, प्रेम मगन गुन गावत हैं॥ ८७॥

॥ ठुमरी ॥

शिवनाम कहो नर गाय गाय, सुख होय सदा जिय जरनि जाय । शिवहेत सचेत करो उपाय, पूजो पदपंकज मन लगाय ॥ गुरुदेव दयानिधि दियो बताय, भवबन्धन से नर छुटि जाय । देबीसहाय तन मन लगाय, घट भीतर दरसन करु अघाय ॥ ८८ ॥

॥ ठुमरी ॥

नर तन को पाय करु यह उपाय, भजु सांब सदाशिव गौरीशं ॥ टे० ॥ करपूर गौर करुणा उदार, सुरसरी विहार जाके सीशं । त्रै नयन ज्वाल अरु चन्द्र भाल, तन भस्म व्याल ऐसे ईशं । अरधांग गौर गण ठौर २, पूजत पद पंकज सुर ईशं । देबिसहाय उर रह्यो समाय, करुणा निधान शिव जगदीशं ।८९॥

॥ ठुमरी ॥

गौरी शिव सुमिरो वार वार, कलिमल

कठोर जरि होत छार । सनकादिक शारद कियो बिचार, शिवनाम वेद वेदान्त सार ॥ भटक मतकहि अब द्वार द्वार, शिव पूजो करुणा-निधि उदार । देवीसहाय भवअति अपार, शिव शिव नामपै चढ़ि जात पार ॥ ९० ॥

॥ ठुमरी ॥

गुरुचरण कमल को करि प्रणाम । गिरजा शिव को नित लेत नाम टे०॥ रसना शिव२ रट आठो याम । हर भजन बिना मुख सरो चाम ॥ नरतन ऐ हैं फिर कौन काम । शिव नाम लेत नहिं लगत दाम ॥ रमि रह्यो सदा शिव सकल धाम । बेदन ने कह्यो शिव राम नाम ॥ देवीसहाय भजु सुख अराम । जब से शिवको मैं भयो गुलाम ॥ ९१ ॥

॥ ठुमरी ॥

शिव शंकर संकट वेगि हरैं, निजदीनन के दुख दूर करैं ॥टेक॥ करुणानिधान की वान

यही, शरणागत को प्रतिपाल करैं। नित प्रात उमापति ध्यावत जे, तेई भवसागर पार परैं ॥ जे नाम सुधारस पान करैं, तिनको जमदुत निहारि डरैं। देवी सहाय तन मन लगाय शिव आप में आप दिखाय परैं ॥ ६२ ॥

॥ ठुमरी ॥

गौरी शिवसुमिरो चन्द्र भाल। भवबन्धनके छुटि जात जाल ॥टे॥ क्षणभंगु देहको करो ख्याल। शिव भक्ति बिना नर भये बिहाल ॥ उत दिव्यवसन भूषण विसाल। इत भस्म अङ्ग गले मुण्ड माल ॥ शशि भानु बन्हि त्रै नयन ज्वाल। यज्ञोपवीत अति श्वेतब्याल ॥ पद-कंज मञ्जु नख ज्योति लाल। देवीसहाय लखि भयो निहाल ॥ ६३ ॥

॥ ठुमरी ॥

शिव नाम कहो करुणा करिके, कोउ लेन गयो छाती धरिके। शिवनाम से पाप जाय

जरिके, सब प्यार करें मानो घरिके। धनमें धरि चित्त गये मरिके, ते प्रेत भए ममता करिके। देबीसहाय जप तप करिके, हम हाथ बिके गौरीपति के ॥ ६४ ॥

॥ ठुमरी ॥

शिव नाम अकाम जपैं मनमें, नहि पाप रहे तिनके तनमें। जिनके गौरीश बसै उरमें, तिनके जपजोग सदा घरमें ॥ ऐसे शिव भक्त होय कुलमें, तार जांय पितर तिनके पलमें। देबीसहाय धन ते जगमें, जे आय बसे आनँद बनमें ॥ ६५ ॥

॥ ठुमरी ॥

चौथेपन प्यार कियो शम्भु, आनँदबन मोहिं बसावेंगे ॥टे०॥ सुरसरि समीप धरिजती रूप, समुझाय कह्यो सुख पावेंगे। लघु किंकर क्रूर कपूत दीन अति, तनछीन जानि अपनावेंगे ॥ चित में चिन्ताकि चिता चमके, गौरी

पति आप बुझावेंगे । देवीसहाय काशी को पाय नित ब्रह्मानन्द लुटावगे ॥ ९६ ॥

॥ ठुमरी ॥

गौरीपति पीर हरो मेरी, दिन रैन रहत आशा तेरी । हम आरत नाथ पुकारति हैं, दुख दोष हरो न करो देरी ॥ तुम दीनदयाल कहावत हो, तनि दया दृष्टि दीजै हेरी । जब से मोहि जन्म दियो जगमें, मैं शरण भयो शंकर तेरी ॥ काशी में जाय जगजननि पाय, यश गाय गाय दीहों फेरी । देवीसहाय तहँ दियो बसाय, जहाँ भक्ति फिरत घर घर चेरी ॥६८॥

॥ ठुमरी ॥

मन लागि रह्यो तुमहीं सों सदा तुम काहे न दरस दिखावत हो । जे दास तिहारी आस करैं तिनको तुम क्यों तरसावत हो ॥ टेक ॥ करपूर गौर वपु वयकिशोर यह रूप मेरे मन

भावत हो। अरधांग गौर गङ्गाजि मौर मनसिज कर भस्म लगावत हौ। चित में चिन्ता को जमे अंकुर ताको तुम तुरत नसावत हो॥ देबीसहाय उर रहे समाय आनन्दघन मोहि बुलावत हौ॥९९॥

॥ ठुमरी खम्माच ॥

सदा शिव सदा करैं कल्याण। अरे मन मूढ़ तजो अज्ञान॥टेक॥ जे मुनिवर परमारथ बादी करत सदा ते ध्यान। तिनके हृदय ज्ञान अस उपजत पावत पद निर्वान॥ जानि प्रदोष आनि सुर संकुल त्यागे सकल विमान। सुरनर मुनि प्रतिपालक स्वामी जै जै करत बखान॥ पूजन बहु प्रकार गिरिजा शिव जुगल चरण रति मान। विष्णु शंख मृदङ्ग इन्द्र कर बाजत गगन निशान॥ देबीसहाय उमापति निरखत कोटि उदय शशिभान। शेष गणेश बखानत महिमा गावत वेद पुरान॥१००॥

॥ ठुमरी खम्माच ॥

यह तन गौरीपति को धाम, प्रेम सो लिया करो शिवनाम ॥ टेक ॥ बिराजत दल सहस्र अभिराम, होय अजपाजप आठोजाम । चरण को सलिल सुधा है नाम, ताहि पीवो कर भरि-भरि जाम ॥ करत जोगी जन जाको ध्यान, होय जग जीवन को कल्यान । बसै देबीसहाय वा ठाम, करै प्रभु पूरन मोर काम ॥ १०१ ॥

॥ ठुमरी खम्माच ॥

मैं मन मूढ़ तोही समुझायो ॥टेक॥ तू खल क्रूर कुटिल कायर अति करत आप मन भायो ॥ जन्म अनेक बिषय विलास करि तापै तूं न अघायो । सो वासना मिटी नहि तेरी त्रिजग योनि फिर आयो ॥ तब अति शोच पोच उर तेरे दारुन ताप तपायो । हम प्रभु नाम लेत जग देख्यो सुन्दर नरतन पायो ॥ देबीसहाय सुलभ मारग यह श्री गुरु देव बतायो । अब

तो बसु गौरीश चरण में अचल सुथान सुहायो ॥१०२॥

॥ भैरवी खेमटा ॥

मनभावे हमें काशी की गली, विश्वनाथ पद पूजा भली ॥ टेक ॥ स्वांस २ पर शिव दरसन जहाँ, सिद्ध बिराजैं थली थली । भैरव-काल करत कोतवाली, पाप ताप करि डारैं मली ॥ शोभा सदन मदन छवि वारों, जहाँ बसै हिमवान लली । देवीसहाय धन्य आनन्दबन, जहँ जमकी कछु नाहिं चली ॥ १०३ ॥

॥ भैरवी खेमटा ॥

छल छाड़ो करो मन मेरी कही. शिव शिव सुमिरो सार यही ॥ टेक ॥ आनन्दबन जन जानि बसे हैं, भवबन्धन छुटि जावै सही ॥ सुरसरि सिद्ध समाज बसै जहाँ, शुद्ध बुद्धि ह्वै जावै तहीं । देवी सहाय सकल सुख सन्मुख बिश्वनाथ मेरी बहियाँ गही ॥ १०४ ॥

॥ खेमटा की भैरवी ॥

* मान लीजै हमारी पूजा ॥ टेक ॥ चन्दन धूप दीप तुलसीदल बेलपत्र के कुजा ॥ ममता मोह विवस मतवारो ताते तुम्हें नहि बूझा । जापर कृपा कटाक्ष करत तुम ताही को कछु सूझा ॥ जन्म जन्म के पाप कटत सब शिव पद पङ्कज छूजा । देवीसहाय कहत सब सों यह शिव सम देव न दूजा ॥१०५॥

॥ खेमटा की भैरवी ॥

भोले बाबा वसो मोरी नगरी ॥ टेक ॥ तुमरे वयल को मेवा खियैहौं तुम को पियैहौं भांग भरि गगरी ॥ जे गिरजापति जानत नाही तिनके धरम करम गए बिगरी । देवीस-

* दोहा—सप्त जात अधरात में, जानि समय स्वच्छन्द । दर्शन हित गोकर्ण दे, संग शिष्य शुचि वृन्द ॥ १ ॥ पूर्व महन्त पधारिगो, भयो नवल इक मन्द ॥ इर्षा करि महराज सों, दियो कुलुफ करि बन्द ॥ २ ॥ तिहि औसर गायो भजन, हंसि यह देवीसहाय ॥ सुनतहि निज करसों दियो, कुलुफ महेश गिराय ॥ ३ ॥

हाय मगन निसिवासर शिव शिव जपत पग पगरी ॥ १०६ ॥

॥ रागिनी धमार ॥

शंकरही को भारी भरोसो ॥ टेक ॥ श्रुति सिद्धान्त सार यह मोसों बार बार गुरुदेव कहोसो। उनहीं को ध्यावत जस गावत उनहि को नाम जपत खरोसो ॥ काम क्रोध खल पास न आवत पाप ताप सब जात जरोसो। देवीसहाय मगन निशिबासरशिव सुमिरत मनहोत हरोसो ॥ १०७ ॥

॥ धमार ॥

अब शिव सुमिर उमिर जग थोरी ॥टे०॥ बिना शिवनाम ज्ञान नहिं है है जतन करो मन लाख करोरी। जाको बेद नमत निस बासर सो महेश दूजो जग कोरी ॥ तन मन से गौरीश भजन कर यम यातना मिटे सठ तोरी।

देवीसहाय सुयश शङ्कर को सबसों कहत निहोर निहोरी ॥ १०८ ॥

॥ बहार ॥

शिव सुमिरे न बयस बिहाय गई । नर तन को पाय तोपै कछु न भई ॥ बिषइनके साथ ब्रिष बेल बई। परनारि निहारत मोह भई ॥ जब जरा जोर कर घेर रही । तृष्णा भई तरुण नचाय रही ॥ देवीसहाय गुरुदेव दई । शिव के पद पंकज प्रीत नई ॥ १०९ ॥

॥ भैरवी ॥

संकट मोचन नाम तुम्हारो, बेगि हरो दारुण दुखभारो। अब बिलम्ब कीजै नहि शङ्कर किंकर क्रूर कपूत पुकारो ॥ निज जन दुखित देखि करुणानिधि पाप पहाड़ पकरि कि न टारो । देवीसहाय दास अपने को खोलि पलक छिन में निरवारो ॥ ११० ॥

॥ गजल ॥

शिव नाम हाय लिया नहीं बरबाद जन्म किया। सतसंग सुधा विहाय तूं विष धाय धाय पिया ॥ गो बांध के राखी नहीं गणि-कों को दान दिया। द्विज देवता पूजे नहीं धन देखि देखि जिया ॥ धन धाम सकल आराम ये सब छूट जांयगे यहाँ। तन तूल सम जर जा-यगा देखे खड़ी प्रिया ॥ यह देह देवालय समुझ शिव जीव देव पिया। देवीसहाय लखो सदा कर शुद्ध बुद्ध हिया ॥ १११ ॥

॥ गजल ॥

वाराणसी के बासको त्यारी करा भली।
चिन्ता करो उस कालकी वो है बड़ा बली ॥
परिवार बाग अनूप हैं छोटी बड़ी कली।
आवे अचानक काल जब काहूकी ना चली ॥
सुरलोक से सुन्दर सदन देखो भला भली।
शिव देह धर बिचरैं वहां रहे है मिला मिली ॥

देबीसहाय बिनोद विद्या होत थली थली। काशी पुरी में जाय शिव ढूँढ़ों गली गली ॥ ११२ ॥

॥ गजल ॥

दुख दूर कीन्हे सांब सब काशी बसायके। बहु जन्म जन्मों के मेरे पातक नसाय के॥ हम दरस के लोभी दरस दीन्हे बुलाय के। आनँद वनबासी हमें दीन्हे मिलाय के ॥ शिवको सुजस बुधबेद सब कहते हैं गाय के। हम दास हैं तेरे रहे आशा लगाय के॥ देबी-सहाय हमेश शिव सेवक कहाय के। संसार सागर से हमे लीन्हे बचायके ॥ ११३ ॥

॥ गजल ॥

गौरीश को सुमिरन करो करजोर जोर निहोर। त्रैताप आपहिं जांयगे सुख होयगो चहुँ ओर॥ संसार सागर देख तूँ याको नहीं कहिं छोर। प्रभु पार आप लगाय है सब कर्म वन्धन तोर॥ सतसंग को सेवो तजो तृष्णा

तरँग करोर । इनसे सरै कछु काज नहिं शिव ध्यान करो नित भोर ॥ देबीसहाय लगो रहै शिवभक्ति में मन मोर । अब दीनबन्धु दया-करो चितवो कृपाकी कोर ॥ ११४ ॥

॥ गजल ॥

हम तो उमा महेश के दासों के दास हैं॥ ॥ टे० ॥ शिव शिव करैं सुमिरन सदा हिय में हुलास हैं । हमको छुटावें गे वही हमको तो आस हैं ॥ शिव नाम के लीन्हे सकल पापों के नास हैं।दरसन हमे देते नहीं रहते तो पास हैं॥ देबीसहाय सकल जगत् शिवको प्रकाश हैं। जबध्यान कर देखूँ तो उर अन्तर निवास हैं ११५

॥ गजल ॥

हमको उमा महेश जी दरशन दिया करैं । निज दास की आशा सदा पूरण किया करैं ॥ करपूर गौर स्वरूप उर अन्तर रहा करैं । पर लोक को साधन सदा मोसों कहा करैं ॥ पद

कंज मंजु महेश के मन में बसा करैं। तिन को मिलै शिवधाम जे तन् मन् कसा करैं॥ देवी सहाय हमेश जे शिव शिव जपा करैं। जगजोनि से छुटिजायँ वे शम्भु कृपा करैं ११६

॥ गजल गंगाजी की ॥

सोहै सुधा से सौगुनी गंगे तुम्हारी धार॥ तुम ब्रह्मरूप सनातनी हो सत्य को अवतार॥ धारा धुकारे धूम सुन जमपुर मिटी पुकार। पापी चले सुरलोक को दिये नर्क से निर्वार॥ रज रेणुका लैलै पवन पावन कियो संसार। जप जोग सब करने लगे भये पुण्यके संचार॥ बहु तनय सगर नरेश के द्विज दोष तें भये छार। तिनको दिया शिव लोक तुम कैलाश बास बिहार॥ जे पाप रूप पहाड़ थे तिनको दिया तुम टार। तेरे किनारे मोक्षका लागा रहे बजार॥ देवी सहाय भयो शरण ताको करो निस्तार। गौरीश को दरशन मिलै वर दे-

हु मात विचार ॥ ११७ ॥

॥ गजल गंगाजी की ।

शोभा सदा देखा करों गंगे तुम्हारे तीर ।
तुम बेदसार सुधामई पीवों तुम्हारे नीर ॥
नित प्रातकाल लगी रहै तेरे किनारे भीर ।
कोई धूप दे पूजे तुम्हें कोई चढ़ावे चीर ॥
जब दूरसे देखा तुम्हें सुरधेनु को क्या छीर ।
तेरे किनारे रेणुका मणिजाल मानो हीर ॥
देवीसहाय नहाय के निर्मल कियो शरीर ।
काशी बसावो मातु तुम मेटो हमारी पीर ॥११८॥

॥ गजल ॥

गंगे तेरी तरंग में है ब्रह्म का निवास । तुम आदि शक्ति स्वरूप हो रहती सदा शिव पास ॥ तेरे किनारे जो करैं जप जोग पूजा न्यास । तिनको सराहैं देवता जे हो रहे तुव दास ॥ अघ ओघ में लिपटे हुवे ताको तिहारी आस । ऐसे पतित पावन किये तिन

को दियो कैलास ॥ देवी सहाय नहायके हिय में भयो हुलास ॥ ११६ ॥

॥ गजल ॥

गंगे गरीबों पर करो नित गौर और सहाय । बहु जन्म के अघ ओघ जे तुम मातु देहु बहाय ॥ जे जान जन अपने ति-न्हे नित दरस देत बुलाय । पीवें तुम्हारा नीर ते तन तेज पुंज दिखाय ॥ बहु दास आस लगाय तन त्यागे किनारे आय । नन्दी विमा-न चढ़ाय के निजपुर दियो पहुंचाय ॥ देबी-सहाय को देहु बर वारानसीको जाय । गीरीश को सुमिरन करे नित प्रेम प्रीत लगाय ॥१२०॥

॥ पद गंगा जी के ॥

गंगे भले गरीब निवाजे ॥ टेक ॥ तेरे दरस परस मज्जन तें पाप आप तें भाजे । तेरे तीर जीव तन त्यागे सुर पुर जाय बिराजे ॥ जे नर नीर नेम सों पीवत रोग रहित तन

ताजे। देबीसहाय भजत निसबासर भक्ति भाव के काजे ॥ १२१ ॥

॥ पद ॥

गंगे तुम समान कोउ नाहीं ॥ टेक ॥ तेरे दरस दूर से देखत पाप पहाड़ बिलाहीं । करि प्रणाम मज्जत तन तुम में सब तीरथ मिलि-जाहीं ॥ गं० ॥ शेष सुरेश धनेशहु ध्यावत नाम जपत हरखाहीं । देबीसहाय बसै आनँदवन यह आसा मन माहीं ॥ १२२ ॥

॥ पद गंगाजी का ॥

गङ्गे तुम्हैं भजैं ते नीके ॥ टेक ॥ दरसन से दुख दूर होत है पाप कटै जल पीके । तेऊ तुम्है सराहत जननी जे करें पान अमीके ॥ उठि प्रभात सुरसरि पद सुमिरत सुजस होय तिनही के । देवीसहाय यहै बरे मांगत दास देहु शिवजी के ॥ १२३ ॥

॥ रागिनी चंचरीक ॥

जै जै जग जननि मातु मेटो संताप पाप, करो दया दीन जानि त्रिपुर सुन्दरी । ध्यावौं तुव चरण कमल, हृदय करो अमल विमल, देहु निज प्रसाद हिय हुलास होयरी ॥ तेरो जगमें प्रकाश, सुर नर मुनि करत आस, तेरी शक्ति पाय शेष सीस महि धरी । मघवा मिरदंग थाप, निरत करत रमा आप, गावत देवीसहाय राजशङ्करी ॥ १२४ ॥

॥ छन्द चंचरीक ॥

ऐहो जगदंब अम्ब, अब ना कीजै विलम्ब करो दया दरस दे गिरीशनंदनी ॥ शुम्भ औ निशुम्भ मारि महिषासुर उदर फारि, रक्तबीज चाबि चण्ड मुण्डखंडिनी । तेरो जग है स्वरूप, तूही शची रमा रूप, तूही आधार शक्ति जक्तवंदिनी ॥ सुरहित अवतार धार हरो सकल भूमि भार, काशीबास दीजै शिव बाम अंगिनी । देवीसहाय,

सदा सेवक तेरो कहाय, बेगि बिपति हरो चन्द्र मौलि पोषनी ॥

॥ चाल होली की ॥

शिवपद प्रीतलगाई । राह गुरुदेव बताई ॥ पूजौ देव देवतन करिके शील सनेह बढ़ाई । काम क्रोधको करहु कलेवा, तष्णा तरुण जराई॥ भस्म तन लेहु रमाई । शिव० ॥ प्रेमनीर नहवाय नाथको भावकि भस्म लगाई । फिकिरके फूल चढ़ाय सीस पर, धरमकि धूप दिखाई ॥ ज्ञानदीपक देहु जगाई । शिव० ॥ मन मालामे समाय किए जप पाप पुरातन जाई । यह नर देह देवालय शिवको, तहां बसन नित आई ॥ दासको देन दिखाई ॥ शिव०॥देवीसहाय जोग जपके फल शिवहि समर्पि सिहाई । आशा अतर लगाय गाय यश, पयो चरण अकुलाई । लियो तब प्रभु अपनाई ॥ शिव० ॥ १२६ ॥

॥ होली महादेवजी की ॥

आनँदबन जाऊँ, तहाँ सुख धूम मचाऊँ॥ मणिकर्णिका घाट के ऊपर नित उठ गङ्ग नहाऊँ। गुरुपद बंदि पूजि गिरिजा सुत, तारक नाथ मनाऊँ ॥ मन्त्र सोइ निस दिन गाऊँ ॥ आनँ० ॥ वेद पुराण बखानत महिमा तुव पुर पुन्य प्रभाऊँ । ज्ञान विराग ज्ञानवापी जल, शुद्ध मोत्तको ठाऊँ॥ तहाँ कलि मल हि बहाऊँ आनँ०॥ भक्ति अबीर प्रेमको रँग ले बीथिन में बरसाऊँ। बिश्वनाथको पूज बिबिधिबिधि, चरन कमल मन लाऊँ॥ उमापति हृदय बसाऊँ। आनँद० ॥ देबीसहाय कहावत तुमरो शिव सेवक सतभाऊँ। भीतर बाहर तुम निरखत हो, तुमसों कहा दुराऊँ ॥ उहाँ भव भेषज पाऊँ। आनँद० ॥ १२७॥

॥ होली की चाल ॥

शिव सुमिरन जिन जाना, सोइ तन ब्रह्म

समाना ॥ साठ सहस्त्र वर्ष तप कीन्हो नारायण भगवाना । ह्व प्रसन्न शङ्कर वर दीन्हो, जगपालन को ज्ञाना ॥ होहु सबसे बलवाना ॥ शिव० ॥ रावण भक्त भयो शंकरको तासु सुयश जग जाना । चौसठ चतुर जुगी सुख भोग्यो, मर्‌यो रामके बाना ॥ गयो सुरपुर दै ताना ॥ शि० ॥ भारी भाग भरथरी को जिन तज्यो राज मद माना । त्याग्यो भोग जोग चित दीन्हो, भयो बिमल उर ज्ञाना ॥ सदा शिवपद रतिमाना ॥ शिव० ॥ देबी सहाय दास अपनेको आनँदबनहि बसाना । तारक मंत्र सुनाय श्रवण में, आवागमन मिटाना ॥ मिले नंदी सो बिमाना ॥ शिव० ॥ १२८ ॥

॥ होली ॥

यह तनते नहि जाना, मिले जामे भगवाना ॥ बहुतक जन्म करम वश बीते मिला न तोहि ठिकाना । सत संगतको स्वाद न जान्यो, पर नारिन में लुभाना ॥ फिरत ज्यों

श्वान भुलाना । यह० ॥ अंतर बेद बेद अस भाखत कर्म क्षेत्र शुभ थाना । तहां दई द्विज देह दयानिधि, सुरसरि नित्य नहाना ॥ नहीं बनि आवत ध्याना । यह०॥ योगी योग ध्यान करि देखत ज्ञानी सबहिं समाना । भक्ति भाव बस प्रभु उर आवत, प्रेम में प्रगट दिखाना ॥ करै श्रुति सन्त बखाना । यह० ॥ देबिसहाय दास अपने को देहु नाथ बरदाना । आनँद· बन वीथिन में डोलों, तजौं मान अपमाना ॥ करौं शंभु गुणगाना । यह० ॥ १२९॥

॥ चाल होली की ॥

शिव सुमिरन नहिं जाना । किये मन बहुत बहाना ॥ गर्भ बासमें बहुत जनमकी सुधि करि अति पछिताना । करिहौं धरम करम जग सोई, जासों होय उर ग्याना ॥ आय माया में भुलाना । शिव० ॥ खेले ख्याल बाल लीला करि भूँख प्यास पहिचाना । तरुण भए

तरुणो रसमाते, काम कलामे समाना ॥ नारि के नेह बिकाना । शिव०॥ भये सपेद केस तन निरबल जरा कियो उर थाना । तृष्णा अति बलवान भई तब, कूँचके बजत निशाना ॥ नयन जब नेक दिखाना ॥शिव०॥ देबीसहाय कहत कर जोरे लघुकिंकर अज्ञाना । अपनो जानि दयानिधि स्वामी, करौ हीये में थाना ॥ हरौ ममता अभिमाना । शिव० ॥ १२० ॥

॥ चाल होली की ॥

उनहीं सों सनेह लगायो ॥ जाकी जोति अपार जगत में अलख पुरुख करि गायो । सो महेश संतन हितकारण, सगुण स्वरूप बनायो नाथ गिरिजाको कहायो ॥ उन० ॥ ब्रह्मादिक गावत यश जाको बेदन बिरदसुनायो । कमलापति नित सहस्रकमल से शिवपद पङ्कज ध्यायो ॥ दियो बर चक्र सुहायो । उन०॥ सागर सम स्याही कर सुन्दर सुरतरु कलम

बनायो । शिवको सुयश लिखन को सारद. पृथ्वीसो पत्र बनायो ॥ पार उनहूँ नहि पायो । उन० ॥ देवीसहाय शिवा शिव सुमिरत जिन सब जन्म बितायो । तिनके अन्त कालपर शङ्कर, विमल ज्ञान दरसायो ;॥ मोक्ष को धाम बतायो । उनही सों० ॥ १३१ ॥

॥ होली ॥

आनंदबन वसिहौं जाई ॥ विश्वनाथ जहँ तात हमारे अन्नपूरणा माई । भैरव ढुंढिराज दोऊ भैया, रहिहौ चरण चितलाई ॥ होय मोहि सुख अधिकाई । आनँ० ॥ शेस गनेश बखानत महिमा तुव पुरकी प्रभुताई । कीट पतंग देह जे त्यागें, मोक्ष होत श्रुति गाई ॥ जीव को सुख अधिकाई । आनँ० ॥ करिहौ चरण कमल की सेवा गिरिजापति की जाई । जामें होय विमल चित मेरो, सो प्रभुकरो सहाई ॥ कसक जियकी मिटिजाई । आनँ० ॥ यह परिवार ति-

हारो स्वामी अभय करो अपनाई । देवीसहाय यहै वर माँगत, जासों मिटै दुचिताई ॥ सकल कलिमल नसिजाई । आनँद० ॥ १२२ ॥

॥ होली ॥

गिरिजापति मो मन भायो ॥ द्वादश दल को कमल हृदयमें तहँ निज रूप दिखायो । असरन सरन वेद जेहि गावैं, भक्ति प्रेमवस आयो ॥ देखि उर आनँदछायो । गिरि०॥ वाम अङ्ग गिरिराज पियारी आप विभूति रमायो । तीन नयन सिर गङ्ग मुकुट लखि, चंद्रभाल झलकायो ॥ जुगल चरणन सिरनायो॥गिरि०॥ कुण्डल तरल गरल की शोभा मरकत मणिहि लजायो । पंच वदन अरु चार भुजा जाके, सो घट भीतर पायो ॥ सकल भ्रम मोह मिटायो । गिरि० ॥ देवी सहाय भ्रम्यो बहुजग में उन्हैं कहीं नहि पायो । मन थिर करि प्रभु पदरति मानी, आपमे आप दिखायो ॥ जन्म

अरु मरण मिटायो ॥ गिरिजा० ॥ १२३ ॥

॥ होली भगवती की ॥

जै जै जै गिरजा महरानी ॥ स्वाहा स्वधा स्वरूप तूँही हो तूँही रमा ब्रह्माणी । तेरोइ ध्यान धरत सुर नर मुनि, आदि शक्ति जिय जानी ॥ सदा शंभू सनमानी ॥ जै जै० ॥ हिम पुर बालबिनोद करत तुम तहँ सुर अस्तुति ठा- नी । अभय किये सब देव दया करि, प्रगटी कला भवानी ॥ बधो महिषासुर दानी ॥ जै जै० ॥ मङ्गल करनि अमङ्गल हरणी करणी कविन बखानी । बेद पुरान मंत्र जंत्रन में, तूही आप समानी ॥ तोहि जानै ते ज्ञानी ॥ जै जै० ॥ देबी सहाय भजत जस तेरो धरौ सीस निज पानी । अपनो जानि दया करि देखो, देहु बिमल बर बानी ॥ मोहि अपनो सुत जानी ॥ जै जै जै० ॥ १२४ ॥

॥ होली ॥

पियके सँग खेलिले होरी ॥ साधन रंग प्रेम पिचकारी ज्ञान गुलाल मलोरी । तृष्णा तेल जरायके काजर, निज नैनन में दयोरी ॥ लयो संतोष वटोरी । प्रिय० ॥ पांचो मीत प्रीत अतिराखैं तिन हित भवन वनोरी । नवोद्वार तहँ देव विराजत, दसयोंद्वार पिय कोरी ॥ जाहि लखि काल डरोरी । पिय० ॥ सोहंनाद बजत निसवासर निरत करत मति मोरी । ध्यान धमार रिझाय पियाको, बिनती करत करजोरी ॥ किये मनको इक ठोरी ॥ पिय० ॥ देवीसहाय सकल जग झूठो इन्द्रजाल समझोरी । सतचित है महेश त्रिभुवनपति, ताही को नाम जपोरी ॥ यहै गुरुदेव कह्योरी ॥ पिय० ॥ १३५ ॥

॥ होरी ॥

गिरिजा शिव देत दिखाई ॥ हाट बाट घर बाहर तनमें रहे सकल प्रभु छाई । नेम प्रेम शिव

हेत करत जे, तिनको परत लखाई ॥ यहै श्रुति संमति भाई ॥ गिरि० ॥ वाम अङ्ग गिरिराज पियारी शोभा बरणि न जाई । सची रमा दोउ पान खवावत, देव बधू सब आई ॥ करत पूजा मन लाई ॥ गिरि० ॥ गौर शरीर विभूति चंद्र छबि गङ्ग जटा छहराई । कुंडल झलक कपोलन पै दुति, नासा सुभग सुहाई ॥ देखि मन रह्यो लुभाई ॥गिरि०॥ देवी सहाय उमापति आगे राग रागिनी आई । लेकर बीन बजावत गावत, भक्ति प्रेमदरसाई ॥ मैंहू चरणन रज-पाई ॥ गिरिजा० ॥ १२६ ॥

॥ होरी ॥

गिरिजा शिव की बलि जैहौं ॥ मनबुधि चित्त समेटि पकरि के शिवचरणन में लगैहौं । तब व्है है अनुराग हृदय में, सुख समूह में पैहौं ॥ सदा शरणागत रैहौं ॥ गिरि० ॥ सुनिहौं जहँ शिव भक्त होय कोउ तुरत तहां चलि

जैहों। जन्म अनेक जमनिका जियकी नाम से धोय बहैहों॥ सकल भ्रम मोह मिटैहों॥ गिरी०॥ रैहों प्रेम मगन निसवासर बिमल बिमल गुनगैहों। ह्वै है विमल हृदै जब मेरो, मणि मय वसन बिछैहों॥ तहाँ गौरीश बसैहों॥ गिरि०॥ देवी सहाय भक्तिवर लैके शिवजी के हाथ बिकैहों। सेवक जानि दरश मोहि दीहैं, तब सब सोच नसैहों॥ फेर जग जन्म न पैहों॥ गिरि०॥ १३७॥

॥ होली॥

शिव के सरनागत रैहों॥ मोद मृदङ्ग तमूरा तनको स्वांस सितार वजैहों। गैहों नाम शिवा शिवको नित, सुरति की मुरलि बनैहों॥ तुरत त्रिकुटि पै बसैहों॥ शिव०॥ हृदय उमंग रंग केसर को आसा अतर लगैहों। अबीर गुलाल सनेह सीलको; उनही पै बरसैहों॥ और न कहूं चलि जैहों॥ शिव०॥ शिवपद में अनु-

राभ फाग मैं निज मति ताही नचैहौं । रँग भीने पग निरखि पियाके, मन मधुकर को लगैहौं ॥ उतर भवसागर जैहौं ॥ शिव० ॥ देवीसहाय जोग जप के फल शिवहि समर्पि सिहैहौं । पाप जराय कीच कारी करि, हर विमुखन के लगैहौं ॥ दास शङ्कर को कहैहौं ॥ शिवको० ॥ १३८ ॥

॥ होरी ॥

साँवरो मथुरा जब आयो ॥ ग्वालबाल सब सङ्ग सखा लिये बदलाऊ को बुलायो । देखन चहत नगर की शोभा, सबको मन हुलसायो ॥ चलत गणराज मनायो ॥ साँव० ॥ रजकरह्यो जो कंस राय को सो मारग में पायो । वाने अरुणनयन किये प्रभुसों, जमपुर मारि पठायो संसय मन नेकन लायो ॥ साँव० ॥ वसन बिचित्र दिये प्रभु सब को जो जाके मन भायो । मधु मंगल तब रामकृष्ण को, नील पीत पहि-

रायो ॥ जरी पटुका बंधवायो ॥ साँव० ॥ तब लगि आय कूबरी चंदनसों अतर सुगंध लगायो । हसि मुसुकाय पकरिकर ताको, दाबिचरन झटकायो ॥ तुरत सुंदर तन पायो ॥ साँव० ॥ प्रेम मगन विनय अनेक करि राजकाज बिसरायो । ताकी भक्ति देखि नँदनंदन, वर दीन्हों मन भायो ॥ तुरत संकेत बतायो । साँव० ॥ घरघर खबर भई मधुपुर में नंद सुवन दोउ आयो । जो जैसे तैसे उठि धायो, गेहकाज बिसरायो ॥ लाभ नयननको पायो। साँव० ॥ देखि रूप सब मगन भये यों मनहु रंक धन पायो। भई प्रसन्न सकल ब्रज बनिता, सुख समूह उपजायो ॥ प्रेम नयनन जल छायो । साँव० ॥ देवी सहाय उमा महेश दोउ कृष्ण राम करि गायो । ऐसो रूप बिलास रहस हित, गौरीनाथ बनायो ॥ सकल ब्रज सोच मिटायो ॥ साँवरोम० ॥ १२६ ॥

॥ चाल होली की ॥

शिवसे जो सनेह लगावै ॥ उठि प्रभात गुरुचरन सुमिरिके दल सहस्र मन लावै । दम वस राखि करै प्रभु पूजन, सोई शिव भक्त कहावै ॥ दरस घट भीतर पावै ॥ शिव० ॥ दृढ़ विश्वास होय उर तबही सन संगत जेहि भावै । गावै नाम उमा शिव को निन, आनद उमँग बढ़ावै ॥ आप रीझै औ रिझावै ॥ शिव० ॥ कपटी कुटिल कुकर्म निरत जे इनको देखि बरावै । सज्जन सङ्ग रहैं निसवासर, प्रेम नीर बरसावै ॥ आप पीवे औ पियावै । शिव० ॥ देवीसहाय नामकी नौका भवसागर में तरावै । ज्ञान बिराग केवट दोउ सुन्दर, प्रीति पवन सो वहावै ॥ फेर जग जन्म न पावै । शिवसे० ॥ १४० ॥

॥ होली ॥

मन मेरे मूढ तैने शिव सनेह नहि जाना ॥ बालापन सब खेल गमायो बैसरही नादाना ।

तरुण भए तरुणी संग मोहे भूल गयो उर ज्ञाना ॥ मन० ॥ वृद्धापन तन कंपन लागो देह रहो नहि ताना । तृष्णा अति बलवान भई तब, कूँच के बजत निसाना ॥ मन० ॥ मधुमाखी समान जग लिपटो छन सुख देखि भुलाना । नरतन दियो करम सुरझनहित, आप उलटि उरझाना ॥ मन० ॥ देवीसहाय उमापति को जस करत निरन्तर गाना । उठि प्रभात हियमाहि निहारत चरण कमल को ध्याना ॥ मन मेरे० ॥ १४१ ॥

॥ होली ॥

शिवसों न सनेह लगायो ॥ गर्भवास में जठर अगिन से जो प्रभु तोहि बचायो । ताको नाम भूलिगयो पामर, निमक हराम कहायो ॥ बृथा जननी जग जायो ॥ शिव० ॥ करम मलीन करत निसि बासर सत संगत बिसरायो । गायो सठ परनारि निरखि के,

लम्पट नाम धरायो ॥ मूढ़ मन लाज न लायो ॥ शिव० ॥ केते पतित पवित्र किये शिव जाय अमर पद पायो । तिनहुँसे मोहि अधम जानिके, दीनबन्धु बिसरायो ॥ दरस चरण को न पायो ॥ शिव० ॥ देवीसहाय उमा-पति पदगहि चूकमाफ़ करवायो । प्रेम मगन शरीर सुध नाहीं, तब गिरजा समुझायो ॥ जानि निज जन अपनायो ॥ शिव० ॥ १४२ ॥

॥ चाल झंझौटी की होली ॥

शिव शिव सुमिरन की मेरे उर में पड़ी हयबान ॥ टेक ॥ सोवत जगत धरत धरणी पग सुमिरत शिव भगवान । उनहीं मोहि जनम जग दीन्हो उनही सो पहिचान ॥ शिव० ॥ पूजन भजन करत उनहीं को उनहीं को सन मान । सुनत प्रभाव सदाशंकर को सफल भयो तन जान ॥ शिव० ॥ उनही को नाम निरन्तर लीन्हें होत सकल अघहान । प्रेम

विवश आवत उर अंतर गाथ सुनावत तान ॥शिव० ॥ उनकी कृपा कटाक्ष कियेते होत विमल उर ज्ञान । देवीसहाय सुखी सोई जगमें करत सदा शिवध्यान ॥ शिव० ॥ १४३ ॥

॥ होली झंझौटी ॥

शिवसों सनेहो किय मैंने मुक्ति पदारथ हेत ॥ टेक० ॥ तरुण उमर मुखरेख उठत कछु मन हरिलीन्हेलेत । व्याल कपाल माल मुंडन की चन्द्रभाल छविदेत ॥ शिव० ॥ गौर शरीर विभूत बिराजत नीलकंठ तन श्वेत । देवी सहाय उमापति मेरे हिय में कियो है निकेत ॥ शिवसों० ॥ १४४ ॥

॥ रागिनी धमार ॥

शिवशिव सुमिरत सब दुख जाहीं, सोइ मेरे बान परी उरमाहीं ॥ टेक० ॥ बेद पुराण भनत जस जाको, सो गौरीपति आप दिखाहीं। नाम सुधारस पीवत जे नर, तिनके पाप समूह

नसाहीं ॥ शेष सुरेश धनेशहु धावत, नाम जपत मुनिमन हरखाहीं । देबीसहाय शिवाशिव सुमिरत, भवसागर बिनुश्रम तरि जाहीं ॥१८५॥

॥ धमार ॥

शिव शिव नामके लिये जाय जिय की भटक । सुख होय सदा कछु रहै न अटक ॥ नित ध्यान समय पद देखों ललक । कहाँ भूलो फिरत शिवतेरे निकट ॥ सुनि पाप ताप सब जैहैं सटक । यमलोक शोक की रहैना खटक ॥ देबीसहाय मुख ताही के झलक । जाकोनाम न बिसरत एक पलक ॥ १८६ ॥

॥ चाल डफ की होली ॥

मेरी तोहे लाज बैलवाला ॥ टेक० । औरनको धन धाम देत हौ आप दिगंबर मृगछाला । कालकूट ज्वर जरत सुरासुर जग हित पीयो विषप्याला ॥ गौरशरीर विभूति विराजै गरल कंठ सोहै काला । मुनिमन मधुप

बसैं जामे नित चरनकमल नख द्युति लाला॥ गंग तरंग चंद्र की शोभा नयन तीसरे में ज्वाला। देवि सहाय सदा जस गावो करै कृपा डमरू वाला॥ १४७॥

॥ होली डफ की॥

गौरी शिव सुमरो होरीमें॥ टेक०॥ घर घर से सेवक सब आए लै गुलाल भर झोरी में। होरिगावैं शिवहि रिझावैं धाय मलत मुख रोरीमें॥ जो गिरिजापति जानत नाहीं पकर जैहैं चोरी में। देवी सहाय सुयश शङ्कर को सबसो कहत निहोरी में॥ १४८॥

॥ होली झंझोटी की॥

होरी देह धरे मानो गोकरणेश्वर द्वार टेक॥ चहुँदिससे सेवक सब धाये आये प्रभु दरबार। बरसत अबीर कुमकुमा केसर रँगकी परत फुहार॥ होरी०॥ बाजत ताल मृदंग तमूरा बीणा और सितार। देवबधू सब

देखन आईं मोहि गए सुरभार ॥होरी०॥ भूत नाथ भैरोगण भृंगी सबको करत सहाँर । देवी सहाय सखासंग लीन्हे अब चितवे । त्रिपुरार ॥ होरी देह० ॥ १४९ ॥

॥ राग होली ॥

अब न छुटै शिव प्रीति तुम्हारी ॥ टेक॥ सोवत जगत धरत धरणी पग तुम हिय रहत निहारी । तुम्हरो ज्ञान ध्यान प्रभु तुम्हरो तुमही सदा हितकारी ॥ बेगि सुधि लेत हमारी ॥ अब० ॥ गर्भवास में मोहि मिलेथे अश्व लात जबमारी । जननी दुखित देखि करुणा-निधि, छिन में बिथा निवारी ॥ किये पितु मातु सुखारी ॥अब०॥ जिनके भक्ति भाव नहि तनमें ते निन्दक व्यभिचारी । बेद पुराण कानि नहीं मानत, गुरुपद प्रीति बिसारी । होत बहु जन्म दुखारी ॥ अब० ॥ देवीसहाय असी बरुणाबिच जहां बसत श्रुतिचारी । तहां बास

दै देहु दया निधि, तुव जस कहौं पुकारी ॥ अरज सुनिये त्रिपुरारी ॥ अवनछूटै० ॥ १५० ॥

॥ होरी गंगाजीकी ॥

गंगे तरंग निहारी, देखिभय भाजत भारी ॥टेक॥ निशि दिन शिवके सीस विराजत सुधा सरिस बरवारी। शीतल किये अंग सब शिवके, जहर लहर निरवारी ॥ सदा गौरीश पियारी ॥ गंगे० ॥ तेरी धार धूम सुनि जनतो भाजे पाप पुकारी। पतित प्रमत्त पवित्र किये तुम, दिये सगरसुत तारी ॥ मात द्विज दोषनिवारी ॥गंगे०॥ तेरे तीर आय खगपति ने व्याल भख्यो विष धारी। ताको रूप चतुर्भुज ह्वैके, उनहि पै करी सवारी ॥ भयो बैकुण्ठ विहारी ॥ गंगे० ॥ देवीसहाय दास अपने को भवसागर से उबारी। आनंद बन वीथिन में डोलौं, यह वर देहु विचारी ॥ मिलै मोकों त्रिपुरारी ॥ गंगे तरंग ॥ १५१ ॥

॥ होरी ॥

गंगे गरीबन केरी, लेत सुध करत न देरी ॥ टेक ॥ तेरे दास दरस हित आवत तेरोइ ध्यान धरेरी । पगपग पर सुमिरत सुरसरिको, मज्जत मगन भयेरी ॥ करत नितनेह नएरी ॥ गंगे० ॥ तेरे दरस परस मज्जनते कोटिन पतित तरेरी गये अशोक लोक हरिहरके, जिन तन तीर तजेरी ॥ तिन्है शिव कृष्ण करेरी ॥ गंगे० ॥ तेरी रेणु धेनु सुर तरु सम जे जन जानि रहेरी । तिनके पुन्य पुरातन भारी, तेइ चरण गहेरी ॥ फिरत रज सीस धरेरी ॥ गंगे० ॥ देवीसहाय जनम से जननी शिवपद प्रेम पगेरी । आनँदबन अपने समीप तेहि, दीजै वास सवेरी ॥ कटै भव बंधन बेरी ॥ गंगेगरी० ॥ १५२ ॥

॥ होरी ॥

मेरी महरानी गंगेरानी ॥ टेक० ॥ निसदिन शिवके सीस विराजत बेदबड़ाई मानी । दारु

णतप भागीरथ कीन्हो आनि मुक्ति निसानी ॥ हरिद्वार हरिपद दरसन करि दत्त जग्य पहिचानी। मुनिजन मज्जि कहन अस लागे जम पुर गह खसानी ॥ तीरथ राज प्रयाग दरसते हिय में अति हुलसानी। यमुना सरस्वती दोऊ मिलके वेनीनाम बखानी ॥ काशी पुरी अधिक शोभा लखि वास कियो घर जानी। साठि हज़ार सगरसुत तारे सागर जाय समानी॥ देवी सहाय-दरस को लोभी कृपा करो सुतजानी। केते अधम पतित तुम तारे शारद कहत लजानी ॥ मेरी महरानी० ॥ १५५ ॥

॥ रागिनी पुरवी ॥

मेरे घर हरदम हर बैठे मैं नाहक जग ढूंढ़ फिरेरे ॥ टेक॥ जौन मकान जरै नहिं डूबै ताही में रहन प्रकाश करे रे। नाम अनन्त अजन्म अनादी सतचित औ आनन्द भरेरे ॥ खीर खाँड़को भोजन मांगत और मगावत दही बड़े

रे । उठि प्रभात नित मोसों माँगत भाँग पिया-वहु पड़े पड़े रे ॥ जपतप नेमधरम के फलखै शिवसन्मुख हम भेंट धरेरे । देवीसहाय भाव भव निरखत बांधिदई शिव भक्तिगरेरे ॥१५६॥

॥ पुरवी ॥

जग असार यह सार समुझ शिव नाम सजीवन मूररे ॥ टेक ॥ नामसे धाम मिले हरि हर को पाप होत सब दूर रे । नामसे जीव अचल पद पावत सुख संपति भरपूर रे ॥ कलिमें नाम समान कछु नहिं भक्ति ज्ञानको मूल रे । ऐसे शिवपद जानि बिसारत तिनके करम की भूलरे ॥ परनिन्दा परनारिन हेरत तेई जगत में सूर रे । ऐसे संत मिले जब मोकों लैहों चरण की धूर रे ॥ देवीसहाय भजनके कीन्हे भाग भयो अति भूर रे । अब मति सोच करो मन मेरे शिव मिलि जैहैं जरूर रे ॥ १५७ ॥

॥ रागिनी अलैया ॥

अब शिव पार करो मोरी नैया ॥ टेक ॥ औघट घाट अगाध महाजल बल्ली लगै न खिवैया । बारि बरोबर बारि रह्योहै तापर अति पुरवैया ॥ थरथरात कंपत हिय मेरो शिवकी देत दुहैया । देवीसहाय प्रभात पुकारत शिव पितु गिरजा मैया ॥ १५८ ॥

॥ अलैया ॥

है शिव नाम अनूपम नैया ॥ टेक ॥ जाके जपे मिलै सुखसंपति भवसागरकी तरैया । गुरु पद भक्ति मनोहर बल्ली ज्ञान विराग खिवैया ॥ संयम नेम सुरत की डोरी हर जनपार जवैया । देवीसहाय भक्ति वर मांगत चरण कमल बलि जैया ॥ १५९ ॥

॥ मलार ॥

घन आवैरी झूमझूम आँनन्दवन वीथिन

बरसै । कंचन भवन महेश उमाके अति उतंग नभ परसैं ॥ विश्वनाथ पद पंकज पूजै पाप पुरातन झरसै । देवीसहाय को देहु दरस शिव बिन दरसन जन तरसै ॥ १६० ॥

॥ कीर्तन ॥

शिव कहो शम्भु कहो शिवापतिईश कहो गौरीनाथ शंकरको सुमिरत रहुरे । हर कहो शूली कहो मनमें महेश कहो, काशी विश्व नाथ कहो केते सुख लहुरे ॥ गिरिको विहारी कहो गंगा सीसधारी कहो, विषको अहारी कहो यही गाढ़े गहुरे । काशीजी को वासी कहो सुखको निवासी कहो, तीनों तापनासी अबिनासी क्यों न कहुरे ॥ १६१ ॥

छंद ।

हे दीनबन्धु दयाल शंकर जानि जन

अपनाइये । भवधार पार उतार मोकों निज समीप बसाइये ॥ जाने अजाने पाप मेरे आप तिनहि नसाइये । करजोर जोर निहोर मागौं बेगि दरस दिखाइये ॥ देवीसहाय सुनाय शिव को प्रेम सहित जे गावहीं । जगयोनि से छुटि जायं ते नर सदा अति सुख पावहीं ॥ १६२ ॥

॥ दोहा ॥

बारबार विनती करों, धरौं चरण पर माथ ।
निजपद भक्ति भाव मोहि, देहु उमापतिनाथ ॥
गुरुचरणन शिरनायके, विनवत दोउ करजोर ।
शिवशङ्कर के चरणमें, लगो रहे मन मोर ॥
भजन करो भंजन करो, गावो ताल तरंग ।
निस दिन लौ लागी रहे, पारबती शिवसंग ॥

श्रीद्वाजपेयीदेवीसहायजी सुतसूनुमहेशदत्तवाजपेयी विरचित

छंद ।

देवी सहाय महेश कीरति गायसुरतरु सम कही । थिरबुद्धि करि उर राखि शंकर प्रेमसौं पढ़िहैं सही ॥ जो शान्तचित हरचरण रत बुध मोक्ष फल सुखसों लही । सुनि चित्रगुप्त समोदताके कर्म की फरिहैं वही ॥ ५ ॥ पुनिजो सकाम ललाम लौकिक नारि नर नित गाइहैं । सो सकल इच्छित कामना दुर्लभहु वेगिहि पाइहैं ॥ भव सिन्धु गोपद सरिस तरि शिव लोक अन्त सिधाइ हैं । गण राज सम गण राज मा दुलराइ ताहि अघाइ हैं ॥ ६ ॥ नहि साधिवेके योग्य जो जप योग यग्य करोरिकै । सो शैवमनोरंजनि पढ़े गौरीश देत निहोरिकै ॥ यह अरज सुकवि महेश सबसों करत द्वौ कर जोरिकै । किन सजग्है उर धरहु सीख कुबुद्धिको भ्रम तोरिकै ॥ ७ ॥

समाचार पत्र।

श्री गुरु देविसहाय निज, काल आगमन जानि।
त्यागि मास मस विमल तन, भैअनशन व्रत ठानि॥ १॥
हर हर हर कहि शंभु कहि, महादेव कहि धीर।
ब्रह्म रंध्रके द्वारसों, कीन्हों त्याग शरीर॥ २॥
वेद वेद निधि विधु ममित, संवत फागुन मास।
शुक्ल तृतीया भौमयुत, पायो काशी वास॥३॥ १९४४

॥ कवित्त॥

धाए ख्याल त्यागि बाल वृद्ध व्है बिहाल सब, बनिता बिसारपूत भूषण नएनए। आइ योगि-वृन्द वन्दत पदारविन्द, दण्डी दण्ड भूलि सिर नावत ठएठए॥ नरपुरवासीलैउसासी अकु-लायभगे, भारी दुखपाय फूल डालिन लएलए। पण्डित अखिल गुनमंडित विचारि कहैं, देविके सहाय आज शंकर भयेभये॥४॥

चढ़िचढ़िछज्जनउच्चचौतरन, लोगसुखपावतसुरं

गरंगगेरिगेरि । नाचैं दैदै तारी किलकारी सब शैव-
गण, सुछबिविमान निज नैननसो हेरिहेरि ॥
पान पकवान फल फूल भांतिभांतिनके, लैलै सब
आवत लुटावत है फेरिफेरि । देवीके सहाय जब
शंकरस्वरूप पायो, गावती विबुध वाम नभ
बीच टेरिटेरि ॥५॥

स० । दुन्दुभि भेरि मृदंगउपंग, फिरंग घने
मुहचंगहु वाजे । शंख घड़ी डमरू करताल. यथा
भुवित्यो नभ मंडल गाजे ॥ देव अदेव त्रिदेव
महेश, जुरे सबई निज साजि समाजे । या
छिन देबिसहाय गहे कर, मुक्तिलली करियान
बिराजे ॥ ६ ॥

हारिरही मति शारदकी अरु, नारद दाबिरहे-
अँगुरीरद । त्यों मन माहिंरहे छकिके हरि, शेष
सुरेश बिरंचि धनप्रद ॥ प्रेम उमंग हरिणेहर,
मन्दभये तजिबेगनदीनद । मुक्ति लली

जव देविसहाय, करो निजदूलह त्यागि सवैमद ॥८॥

॥ दोहा ॥

पारद में सुवरण यथा, सरिता सिन्धु समाय ।
त्यों महेश तनतेज मय, प्रविशे देविसहाय ॥८॥



॥ विज्ञापन ॥

सर्व सज्जनों को विदित हो कि इसीपुस्तक को पहले देविसहाय जी ने भैरोनाथ जोशी द्वारा छपवाया था परन्तु उसने अपनी बुद्धिमत्ता से सो-धो जो शिवचरित प्रकाश नाम रखा औ उनसे कुछ भी सलाह न लिया इसकारण से ग्रन्थ अत्य-न्त अशुद्ध होगया उसे देख वाजपेयी जी अत्यन्त रुष्ट भये और उससे कहा कि तुमने हजार कापी छपवायो है उसे बेच लेना और फिर कभी मत छपाना तदुपरान्त हमको पुस्तक छपवाने की आज्ञा दी तब हमने छपवायके उनको दिखाया उसे देख अत्यन्त प्रसन्न भए और कहाकि अब तुम्ही इसे छपवाया करना और रजिष्टरी भी हमारे नाम से करवाय दिया तबसे हमी छपाते और बेचते हैं और किसीको छपानेका अधिकार नहीं है इति।

विज्ञापक

पण्डित मोतीराम औदीच्य

शारदा प्रकाश पुस्तकालय

मुहाल नं० २४ घर नं० १५ काशीजी

श्रीगणेशाय नमः ।

शैवमनोरंजनी

द्वितीय भाग ।

॥ प्रभाती ॥

जय जय जय गणराज सन्त सज्जन हित-कारी । सिद्धि सदन सुकरि बदन एक रदन धारी ॥ जय०॥ चन्द्रभाल अति विशाल सोहत मणि माल लाल मटकि चलत चाल पायल झन-कारी ॥जय०॥ कंकण कुंडल अमोल किंकिणि कटि मधुर बोल चारु गात नैन लोल मोदक अहारी ॥ जय० ॥ निज जन दुख देत टाल सघन विघन जाल ज्वाल खल दल कोहौ करा ल कालहू से भारी ॥ जय० ॥ देवी को सहा य एक मांगत वरदान गाय सुमिरो नित श्रीम-हेश शंकर त्रिपुरारी ॥ जय ० ॥ १ ॥

॥ भैरवी ॥

गुरुपद कमल विमल उरमाही ॥ टेक ॥

निरखत नरवर भव सागर, पलभरमें तरिजाहीं। छूटत लोभ मोह ममता मद, काम कथा न सुहाहीं ॥ गुरु० ॥ अजपा जप फल होत निरन्तर, व्यापत अघ तन नाहीं ॥ देविसहाय महेश रूप लखि, चित्त अधिक हरखाहीं॥गुरुपद०॥२॥

॥ अर्जी ॥

दीनबंधु करुणा निधान शिव मेटहू पीर हमारीरे । आस सबन की छांडि नाथ मैं आयो सरण तिहारीरे ॥ तुमही मात पिता तुमही प्रभु तुमही बंधु हितकारीरे । तुम्हरी कृपा कटाक्ष किये से नसहि मोह दुख भारीरे ॥ पूजन भजन बनत नहि कबहुं लंपट अति व्यभिचारीरे । सो अपराध क्षमहु गिरिजापति आरत मोहि निहारीर ॥ अधम उधारण नाम तुम्हरो कहत वेद निरधारीरे । तातें करुणा करो कृपाल अब लीजे मोहि उबारीरे ॥ देवीसहाय महेश भक्ति वर मागत देहु पुरारीरे । यह परिवार तिहारो

स्वामी करहु सदा रखवारीरे ॥ ३ ॥

॥ रागिनी भैरवी ॥

भजु मन अन्नपूरणा माई ॥ टेक० ॥ जासु प्रभाव भनत निगमागम अन्त रहत सकुचाई। जो ध्यावत पावत फल चारौ भ्रम मद छुटि जाई ॥ भजुमन० ॥ काशीपुरी प्रेम सों पालत अन्न देत हरखाई ॥ शंकर अंक निशंक बिराजत गोद लिये गणराई ॥ भ० ॥ शचीरमा शारद जाकी नित करहिं बिबिधि सिवकाई। देखि सकत नहिं दुखित देव द्विज देत बिपति भर साई ॥ भजमन० ॥ ताकी शरण गहत किन पामर मिटहिं सकल दुचिताई। देवीसहाय महेश उमायश कहत न बिधि हरि गाई ॥ भज मन अन्नपूरणामाई ॥ ४ ॥

॥ रागिनी भैरवी ॥

जे गुरु चरण लखत उर माहिं ॥ टेक ॥ ते अजपाजप फल बिन कीन्हे पावत नित सक

नाहीं ॥ जे गुरु० ॥ आनद मगन रहत निस-बासर पापपहाड़ बिलाहीं ॥ जे गुरु० ॥ अन्त समय नश्वर भवसागर पल भर में तरजाहीं ॥ ॥ जैगुरु० ॥ देबीसहाय महेश परम पद पाय अधिक हरखाही ॥ जे गुरु चरण लखत उर माहीं ॥ ५ ॥

॥ ठुमरी खम्माच की ॥

मधुप मन शिव पदपङ्कज लाग ॥ टेक ॥ अन्य देव रति कीरति गुणगण किंशुकतरु सम त्याग ॥ मधुप० ॥ दस भ्रमरिन के संग बसत है इनके रस मत पाग ॥ म० ॥ जहँ न होय हर चरित श्रवन कछु तुरत तहांसे भाग॥मधुप०॥ देवीसहाय महेश कृपा करि तव दीहे अनुराग॥ मधुप मन शिवपदपङ्कज लाग ॥ ६ ॥

॥ ठुमरी खम्माच की ॥

करो रे मन शिव पदपङ्कज प्रीत ॥ टेक ॥ तिय सुत बन्धु धाम धन परिजन कोऊ न तेरो

मीत ॥ करोरे० ॥ इनको संग त्याग अबपामर बैस गई सब बीत ॥ करोरे०॥ ऐ हैं कालकुटिल अनचक जब पल में ली हैं जीत ॥ करोरे० ॥ देबीसहाय महेश भजन तब करिहै तोहि अभोत ॥ क० ॥ ७ ॥

॥ ठुमरी ॥

आत्मा बीरेश्वर भजु दयाल। नसि जाय सकल भ्रम मोह जाल ॥ टेक ॥ कचलाल भाल नशि पाल व्याल। तन भस्म जटित अरु रूप बाल ॥ आत्मा० ॥ दोऊ अधर अरुण रददुति त्रिशाल। हँसि हँसि शिशुके कछु करत ख्याल ॥ आत्मा० ॥ कटि किङ्किणि कुण्डल मणिन माल। भुज कटक लटक लखि चलतचाल ॥ आत्मा० ॥ विश्वानर मुनि पर ह्वै कृपाल। दै सुवन दहन कीन्हो निहाल ॥ आत्मा० ॥ देवीसहाय अस प्रभु सम्हाल पैहौ महेश पद दरस हाल ॥ आत्माबीरेश्वर० ॥ ८ ॥

॥ लावनी ॥

जय जय जय गौरीनाथ दीन हितकारी । हरलेहु बेगि हर भारी पीर हमारी ॥ टेक ॥ मैं शोक सिंधुमें मगन नाव नहिं बेरा। है केवल केवल ब्रह्म भरोसा तेरा ॥ कोऊ करत न मोर सहाय चहूँदिस हेरा । अस जानि जगत के जनक करहु निरबेरा ॥ त्रयलोक दहन निज कण्ठ हलाहल धारी ॥ ह० १ ॥ ब्रह्मा अरु विष्णु सुरेश शेष सुरनायक । यम वरुण कुबेर कृशानु शचीश सहायक ॥ नैरित्य और ईशान जानिनिज पायक । नित धरत तिहारो ध्यान संत सुखदायक ॥ बहु दिये तिन्हें बरदान गंग सिरधारी ॥ हर० ॥ २ ॥ जो भयो जासु जग ईश ईश तुम कीन्हो । तुम चक्रसुदर्शन नारायण को दीन्हो ॥ ते भये सकल जगपूज्य तुम्है जिन चीन्हो । अरु अन्त समय भवनाथ रूप तब लीन्हों प्रभु करहु अभय मोहि कृपा कटाक्ष

निहारी ॥ हरलेहु० ॥३॥ मैं कुटिल अज्ञ अभिमान युक्त दुरभागी । सतसंग हीन मलीन कर्म अनुरागी ॥ नहिं जपत तिहारो नाम विषयरस त्यागी । अब देहु नाथ निज भक्ति अलौकिक मागी ॥ देवीसहाय सुमिरै महेश त्रिपुरारी हरलेहु० ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ रेखता तरजोबन्द ॥

जो धरते ध्यान शंकर का वही भव पार जाते हैं । पकड़ कर मुक्ति कन्या का स्वयं शिव रूप पाते हैं ।

॥ दोहा ॥

कोटि जन्म के पुराय जब, उदय होत एक संग ।
छूटत मन की मलिनता, अरु भावत सतसंग ॥

॥ शैर ॥

उपजती भक्ति फिर उससे नहीं पातक सताते हैं । जो धरते० ॥

॥ दोहा ॥

भक्ति जनत बैराग्य सुत, वह जब होत प्रचण्ड ।

मनते ममता पट झटक, करि डारत वहु खण्ड ॥

॥ शैर ॥

प्रगटता ज्ञान तब उरमें सबी समदृष्टि आते हैं ॥ जो धरते० ॥

॥ दोहा ॥

पूर्ण होत सम दृष्टि जब, जात अविद्या रैन ।
लहत सहज निर्वाण पद, जहां निरंतर चैन ॥

॥ शैर ॥

पर ऐसे संत दुनियां में बहुत अब कम दिखाते हैं । जो धरते० ॥

॥ दोहा ॥

निमिष न गुरु पद रति करत, चाहत विषय कुसंग ।
कस न डसहिं तेहिं कोह करि, दालिद दुःख भुजंग ॥

॥ शैर ॥

तदपि नर बल गहैं उनका तो पलभर में जिलाते हैं ॥ जो धरते० ॥

॥ दोहा ॥

देवीसहाय महेश गुण, गावो हिय हरषाय ।

कलि में और उपाय नहिं, कलिमल सकल नसाय॥

॥ शैर ॥

उन्हें कुछ डर नहीं यमका जो हरदम हर मनाते हैं। जो धरते ध्यान शङ्कर का वही भव-पार जाते हैं॥ १० ॥

॥ ठुमरी ॥

हमारे प्रभु शङ्कर साम्बदयाल । दलत सकल भ्रममोहजाल ॥ टेक० ॥ सीस मुकुट शुचि गंग बिराजै। श्वेत भस्म भूषित तन राजै। लसत रुचिर उर मुण्डमाल ॥ हमारे० ॥ कुण्डल तरल गरल छवि छाजै। कोटिन मन्मथकी दुति लाजै। सोहत शुभ उपवीत व्याल ॥ ॥ हमारे० ॥ पंचबदन भुजचार अनोखी। गज छाला ओढे अति चोखी। तीन नैन शशि भानु ज्वाल ॥ हमारे० ॥ बाम अंग गिरिराज दुलारी। श्रीमहेश बहु आयुध धारी। देवी सहाय लखि भो निहाल ॥ हमारे प्रभु० ॥

॥ ठुमरी ॥

सकल जग देख्यो, स्वारथरत लेख्यो, न भावै शिव बिन कछु मोरे जियरे ॥ टे० ॥ पंच बदन दृग तीन चार भुज रे, विराजै सीस गंगा, सुभुजन भुजंगा, बसो है वहोनंगा हमारे हिय रे ॥ सकल० ॥ नर तन पाय परमपद साधकरे, जपत नाम जोई, लहत सुख सोई न आवे दुख कोई, हूताके नियरे ॥ सकल० ॥ जप तप योग बनत नहिं कलि में रे, बिसारि भ्रम फांसी, बसौ चलि कासी, करो न लखि हाँसी, बिरानी तियरे ॥ सकल० ॥ भवसागरे भय भोम बिदारन रे, महेश पद काहीं, विमल उर माहीं, निरखि होत देवीसहाय सियरे ॥ सकल० ॥ १२ ॥

॥ ठुमरी ॥

शिव सुमिरन सब पाप ताप दुख दारिद दूरिहटन अपनाहीं ॥ टेक ॥ सहज उपाय

करहु यह नरवर एहि कलिकाल बनत तप- नाहीं ॥ शिव० ॥ तात मात सुत सुहृद बंधु- जन तियधन धाम जानि सपनाहीं ॥ शिव०॥ मान सिखावन मोर मूढमन तज ममता मद मोह सदाहीं ॥ शिव० ॥ देवी सहाय महेश शरणगहु है जगसार नाम जयनाहीं ॥ ॥ शिव० ॥ १३ ॥

॥ ठुमरी खम्माच की ॥

शिव सुयश निरंतर गाइये ॥ टेक ॥ बसिय सदा आनदबन भीतर नितउठि गंग नहाइये ॥ शिव० ॥ रहियदूर अबलन के दलसों सत संगत चित लाइये ॥ शिव० ॥ दस भ्रमरिन के भ्रमभूल्यो निज मन मलिंद समुझाइये ॥ शिव० ॥ देवीसहाय महेश परमपद बिनश्रम, लहि हरखाइये ॥ शि० १४ ॥

॥ ठुमरी काफी पूरबी ॥

ध्यावो ध्यावो मनगौरीनाथ ॥ टेक ॥ सकल

जग झूठोई करत, यह मेरोतेरो, मेरो तेरो तिय सुतधाम, धन आवै नहिं काम ॥ ध्यावौ० ॥ जाकौ सठ चाहत. न चाहत सो तोहिंखल, तदपि न मलदल बिसराय, बिसरायभजत अघा य, शिवपदसुखधाम ॥ ध्यावौ० ॥ देवीसहाय सब पातक नसाय, ताके धरत महेशपदध्यान, प्रतिपल प्रतिछिन, तजि अभिमान, नर पावै मन काम ॥ ध्या० ॥

॥ ठुमरी ॥

शिव न भजे सब बीति उमरिया । करत रह्यो बहु व्यसनरगरिया ॥ टेक ॥ बालापन मन खेल सुहान्यो अरु न रही कछुकाहूकी खब-रिया ॥ शिवन० ॥ तरुण भयो मदमोह मढ्यो तन भावत नवतरुणी की सेजरिया ॥ शिवन०॥ बृद्धापन ममता पटओढै चलि न सकत नहि परत नजरिया ॥ शिवन० ॥ देवीसहाय महेश

भजनकर मिलि जैहैं शिवलोक डगरिया ॥ शिवन० ॥ १६ ॥

॥ ठुमरी ॥

बसब सदा शिव तोरी नगरिया। करब दरस करि सुफल नजरिया ॥ टेक ॥ कोटिन जन्म रह्यो भ्रमभूल्यो अब पाई तुव धाम डगरिया ॥ बसब० ॥ तुवनगरी तनजीव तजत जो करत देव सब ताकी चकरिया ॥ बसब० ॥ सुमिरत नाम अखिल अघभागत विमलहोत मति निपटगमरिया ॥ बसब० ॥ देवीसहाय महेश कृपा तें छूटि गई जिय खटक फिकिरिया ॥ बसब० ॥ १७ ॥

॥ ठुमरी ॥

कसन वसत सठ शम्भु नगरिया। करत बृथा निज मूढ़ उमिरिया ॥ टेक ॥ सब तीरथ जहं पाप तजन हित, बसत सदा करि देखु नज़रिया ॥ कसन० ॥ चारि पदारथ लुटत रैन

दिन, ज्ञान खानि विद्या की बजरिया ॥ कसन० ॥ श्रीगौरीश रची करुणा करि, यह अनुपम निज धाम डगरिया ॥ कसन. ॥ देवी सहाय कह्यो गुरु मोसों, बसु महेशपुर त्यागि फिकिरिया ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ भैरवी ॥

हे शिव शरण गही हमतेरी ॥ टेक ॥ शरणागतप्रतिपालक स्वामी पीर हरौ प्रभु मेरी ॥ हेशिव. ॥ अधम उधारन नाम तिहारो कहत बेद बुध टेरी ॥ हे शिव. ॥ वेगि दयानिधि त्रास हरौ मम नेक नेह सौं हेरी ॥ हेशिव. ॥ देवीसहाय महेशभक्ति बर मागतदेहु सबेरी ॥ हे शिव. ॥ १८ ॥

॥ सोरठा ॥

शंकर अब सुनिये मेरी टेर ॥ टेक ॥ दुःख सिंधु चहुंदिस बढ़ि आयो सोचरह्यो उर घेर । त्रासमिटै तुवदास की तबही खोलि पलक जब

हेर ॥ शंकर० ॥ जातेमिटै सकल दुचिताई सोई करहु सबेर । देबीसहाय पुकारत आरत कर महेश मतदेर ॥ शं० ॥ २० ॥

॥ झंझौटी ॥

दयानिधि डूबत राखिलियो ॥ टेक ॥ मन मेरो मगछाड़ि चलन हित पूरण प्रैज कियो । करि तुम कृपा जानि निज सेवक औसर नाहि दियो ॥ दयानिधि० ॥ अब प्रभु करहु सोय जिमि होई निर्मल मोर हियो । यदपि कुपूत तदपि सुत तेरो भव निधि भीम भियो ॥ दया निधि० ॥ भखि कुसंग विष नर पामर मै पुनि केहि भांति जियो । जब तव नामसुधा आलस बस कछु कछु नाथ पियो ॥ दयानिधि० ॥ देवीसहाय धन्य गुरु पद रज परसत पाप छियो । छूटिगई सिगरी दुचिताई भयो अपाप जियो ॥ दयानिधि० ॥ २१ ॥

॥ खेमटा पूरबी ॥

भोलेबाबा दरस अब दैद्यो लागल मोर जियरवा ॥ टेक ॥ बाएं अंग में गौरी बिराजै सोहै चन्द्र लिलरवा । जटामुकुट में गंग छटा छबि छाजै कंठ जहरवा ॥ भोलेबाबा. ॥ मुंड माल गज खाल सलोनी ब्यालों के उपहरवा । स्वेत भूतिवर अभय शूल अरु डमरू लीन्हे करवा ॥ भोले० ॥ गौर शरीर तीन द्दग सुन्दर स्वर नीरद उनहरवा । एक सुवन शिषिबाहनगामी एक उन्दर असवरवा ॥ भोलेबाबा.॥ देवीसहाय कह्यो गुरु मोसों ऐसो रूप उदरवा । सो महेश निरखत उर अन्तर मैहूं आठ पहरवा ॥ भोलेबाबा दरस० ॥ २२ ॥

॥ खेमटा पूरबी ॥

भोलेबाबा दया करि मोको राखो अपनी नगरिया ॥ टेक० ॥ शिव शिव नाम जपौं निसवासर जबलो मोरि उमरिया । आनद मगन रहौं

निसिबासर छूटै मोह फिकरिया ॥ भोलेबाबा०॥ वेद पुराण सकल यश गावत काशी मुक्ति बजरिया । चरथिर जीव तजै तन कोई नन्दी पावै सवरिया ॥ भोले० ॥ उपजै विमल बिबेक ज्ञान मति सुधरै निपट गमरिया । सूझै रूप अनुपम तुम्हरो झरसै पाप पँजरिया ॥ भोले बाबा० ॥ देवीसहाय महेश उमाबर लीजै बेगि खबरिया । दीन जानि निज सेवक स्वामी फेरो नेक नजरिया ॥ भोलेबाबा० ॥ २३ ॥

॥ खेमटा ॥

गौरी नाथ शरण मन गहुरे ॥ टेक ॥ छाँड़ि सकल जियकी कुटिलाई उनहि को नाम निरन्तर कहुरे ॥ गौरीनाथ० ॥ बिषयिन सों नहिं भाषन कीजै सज्जन संग रैन दिन रहुरे ॥ गौरी नाथ० ॥ ह्वैहैं विमल हृदय तब तेरो पैहै सहज सदा सुख बहुरे ॥ गौरीनाथ०॥ देवीसहाय अन्त

बिनही श्रम परम महेश धाम तूँ लहुरे ॥ गौरी नाथ० ॥ २४ ॥

॥ खेमटा ॥

ऐसेइ कहत सुनत दिन बीते ॥टेक॥ कबहुं न ध्यान धर्‍यो शंकर को कबहु न तज्यो मोह मद हीते ॥ ऐसेइ० ॥ कबहुन संग कियो संतन को फन्द जाल हकनाहक कीते ॥ऐसेइ०॥ अबहूं चेत मूढ़ मन मेरे जैहैं अन्त समय सब रीते ॥ ॥ ऐसेइ० ॥ देवीसहाय महेश नाम जपि पलमें खल भवसागरं जीते ॥ ऐसेइ० ॥ २५ ॥

॥ खेमटा ॥

जो करवैहो करब हम सोई ॥ टेक० ॥ उर प्रेरक करुणानिधान तुम बिन मरजी तुव कछु नहिं होई ॥ करब हम सोई जो करवैहो करब हम सोई० ॥ याही ते मम पुण्य पाप के तुम भागी मेरो नहि कोई ॥ करब० ॥ जन्म मरण दुख छूटत ताको तुम मय लगत जगत प्रभु

जोई ॥ करब० ॥ भजहु महेश मिटै ममतामद देबीसहाय चहत बर दोई ॥ करब ॥ २६ ॥

॥ झंझौटी ॥

जे नर मूढ़ न शम्भु सनेही ॥ टेक० ॥ अहंकारबस कर्म अशुभशुभ मानत कृत अपने ही ॥ जे नर० ॥ तिनको संग त्याग रे पामर यदपि परम प्रिय गेही ॥ जे० ॥ सुपनेहु प्रेम करै शंकर सों ताहि समुझ निज देही ॥ जे नर० ॥ देबीसहाय महेश भजन करि अधम अनेक तरेही ॥ जे० ॥ २७ ॥

॥ वसन्त ॥

जहँ शंभु भक्ति तहँ ऋतु वसन्त। औरौ अनेक बिधि सुख अनन्तर ॥ टेग० ॥ शुभ चरित कथा कीर्तन बिहार। सतसंग रंग केसर फुहार ॥ जहँ शंभु० ॥ अनुराग बाग आनँद समीर। बहु सन्त समागम भौर भीर ॥ जहँ शंभु० ॥ नव भक्त भक्ति लतिका नवीन।

शुक कोकिल रव शिव रब प्रवीन ॥ जहँ शंभु० उर लख महेश पद नख बिशाल । देबीसहाय सोई पुष्प जाल ॥ जहँ शंभु० ॥ २८ ॥

॥ बसन्त ॥

शिव फाग मचायो गौरि संग । उत शक्ति बृंद इत गण उतंग ॥ टेक० ॥ सब मत्त भगे करि पान भंग । लगे करन बिबिध लीला सु ढंग ॥ शिव फाग० ॥ बाजत उपंग मुँहचंग चंग । कर ताल बीन डमरू मृदंग ॥ शिव फाग० ॥ गावत नाचत फरकाय अंग । बहु भाँतिन छूटत दिव्य रंग ॥ शि० ॥ अस श्रीमहेश की लखि तरंग देबीसहाय उपजत उमंग ॥ शि० ॥ २९ ॥

॥ होली ॥

जो चाहो सुख भाई । भजो शिव नाम सदाई ॥ टेक० ॥ नाम प्रताप बरनि को पावै गनिका शुभ गति पाई । बालमीक भये मुनिवर ज्ञानी,

रामायण जिन गाई ॥ परम पद बाट बनाई । जो चाहौ० ॥ कलि में नाम समान कछु नहिं दूजो और उपाई । प्राणायाम नेम ब्रत संयम, साधन में कठिनाई ॥ परत यह प्रगट लखाई । जो चाहौ० ॥ आलसहू बस नाम उचारै भव सागर तरि जाई । जे नर नेम प्रेम सों नितही, जपत हिये हरखाई ॥ सकै करि कौन बड़ाई । जो चाहौ० ॥ देवीसहाय महेश उमा यश कहत सुनत मन लाई । सज्जन संग रहत निसबासर, कपट कुकर्म विहाई । राह गुरुदेव बताई ॥ जो चाहौ० ॥ ३० ॥

॥ होली ॥

शिवपद पंकज ध्यावै । नाम नित नेह सों गावै ॥ टेक० ॥ पर अपवाद सुनैं नहिं सपने पर तिय देखि बरावै । पर धन धाम लोह तृण समुझै, परम पुनीत कहावै ॥ पाप सब धोय बहावै । शिवपद० ॥ दृढ़ विश्वास होय तब

उरमें सतसंगत मन भावै । छूटहिं कुमति कुपन्थ कुटिलता, भक्ति भाव सरसावै॥ दरस घट भीतर पावै । शिवपद० ॥ आनंद मगन रहै जीवन भर दुखनियरे नहि आवै। कामक्रोध अरु मोह लोभ मद, फिर नहिं ताहि सतावै॥ अगम भवनिधि तरिजावै । शिवपद० ॥ देवीसहाय बिना गुरुपदरज को असमति उपजावै । परसत जाहि अखिल अघ भागत, सहज महेश मिलावै ॥ जन्म अरु मरण नसावै । शिवपद० ॥ २१ ॥

॥ होली ॥

होरी होय रही शिव बीरेश्वर दरबार ॥ टेक ॥ सेवक सरस हृदय जुरि धाये तिय धन धाम विसार । प्रेम मगन तन मन सुधि नाहीं घेरि लियो प्रभु द्वार ॥ होरी होय० ॥ कोई नाचत करताल बजावत छेड़त कोइ सितार । डफ मिरदंग ढोल धुनि धुधुकत गावत राग धमार॥ होरी होय० ॥ छूटत केसर रंग सुगन्धित मनहुं पियूष फुहार ।

अबीर गुलाल लाल नभ कीन्हों मोहि गई सुरवार ॥ होरी होय० ॥ देवी सहाय महेश फाग यह परम पुनीत उदार। जो गावै पावै फल चारो ठगि न सकैं ठग चार॥ होरी होय रही शिव०॥२२॥

॥ होरी आड़ीलय ॥

योंहीं जन्म गमायो। शिव यश कबहु न गायो ॥ टेक ॥ जन्म अनेक विषय रस भोगे ताहु पै न अघायो। गर्भबास की भूल गई सुधि पुनि ममता लपटायो ॥ योंही जन्म० ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह बस निजरूपहिं बिसरायो। स्वान समान फिरत भ्रम भूल्यो परधन धाम सुहायो ॥ योंही० ॥ बीतगई सो बीतजानदे अबहूं कछु न नसायो। भज गौरीश कटै भव-बन्धन यह निगमागम गयो ॥ योंहीजन्म० ॥ देवीसहाय पाय नरतन जो शिव शरणागत आयो। ताहि महेश कलेश काटि सब वर दीन्हो मनभायो ॥ योंहीजन्म० ॥ २३ ॥

॥ होरी ॥

शिवपद प्रीति करी जिन तेई परम सुजान ॥ टेक० ॥ पर अपवाद सुनत नहिं सपने करत सदा सनमान । परतिय पर धन धाम न हेरत यह उनकी पहिचान ॥ शिवपद० ॥ आठहु सिद्धी रहैं करजोरे तजत मोहँ अभिमान। काम कुटिल कछु करि न सकत फिर प्रगटत उर विज्ञान ॥ शिवपद. ॥ आप तरैं तारैं निजकुल सब गावत बेद पुरान । मन बाणी जहँ पहुँचत नाहीं पावत सो शुभथान ॥ शिवपद० ॥ देवीसहाय कह्यो गुरु मोसों जो चाहै निरबान । बस आनदवन तज ममता मद कर महेशपद ध्यान ॥ शिवपद ॥ ३४ ॥

॥ होली ॥

अन्नपुरणामाय हमारी । मेटहु पीर अनाथ बिचारी ॥ टेक ॥ तैं जगजननि कहावत जननी याही से आयो शरण तिहारी ॥ अन्न० ॥

निज सुत क्रूर कुपूत कुपन्थी त्यागत नाहि कबहूं महतारी ॥ अन्न० ॥ दूरि करो जनकी दुचिताई नेक सनेह निगाह निहारी ॥ अन्न० ॥ देबीसहायमहेश भक्तिवर मागत देहु गिरीशदुलारी ॥ अन्न० ॥ ३५ ॥

॥ होरी श्री गंगाजी की ॥

गंग उतंग तरंग तिहारी । पाप पहाड बिलात निहारी ॥ टेक ॥ बेद पुराण बिमल यश गावत, सीस चढ़ाय लई त्रिपुरारी ॥ गंग० ॥ साठिहजार सगर सुन तारे, और अनेकन पातक हारी ॥ गंग० ॥ जे तन तीर तजत बड़ भागी, आवत लेन गिरीश मुरारी ॥ गं० ॥ देबीसहाय यही बर मागत, देहु मिलाय महेश पुरारी ॥ गंग० ॥ ३६ ॥

॥ होली संस्कृत को ॥

कृतं यन्मया ऽज्ञानतोघः पुरारे । त्वया प्रेक्षणीयं न तन्मन्मथारे ॥ टेक ॥ बलं केवलं तेस्ति

नान्योमदीये, ऽधुना रक्षणे तत्परो ऽप्यन्धकारे ॥ कृतं० ॥ शरण्योसि हि त्राहि दीनं जनं स्वं, निमग्नञ्च मान्दुःखसिंधावपारे ॥ कृतं० ॥ असौ कुत्सितो नेक्षणीयो दयातो, गतिर्मे कथंस्या त्कृतेस्मिन्विचारे ॥ कृतं० ॥ कदाप्यर्चितो नो तथापि त्वदीयो, भवातो दयालुःस्वतो मध्यसारे ॥ कृतं० ॥ महेशेन देवीसहायस्य सूनोः सुतेनेष्ट मेतत्प्रदष्टङ्गजारे ॥ कृतं य० ॥ ३७ ॥

॥ होली संस्कृत ॥

समर्थोस्ति बोद्धुम्भवानीपतिन्त्वाम् जनः को विभो शूलपाणे त्रिलोक्याम् ॥ टेक ॥ न वेदा न देवा न शास्त्राणिसम्यक्, विदन्तीन्दुमौले निधे प्रोद्धिभानाम् ॥ समर्थो० ॥ कथंवेझिविज्ञानहीनो मलीनो, ऽतिदीनोजनो ध्यानगम्यं मुनीनाम् ॥ समर्थो० ॥ सएवाभिजानाति यस्योपरि त्व, न्दयालु दयासागरे ज्याऽखिलानाम् ॥ समर्थो० ॥ स्वतोतो यमारे स्मरारे पुरारे

विधे ह्यन्धकारे ह्यसारे नुकम्पाम् ॥ समर्थो० ॥ स्व भक्तान् परित्रायसेविप्लवेभ्यो, महाविघ्न कारी शहेदुर्जनानाम् ॥ समर्थो० ॥ जगत्सृष्टिसं-हाररक्षाकरस्त्व, म्प्रसन्नः सदा सर्वदः सर्वके षाम् ॥ समर्थो० ॥ न चादि र्नचान्तं न मध्य म्प्रसिद्धं, समृद्धिप्रदं ब्रह्म विश्वादिकानाम् ॥ समर्थो० ॥ जगन्मोहितं सर्व मेतत्त्वयैव, समं सन्मुनीन्द्रै र्वितन्य स्वमायाम् ॥ समर्थो० ॥ शरण्योसि संरक्ष मग्नम्भवाब्धौ, महाकाल का-लान्तकोत्र प्रभोमाम् ॥ समर्थो० ॥ महेशं हि देवीसहायस्य सुनोः, सुतं सम्प्रदाये शहे भक्ति नौकाम् ॥ समर्थो० ॥ ॥ ३८ ॥

॥ घाँटो ॥

नाहक जन्म गमायो हो रामा ॥ कछु न न कमायो ॥ टेक ॥ बालापन मायावस पामर खेल खान मन लायो हो रामा ॥ कछु न० ॥ तरुण भयो तन तमक बढ़ी अति तरुणी साथ

सुहायो हो रामा ॥ कछु न० ॥ बृद्ध भयो कोऊ करत न आदर ममता ज्ञान भुलायो हो रामा ॥ कछु० ॥ देबीसहाय महेश भजौ अब अन्त समय नचिगायो हो रामा ॥ कछु न० ॥ ३९ ॥

॥ घाँटो अष्टपदी ॥

शिवपद नेह न जान्यो हो रामा । जन्म सिरानो ॥ टेक ॥ भखि कुसंग विष मत्त भयो सठ निज न रूप पहिचान्यो हो रामा ॥जन्म०॥ परतिय परधन धाम हरन हित निसदिन रहत लुभान्यो हो रामा जन्म० ॥ नर तन लहि परमारथ साधक अनरथ पथ सुख मान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ पूजन भजन नेम व्रत संयम कहत सुनत अलसान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ पर उपकार करत सपने नहि पर अपवाद सुहान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ ताहू पै नहिं लाज धरत उर सब से बनत सयान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ अबहूं भज हर चरण सरोरुह कछु नहि तोर

नसान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ देवी सहाय महेश भजन बिन मिलहि न तोंहि ठिकान्यो हो रामा ॥ जन्म० ॥ ४० ॥

॥ घाँटो गंगाजो की ॥

केतिक पतित उधारे हो रामा। सुरसरि भारे ॥ टेक० ॥ सो विधि विष्णु नहीं कहि पावत गिनती गिन २ हारे हो रामा ॥ सुरसुरि० ॥ नवत तिन्है सब सुर निस बासर वसत जे तीर तिहारे हो रामा ॥ सुरसरि० ॥ कोटिन खल तव नाम श्रवण तें हरिहर लोक सिधारे हो रामा ॥ सुरसरि०॥ देवीसहाय महेश भक्तिवर मागत देहु सकारे हो रामा ॥ सुरसरि० ॥ ४० ॥

॥ घाँटो श्रीगुरुदेव की ॥

गुरू के चरण चित लावे हो रामा ॥ सब सुख पावै ॥ टेक० ॥ जन्म २ के पाप पुरातन यम यातन नसि जावे हो रामा ॥ सब० ॥

छूटहि कुमति कुसंग कुटिलता सतसंगत नित भावे हो रामा ॥ सब० ॥ आनँद उमँग बढ़ै निसबासर भक्तिभाव दृढ़ आवै हो रामा ॥ सब०॥ देवीसहाय महेश अन्त तेहि आनँद वनहिं बसावे हो रामा ॥ सब० ॥ ४२ ॥

॥ कजरी ॥

सब जग झूठाहै मन मेरे गहु तू शिवशङ्कर की आस ॥ टेक० ॥ जाको नाम लिये दुख दालिद कबहुं न आवत पास ॥ सब० ॥ छूटि जात जग के दृढ़ बंधन हिय में होत हुलास ॥ सब० ॥ भोगि भोग सब अन्तसमय नर पावत काशीबास ॥ सब० ॥ देवीसहाय कह्यो गुरु मोसों करमहेश विश्वास ॥सब० ॥४३॥

॥ कजली ॥

तजि मन गौरीपति को नमवाँ काहे जग में फिरत भुलान ॥ टेक० ॥ कोटिन योनि कष्ट सहि बौरे पायो नर तन आन ॥ तजि० ॥ ताहू

पैं हर भजन करत नहिं गर्भबास बिसरान ॥ तजि० ॥ बालापन बालन संग खेले हित अनहित नहिं जान ॥ तजि० ॥ तरुण भयो तरुणी मन भावत बाढ्यौ अति अभिमान ॥ तजि० ॥ तृष्णा तुरंग चढ्यो वृद्धापन ममता मति लपटान ॥ तजि० ॥ तन कंपत मुख बात न आवत इन्द्रीगण मुरझान ॥ तजि० ॥ नाती पूत अनखसों बोलत तदपि न उपजत ज्ञान ॥ तजि० ॥ उनहीं में लव लीन रहत है करत न शिव गुण गान ॥ तजि० ॥ अबहूं चेत चलतकी वेरियां रेपामर नादान ॥ तजि० ॥ देबीसहाय त्यागि दुचिताई कर महेश पद ध्यान ॥ तजि० ॥ ४४ ॥

॥ कजली ॥

भोले बाबा तोरे दरशन बिन मोर जिय खा लागै ना ॥ टेक० ॥ शिव २ नाम जपे निसबासर दुर्मति जागे ना ॥ भोलेबाबा० ॥

तुम्हरी कृपा कटाक्ष होत जव नर दुख पागै ना ॥ भोलेबाबा० ॥ भजन करत नहिं कहत मूढ़ मति पातक भागै ना ॥ भोलेबाबा० ॥ देवी सहाय महेश भक्ति तजि कोउ बर मागै ना ॥ भोलेबाबा० ॥ ४५ ॥

॥ कजली ॥

नाहीं माने रे जियरवा बिन शिवशङ्कर देखे मोर ॥ टेक० ॥ आदि शक्ति हैं पारवतीजी बाम अङ्ग की ओर ॥ नाहीं० ॥ दीनदयाल दयाकर अब तो विनवत दोऊकरजोर ॥ नाहीं० ॥ बेगि हरो दारुण दुख मेरो निरखि कृपा की कोर ॥ नाहीं० ॥ देवीसहाय महेश जनम से हाथ बिकाने तोर ॥ नाहीं० ॥ ४६ ॥

॥ कजली ॥

देखे कहूं भोला कहूं काशी गलियन में ॥ टेक० ॥ तरसत बीती सब हमरी उमिरिया दरशन जाके चाहूं काशी गलियन में ॥ देखे० ॥

देवी सहाय महेश दास तव अब बनि पाहूं आयो काशी गलियन में ॥ देखे कहुँ० ॥ ४७ ॥

॥ गज़ल ॥

गोरीशका सुमिरन सदा मनमें किया करो॥ हर चरित अमृत अनूप कानों से पिया करो॥ टेक० ॥ जे कुटिल हर पद बिमुख लंपट मोह मद माते । नित संग से उनके मेरे प्यारे भिया करो ॥ गौरीश० ॥ जप योग संयम दान जो कुछ बन पड़े तुम से । तजि कामना फल शंभु को उस्का दिया करो ॥ गौरीश० ॥ नर देह दुर्लभ फिर न पाओगे न भूलो यार । सतसंग जल धोय नित निर्मल हिया करो ॥ गौरीश०॥ देवीसहाय अपार भवनिधि का जो चाहो पार । तो श्रीमहेश का नाम दम् पर दम् लिया करो ॥ गौरीश० ॥ ४८ ॥

॥ गज़ल ॥

गौरीश को सुमिरन सुगम करते रहो

हरबार । कलिमल अचल जल जलकै सब आपी से होगे छार ॥ टेक० ॥ कामादि ग्राह कराल है संसार सागर में । शिव नाम की नौका बिना कैसे पड़ोगे पार ॥ गौरीश० ॥ अंगी अंगी सुहृद जन साथ यह कोई न जायंगे । कोइ घाट तक कोई बाट तक कोइ घरी के द्वार ॥ गौरीश० ॥ यमराज के इजलास में चलती नहीं कानून । पछताओगे पीटोगे सिर जब लेंगे वह इजहार ॥ गौरीश० ॥ देबीसहाय महेश भजतज कुटिल लम्पट प्रीति । घटमें दरस पाओगे झट जाओगे शिवदरबार ॥ गौरीश० ॥ ४६ ॥

॥ लावनी ॥

शरण आयो शङ्कर तेरी । भलो अब हरौ पीर मेरी ॥ टेक० ॥ भक्तभय भञ्जन हौ भगवान । असुर पुर मास्यो एकै बान ॥ बिमल यश गावत वेद पुरान, करत नहि बार देत बरदान ॥

॥ दोहा ॥

कालकूटज्वर असुर सुर, नर मुनिवर अकुलान। बिकल त्रिलोकि त्रिलोक तुम, कियो हलाहल पान ॥ बिपति प्रभु सब की निरवेरी॥ भला अब हरो पीर मेरी ॥ १ ॥ भाल शशि सीस गंग की धार। गोद गिरि सुता बैल असवार ॥ बदन शुभ पञ्च भुजा है चार। डमरू वर अभय शूल खरधार ॥

॥ दोहा ॥

भस्म व्याल नृ कपाल गज, खाल व्याघ्र को चर्म। यह विभूत गौरीश तिहारी, कोइ न जानत मर्म ॥ थके हरि ब्रह्मादिक हेरी ॥ भला अब हरो पीर० ॥ २ ॥ निरन्तर जपै तुम्हारो नाम। होय सब उस्के पूरण काम ॥ छुटै अज्ञान लहै बिश्राम। त्यागि तन पावै निश्चल धाम ॥

॥ दोहा ॥

जो चित दे चीन्हैं तुम्हैं, सो न परै भव कूप । निर्विकार अद्वैत अज, होय आप ही रूप ॥ रहैं सिधि अणिमादिक चेरी ॥ भला अब० ॥ ३ ॥ दयानिधि तुमसमान नहिं और खूब मैं देखा करके गौर ॥ तुम्हीं व्यापे हौ हर हर ठौर । उमावर देवों के सिर मौर ॥

॥ दोहा ॥

जय महेश करुणायतन, यतन हीन मोहि जान । कर अवलम्बन दीजिये, अपनो बालक मान ॥ अरज देबो सहाय टेरी ॥ भला० ॥

॥ छन्द ॥

शिवपद पङ्कज मधुप मन नहिं होत पुनि पछिताय है । यम याचना से कौन बिन हर भजन तोहि छुड़ाय है । तिय धाम धन सुत सुहृद परिजन संग कोइ न जाय है । निजकर्म के अनरूप रे सठ भोग पुनि पुनि पाय है ॥

दवीसहाय महेश गुणगण प्रेम सों जो गाय है। सोइ कर्म वन्धन तोरिसब शिवलोक अन्त सिधाय है ॥ ५१ ॥

॥ छप्पै ॥

कबहुं शम्भु सिर इन्दु गहन हित हाथ बढ़ावत। कबहुं षड़ानन संग जंग करि फैल मचावत ॥ कबहुं गौरि की गोद मोद सों मोदक पावत। कबहु सुगड फटकार मातु पितु मन हुलसावत ॥ यह कवि महेश याचत तुम्हें सुनहु अरज शंकर नँदन। अस बालरूप मम हिय सदन बसहु सदा करिवर वदन ॥ ५२ ॥

कबहुं मोद युत गोद गौरि लै अति दुलरावत। कबहु मृदुल कर पकरि बिहसि मग ठुमुक चलावत ॥ कबहुँ विनय के बचन रचन की भांति सिखावत। कबहुं विविधि रंग बसन रतन भूषण पहिरावत ॥ नित भखत बिघन मोदक हरषि निरखि शम्भु पुलकत जिन्हें। निग-

मागमार्थ के बोध हित कबि महेश सुमिरत तिन्हैं ॥ ५३ ॥

॥ कवित्त ॥

तूही चण्ड मुण्ड खण्ड खण्ड दण्ड खण्ड ही मैं, कीन्हें उद्दण्ड दण्ड सूर अति भारेरी । तूही रक्तबीज चाबि चूसि चूसि मैया, देवन के दाह सों उछाह मन धारेरी ॥ प्रबल प्रचण्ड तूही पौरुष अखण्ड वारे, शुम्भ औ निशुम्भ भूमि मण्डल में डारेरी । भनत महेश एक अचरज बड़ोई यह, जो न तू हमारे दुख दालिद बिदारेरी ॥ ५४ ॥

॥ कवित्त ॥

आठो याम एरी मात तूही निज दासन के मेटत कलेश देत सम्पति घनेरी है । भनत महेश सोई परम पवित्र जग, जापै तूँ नेकहूं निगाह भरि हेरी है ॥ आफत अखण्ड अण्ड वण्ड चण्ड दण्डही में, खण्ड

खण्ड डारत करि करत न देरी है। कौन कहि पावै अम्ब महिमा अपार तेरी, काटत सवेरी कर्म बन्धन की बेरी है॥ ५५॥

अमित अनोखे चोखे गाय नहिं पाये गुण, यद्यपि विरंचि विष्णु बहुधा बिचारेरी। केते तुम मारे केते चावि चावि डारे खल, केतिक पछारे केते उदर विदारेरी॥ भनत महेश केते अधम अजान तारे, केते निज दासन के पातक प्रहारेरी। केतिक सम्हारे अम्ब काज देवबृन्दन के, अमल अशेष रूप केतिक तिहारेरी॥५६॥

चारो ओर सुख के समूह घेरि घेरि रहे, तवते कहूँ न दुख दालिद निहारेरी। कीधौं चावि डारे कीधौं अवनि पछार अम्ब कीधौं ललकारे कीधौं आपही सिधारेरी॥ औरौ एक अद्भुत सो परत लखाई मोहि करत मिताई शत्रु पुंज बलभारेरी। अरुण वरण चारु चरण सरोजन के, जबते महेश आयो शरण तिहारे री॥ ५७॥

(पुनः)

सिद्धन की सिद्धि बुद्धिवन्तन की बुद्धि तूही, धनद की निद्धि आदि शंकर की शक्ति है। शेष औ सुरेश विधि भानु विधु विष्णु आदि, देवन प्रभुत्व देत मातु तुव भक्ति है॥ मुण्ड शूल खप्पर कृपाण कर लह लह, लप लप लपकत जीभ लपकत्ति है। अट्ट अट्ट हँशि रिपु वृन्द भखि गट्ट गट्ट, झट्ट पट्ट काटत महेश की विपत्ति है॥ ५८॥

कबित्त भगवतीके सिंह का वर्णन।

क्षोभित दितिज बल सजल सुरेश जूके, उरमें स्व गर्जनि सौं धीर धरवैया है। प्रबल प्रचण्ड मारतण्ड के समान तेज, दानव दुरन्त दल शोण को पिवैया है। मैया तुव नाम नीर निर्मल सिवैयन के, धामसुख सम्पति सुपूत करवैया है। भनत महेश अम्ब अम्बर जवैया सिंह, वाहन तिहारो दुःख दालिद खवैया है ५९

॥ कवित्त ॥

सुखद कलत्र मित्र वसन विचित्र बहु भूषण लजैया लहे रविकी प्रभाके हैं। यान रथ प्यादे गज तुरंग सुरंग वारे, मरुत लजैया अति कदम चलाके हैं॥ सुकवि महेश पुत्र पवन करैया कुल, करत भलैया शत्रु कुण्ठित कजाके हैं। हीयमें वसाय बिसराय कुटिलाई जिन, चरण सरोज ताके शैल की सुता के हैं॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

सुन्दर सुहात चित्त विलसि विलास इत, होत अधिकारी अन्त अद्भुत समाके हैं। तीन नैन गंगसिर माल उर मुण्डन की सुकवि महेश यान नन्दीगण वाके हैं॥ गावती विचित्र गान अप्सरा सुहावन सों, बन्दत पदार बिन्द देव वृन्द थाके हैं। हीय में बसाय बिसराय

कुटिलाई जिन, चरण सरोज ताके शैल की सुता के हैं ॥ ६१ ॥

॥ कवित्त ॥

एरे मति मन्द क्यों न त्यागि दन्द फन्द, सबै सेवत स्वच्छन्द है अनन्द की सुराशी है। काटै मोह फांस औ छुटावै यम त्रासहू तै, सुखको निवास करै ज्ञान की प्रकाशी है ॥ महिमा महेश कहि पावै ना हिरण्यगर्भ, अघ ओघ नाशी बसै यामै अविनाशी है। अर्थ धर्म काम मोक्ष चारौ की विकाशी यह, कलि में सुकामना की काम धेनु काशी है ॥ ६२ ॥

॥ कबित्त ॥

काहेकौ बिसारे मूढ़ डोलत महेश पद, परम पवित्र छोम लोभ के हरैया हैं। माया की मरोरनि के मोह झकझोरनि के काम की करोवनि के पल में वरैया है ॥ आठौ याम रक्षण करैया साधु भक्तन के संकट कटैया उर-

धीर के धरैया हैं। धर्म के बढ़ैया शुद्ध बुद्धि उपजैया निज, रूप दरसैया भवसिन्धु के तरैया हैं॥ ६३॥

॥ कबित्त ॥

साधै योग जप तप देव अवराधै बहु, इन्द्रिन के द्वार बांधै मनहूं गहा करै। जटन बढ़ावै फल कन्द मूल खावै सब, तीरथ नहावै नित कानन रहा करै॥ भनत महेश ध्यान अचल लगावै नर, ऊरध चढ़ावै प्राण क्लेशहू सहा करै। चारो वेद भाषै और राखै सम दृष्टि गुरु, पदरस चाखै जोन तदपि कहा करै॥ ६४॥

॥ कवित्त ॥

सलिल सराहत सुरासुर सु ऋषिवृन्द ताप तृण नासिवेको दारुण अनल है। शम्भु सीस बासिनि बिकासिनि सकल तत्व, नाम जो जपत पद पावत अचल है॥ घारकी धुका-

रही सौं तरि तरि जात जीव, लखि लखि होत यम उर खलबल है । भनत महेश बांह गहि मम मात गंग, काटि मलदल किन करत अमल है ॥ ६५ ॥

॥ सवैया ॥

भाल निशाधिप बाल छजैं, कचलाल अनुपम घूँघर वारे । व्याल बिभूषण माल कपाल, हुताशन से दृग हैं अरुणारे ॥ बाराणसी कुत बाल बिशाल, शरीर महेश के लाल दुलारे । टालत हैं भ्रमजाल कराल सो भैरव काल कृपाल हमारे ॥ ६६ ॥

॥ संस्कृत कवित्त शिवजी की ॥

स्फटिकशिलाऽनुकारिमूर्ति भूतिभूषिताङ्ग, मधिजटमति तुङ्गधारजन्हुजाधरम् । ढक्काऽभय-शूलवरमरथशिभानुवन्हि, वीक्षण सुभोगिवृंद भूषणंकृपाकरम् ॥ व्याघ्रगजचर्मवस्त्र मुण्डमालिकण्ठकालं, मादिकारण महेश एपवै सदाह-

रम् । वन्देत्वा मनन्त मद्वितीय ममरेश शशि, मीप्सितप्रदञ्च भक्तवत्सल मुमावरम् ॥ ६७ ॥

॥ पुनः ॥

भक्तजन वल्लभ गिरीश निर्जरेश दीन, दीनताऽपहारिनागहारसर्वकारकम् । वृषभविमान दान दक्ष दक्षयज्ञ ऋपु, कामऋपु, पुरऋपु यमऋपु तारकम् ॥ योगिवृन्द बन्दित पदारविन्द सुखकन्द, गुह गणपतिसुत परशक्ति दारकम् । कुत इहरे महेश भजसि न शिव मघ नाशनङ्, कृपा धन म्महेश्वर म्विपाकरम्॥६८॥

॥ पुनः ॥

विमुक्तिदं सुभुक्तिद म्प्रयुक्तिदं समुक्तिदं, प्रभुत्वदं परत्वदं वरत्वद ङ्कृपाकरम् । भवापह म्भयापहं यमापह ङ्क्लापहं, स्मरापह म्पुरापह ञ्च शङ्कर म्महेश्वरम् । विधीन्द्रविष्णु पूजित ञ्च वेदशास्त्र सूचित, म्महेश सम्भजस्व भक्तरक्षणोचितम्परम् । अहीन्द्र कालिका भरङ्कपा-

लमालिका धर, म्भ्रिमोह जालिकाहरङ्गिरीश् वालिकावरम् ॥ ६९ ॥

॥ कवित्त ॥

जै जै श्रीगजानन गणाधिपमैं भजौं तोहि, दीजै सुख संपति अनेक अपनायके । गाऊं गुणगौरव गभीरनहूं तेरेजिमि, ऐसी मति मेरे हिय राखिये टिकायके ॥ कीजिये सनाथ नाथ जानिके अनाथ मोहि, भनत महेश निजरूप दरसायके । छीजिये कलेशु प्रभु राखियेनलेश कछु, पारको दिखैयै दास आपनो बनायके ७०

॥ अथ नव दुर्गा के कबित्त ॥

॥ सवैया ॥

शंकर ब्रह्म उपेन्द्र सुरेन्द्र, नरेन्द्रन मैं रहि मातु तुहीश्म । तोर प्रभाव न जानि परै जग, व्यापिरही सबमें सबके सम ॥ कौन महेश सकै कहि कीरति, शेषहु हारि रहे कहिके थम । शैल समान हरो दुख दालिद, शैलसुता

हरौ दुख दालिद, शैल सुता तुवदास भये हम ॥ ७१ ॥

॥ कवित्त ॥

कारज जुटाय दुख दोषहू हटाय सब सि-द्धिसौं मिलाय होउ ज्ञान गूढ कारिणी। तृष्णा को घटाय आस फांसहु कटाय मम सुख सो सटाय पातु पाप ताप हारिणी ॥ भनत महेश मोहि तेरोई भरोसो मातु दयादृष्टि देखिये अनूप रूप धारिणी। मेटिकै अँदेश औ कलेश छार छार करि, कीजिये सहाय दास जानि ब्रह्म-चारिणी ॥ ७२ ॥

॥ कवित्त ॥

ऋद्धि सिद्ध आठोयाम देत नित सेवकको, पाप के पहाड तिन्हैं काटिवेको कत्ता है। स्व-र्गहू अकाश औ पताल भूमि सातौ सिंधु, ब्रह्मादिक देवन में व्यापो जासु सत्ता है॥ आफत अखण्डकै छार छार पलमाभ, भनत

महेश फाँसफारै जिमिलत्ता है । भूलि चित्रघण्टामूढ सेवै और टण्टा सब, मोह मद्य पीके भयो नाहक क्यों मत्ता है ॥ ७३ ॥

॥ कवित्त ॥

सम्पति सुजानन को ज्ञानिन को ज्ञान देत, मानिन को मानदेत मातु तूं सदाई है । कामिन को कामदेत कुलजा को कानिदेत, कविता कवीन हूं को आपही सिखाई है ॥ देतविद्या विद्वानन को शुद्धि बुद्धि साधुन को, भनत महेश सिद्धि सिद्धनने गाई है । ऐसी कूष्माण्डिनी के ध्याऊँ मैं चरण कमल, देवनकी बार बार आपदा हटाई है ॥ ७४ ॥

॥ कवित्त ॥

महिमा अपार जाकी पावैनहि वेदपार, सहसानन गाईपै गाय नाहि पाईहै । भाललिखी सेवक के खोटी गति वेधाजौन, ताहि मेटि आपदेत नीकी लिखनाई है ॥ आठो याम रचै

और भजै दुख दोषन को, भनत महेश होत दासपै सहाई है। सगुण रूप धारि कीर्ति शम्भु की बढ़ाइबेको, जक्त में प्रसिद्ध भई षण्मुखकी माई है॥ ७५॥

॥ कवित्त॥

खड्गचर्म पाशदण्ड मुण्ड शूल घण्टा हाथ, तासु शब्द घोर देव शत्रु दुख दाईहै। कोटिन पतंगनको रोमरोम तेजजाके, तीन नैन चाप कर बसत सदाई है॥ माई सुत आपनेके चित्त में सुहात जौन, भनत महेश देत तासों मिल वाई है॥ ध्यात्रौ कात्यायनी को ध्यानबीच मन लगाय, छाई तीनलोक में जाकी प्रभुताई है॥ ७६॥

॥ कवित्त॥

जाके पद पंकज सुर सिद्ध सदा ध्यावें हैं, थापैं करि ध्यान चित्त आपने विमल में। जागत अखण्ड जोति जाकी सब लोकन में,

सूक्ष्मरूप वाली तीन व्यापी जल थल में ॥ जाको नाम लीन्हे पाप ताप दुरात इमि, भनत महेश जिमि सिंह मृग दलमें । काल रात्रि नाम याको कालहूकी काल सोई, काटै जम जाल औनिहाल करै पलमें ॥ ७७ ॥

॥ कवित्त ॥

सूरज सुरेश शेष सुगिरि सुमेरु शसि, सम्भू सनकादि सिद्ध साधक समाधिरत । सात सिन्धु सात द्वीप श्रीपति समीरसन्त स्वमन समेटि जेते स्ववश सदा करत ॥ सेवत समस्त समरत्थ तुवपाद पद्म, पावत प्रसाद परमारथ नहा परत । मात महागौरी लघुबालक महेश निज, क्यों न अपनाय मेटि दालिद समादरत ॥ ७८ ॥

॥ कवित्त ॥

अरिको नसावै सूख सम्पति वसावै ग्रह दुखको खसावै औ रसावै रस रागमें । पूरब

की करणी कूशैली करि छारछार आप लिखि देत शुभ सेवकके भाग में ॥ जाविधि प्रचण्ड तेज तेरे रोमरोम प्रति, तैसो ना महेश लख्यो रुद्र मै न आग में । माता सिद्धि दाता जन कारज को सिद्ध करो, तुहीं सिद्धि देत सदा दान जाप जाग में ॥ ७९ ॥

॥ सवैया ॥

जो सुमिरै इनको चित दै, तेहि के दुख दालिद पास न आवत । अन्त तरै भव सागर को नर, भोगि यहाँ सुख जो मन भावत ॥ दुर्लभ जो पद योगिन को, जगदम्ब महेश तहां पहुँचावत । आठहूं याम निशंक रहै, भय भीम नहीं कबहूं ढिग आवत ॥ ८ ॥

॥ कवित्त ॥

अम्बु के बबूला जिमि अंबु में विलाय जात, तिमि एक दिन सठ आपहू बिलाय है। कहत जो मेरो तात मात भ्रात नारि सुत, मेरो

धन धाम ग्राम काम सो न आय है ॥ पंच भूत पंची कृत पोषत शरीर जौन, तौनहूं महेश पंच तत्व में मिलाय है। तासों त्यागि भ्रम भज भव के सरोजपद, माया में भुलाय किमि कारज नसाय है ॥ ८१ ॥

॥ कवित्त ॥

एरे मन्दमति गति आपनी बिसारि किमि, कुगति में जाइबे को मन हुलसात है। नारिन के हेतु बनि नागर छबीलो पुनि, द्वार द्वार गणिकन केरे अठिलात है ॥ जाके हित जन्म दियो जग में महेश विधि, ताहि बिसराय तू नेकहू ना लजात है। सपनेहूँ भावेनाहि धर्म-की कहानी तोहि, पर अपवाद सुनि अतिहर-खात है ॥ ८२ ॥

॥ कवित्त ॥

सोहै सीस गंग चन्द्र भाल तीजे नैन ज्वाल, मुंडन की माल व्याल कुंडल सम्हारे है ॥ अंग

भस्म भूषित मृगेन्द्र चर्म परिधान, किये विष-पान बाम ओर गौरि धारे है ॥ जाके रोम रोम को अखण्ड चण्ड तेज लखि, कहत महेश कोटि मारतण्ड हारे हैं ॥ सोई अवधूत भूत नाथ भव भय हर, जन सुख कर स्वामी सुभग हमारे हैं ॥ ८३ ॥

॥ कवित्त ॥

सब के व्है ईशपैं रमा मैं निज भस्म अङ्ग, गौरी पति बनि के जरायो काम आप है। जाके धन पति नित जोरे कर ठाढे रहैं, ताके गजखाल वस्त्र भूषण सुसाँप है ॥ नाम के लियेसे धाम पावत महेश ध्रुव, दुख दोष दालिद दुरत दूरि आप हैं। ऐसे अवधूत भूत नाथ निज जन लखि, देत सुख सम्पति दलत पाप ताप हैं ॥ ८४ ॥

॥ कवित्त ॥

चन्द्रभाल सुविशाल माल गले मुंडन की,

झुंड झुंड मंडित प्रचंड प्रेत दल है ॥ व्याल कर काल कचलाल कटि किंकिणी हैं, नचत क्वणित रव लहत अखिल हैं ॥ हांस सुविलास युत करत महेश सुत, सुनत गगन महिं कंपत अचल है ॥ प्रवल अनल जल विकल सुतेज लखि सकल दलन खल भैरव कुशल हैं ॥८५॥

॥ कवित्त ॥

वेद सु पुराण शास्त्र छन्द रसरूप तूही, यंत्र मंत्र तंत्र बुद्धि जोतिष रमल है ॥ सुर नर मुनि वर लखत सुध्यान धर, तूही मातु संतन की दूरी कर मल हैं ॥ व्यापित सकल जल थल सु अनल तोसौं, तुहीतो महेश जूकी हृदय कमल है ॥ तूही जन रंजनि विभंजनी कलुष पुंज, खल दल गंजनि निरंजनि विमल हैं ८६

आपहि से भाग्यो चहैं रोग दोष दुःख मेर, मानो मात मोपै कर आपनो धरोसो है । संताप औ पाप भय भीत व्है दुरानै अब, देखो

भ्रम जाल जात त्याग के डरोसो है ॥ संपति अनेक भांति पैहों मैं प्रसाद तेरे, भनत महेश मोहि धीरज परोसो है ॥ सुनिहौजरूर टेरमेरी जगदम्ब अम्ब, करिहौ बिलम्ब नाहिं जिय मैं भरोसो है ॥ ८७ ॥

दिग्गज भहराने कोल कूरम कहराने, शेष लहराने महि डोलि उठी शंका में । सविता थर्राने दिगपालहू डराने सब असुर पराने चरण चापै चमंका में ॥ भनत महेश बीर बांकुरे हराने मन सूरहू बराने हिय हारि के हुमंका में ॥ काँपि उठो मेरु हले सातहू समुद्र साँच, जननी बाराही जू के एकही फलंका में ॥ ८८ ॥

कुण्डल ललित अति चलित नयन युग, भृगुटि कुटिल गज गमन लजायोरी ॥ विविध वसन करसारग सुस्यामतनु, मणिन जटित सिर मुकुट सुहायो री ॥ मंद मुसुकान अध-

रान दुति दंतन की, विगत मयंक मुख चन्द्र छबि छायोरी ॥ ऐसे एक बालक अचानक जनकद्वार, कठिन महेश जू को धनुष उठायो री ॥ ८६ ॥

विविध विलासन के हासन हुलासन के, शोभित सुवासन के दासन की लाजके । जन दुख नासन के बैरि वृन्द त्रासन के, निगम प्रकाशन के भासन सुकाज के ॥ ध्रुव शुभ आसन के तुल्य पाक शासन के, गुरु गुण शासन के रासन सुराज के ॥ सुरुच सुवासित महेश अंक आसित ये, चरण करण ढुंढिराज महँराज के ॥ ९० ॥

पावत पियूष नाहीं ऊख की बखान कहा, तुव नीर सम सुरधेनु को न छीर है ॥ भजत महेश तेहिं तजत न पल एक, तेरेई प्रभाव जात जहर की पीर है ॥ पाप के पहाड़ काटि काटि आठ बाट, करि भूषण भुजंग देत हरित्वक चीर है॥

अंग राग भूति बैल वाहन त्रिशूल शसि; जो सुधीर आय तीर त्यागत शरीर है ॥ ६१ ॥

॥ सवैया ॥

सब आश लतानित नाम जपे, नव फूल मनोरथ के वरसैं ॥ यम किंकर ओरि न देख सकै, न महेश भली रज जे परसैं ॥ लखि तुंग तरंग नि अँगन सौं, कढ़ि पाप भुजंग महा भर सैं ॥ तव अम्बु रती कहु गंग पिये, कृत भंग अनंग हिये दरसैं ॥ ६२ ॥

अथ पञ्चरत्नस्तोत्रम् प्रारम्भः ।

निजजना न्नियुनक्ति निजान्तिके । किल विधूय मला न्बहुजन्मनाम् ॥ इहविधाय सुखा नखिलान्शिवे । प्रकृतिरेवहि ते सहिते दृशी ॥ १ ॥ अतिभरा धरणी दितिजैः कृता । लघु तथाविहिताशु तदा तदा ॥ अहह किन्न करोषि कृपा म्मयि । भवप्रिये भववृन्द विवन्दिते ॥ २ ॥ यदि मनः कुटिलं समलं खलं । गुण-

विहीन मिमामनुमातिहि ॥ कथ मनेक विवेक विरोधिनः । तव समीप ममापरमा ययुः ॥ ३ ॥ किमु नभे गणन म्परिकल्प्यते । कलि कलङ्कित कुत्सित सूनुषु ॥ इति विचार्य्य समाकुलतामधः । परिनयन् गिरिनन्दनि नन्द माम् ॥ ४ ॥ अथ न चान्य वरम्परियाच्यते । वरद पत्नि सपत्न विपत्ति दे ॥ चरणपङ्कजरेणु सुगन्धिभाग् । अयि भवानि भवामि भवेभवे ॥ ५ ॥ देवीसहाय सुतसूनु महेशशर्मा । धर्माऽभिहीन परिपीन मलीन कर्मा ॥ तेनेदमल्पमतिना स्तव मीशकान्ते । कान्तानने र्पितमिया दुपहार तान्ते ॥ ६ ॥

अथ बृहस्पतिकृतशिवताण्डवस्तोत्रम् ।

आंगिरसउवाच ।

जयशङ्करशान्तशशाङ्करुचे, रुचिरार्थदसर्वद-सर्वशुचे ॥ शुचिदत्तगृहीततमोपहृते, हृदिभक्तजनोद्धततापतते ॥ १ ॥ ततसर्वहृदंम्बरवरदनते, नत

वृजिनमहावनदाहकृते ॥ कृत विविधचरित्रतनो
सुतनो, तनविशिख विशोषणधैर्यनिधे ॥ २ ॥
निधनादिविवर्जितकृतनतिकृत, कृतिविविध
मनोरथपन्नगभृत् ॥ नगभर्तृसुतार्पितवामवपुः,
स्ववपुः परिपूरित सर्वजगत् ॥ ३ ॥ त्रिजगन्म
यरूपविरूपसुदृक् दृगुदंचनकुञ्चन कतहुतभुक्
भवभूत पते प्रमथैकपते, पतितेष्वपिदत्तकरप्रसृते
॥ ४ ॥ प्रसृताखिलभूतलसंवरण, प्रणवध्वनि
सौधसुधांशुधर ॥ धरराजकुमारिकयापरया, प-
रितः परितुष्टनतोस्मिशिव ॥ ५ ॥ शिव देव-
गिरीश महेशविभो विभवप्रदगिरीश शिवेशमृड।
मृडयोडुपतिध्रजगत्त्रितयं, कृतयंत्रणभक्तिविघा-
तकृताम् ॥ ६ ॥ नकृता तत एष विभेमिहर,
प्रहराशु ममोघ ममो घमते ॥ नमतो तरमन्नद्-
वैमिशिवं शिव पादनतेः प्रणतोस्मिततः ॥७ ॥
-विततेऽत्र जगत्यखिलेऽघहरे, हरतोषण मेव परं
गुणवत् ॥ गुणहीन महीनमहावलयं प्रलयांतक

मीशननतोस्मिनतः ॥ ८ ॥ इतिस्तुत्वा महादेवं विररामाङ्गिरः सुतः ॥ व्यतरच्च महेशानः स्तुत्यातुष्टोवरान्बहून् ॥ ६ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ बृहतातपसानेन, बृहतांपतिरेध्य हो । नाम्ना बृहस्पतिरिति, ग्रहेष्वर्च्योभवद्विज ॥ १० ॥ अस्माल्लिङ्गार्चनान्नित्यं, जीवभूतो सिमेयतः ॥ अतो जीवइति ख्यातिं त्रिपुलोकेषुयास्यसि ॥ ११ ॥ वाचाप्रपंचैश्चतुरै, र्निप्र पंचोयतः स्तुतः ॥ अतो वाचा प्रपंचस्य पनिर्वाचस्पतिर्भव ॥ १२ ॥ अस्य स्तोत्रस्य पठना, दपि वागुदीयाच्चयम् ॥ तस्य स्यात्संस्कृतावाणी त्रिभिर्वर्षैं स्त्रिकालतः ॥ १३ ॥ समुत्पन्नेमहाकार्ये, नसबुद्ध्याप्रहीयते । यः पठिष्यत्ययंस्तोत्रं, वायव्याख्यंदिनेदिने ॥ १४ ॥ अस्य स्तोत्रस्य पठना, न्नियतम् मम सन्निधौ ॥ न दुर्वृत्तौ प्रवृत्तिः स्या दविवेकमतां नृणाम् ॥ १५ ॥ अयं स्तोत्रं पठन् जन्तु, र्जातुपीडां ग्रहोद्भवाम् ॥ नप्रा

ष्यति ततोऽप्य, मिदंस्तोत्रं ममाग्रतः ॥ १६ ॥ नित्यं प्रातः समुत्थाय, यः पठिष्यति मानवः ॥ इमां स्तुतिं हरिष्येऽहं, तस्य बाधा सुदारुणा ॥ १७ ॥ त्वत्प्रतिष्ठितलिङ्गस्य पूजांकृत्वा प्रयत्नतः ॥ इमांस्तुतिमधीयानो मनोवांछामवाप्स्यति ॥ १८ ॥ इति समाप्तः ॥

॥ अथ गौरीशाष्टकं प्रारम्भः ॥

भज गौरीशं, भजगौरीशं गौरीशं भज मन्दमते

जड़भव दुस्तर जलधि सुतरणं, ध्येयं चित्ते शिव हर चरणं ॥ अन्योपायं नहि नहि सत्यं, गेयं शंकर शंकरनित्यम् ॥ भज० ॥ १ ॥ दारापत्यं क्षत्रम्वित्त, न्देहङ्गेहंसर्व मनित्यं ॥ इति परिभावय सर्वासारं, गर्भ विकृत्यास्वप्नविचारम् ॥ भज० ॥ २ ॥ मल वैचित्ये पुनरावृत्तिः पुनरपि जननी जठरोत्पत्तिः ॥ पुनरप्याशा कुलितं जठरं किं नहि मुञ्चसि कथमेचित्तम् ॥ भज० ॥ ३ ॥ माया कल्पित मैन्द्रं

जालं, नहि तत्सत्यं दृष्टि विकारं ॥ ज्ञाते तत्वे सर्वमसारं, मा कुरु मा कुरु विषय विचारम् ॥ भज० ॥ ४ ॥ रज्जौ सर्प भ्रमणारोप, स्तद्वद्ब्रह्मणिजगदारोपः ॥ मिथ्या मायामोह विचारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥ भज० ॥ ५ ॥ अध्वर कोटी गंगा गमनं, कुरुते योगं चेन्द्रियद मनम् ॥ ज्ञान विहीने सर्व मतेन नभवतिमुक्तिर्जन्म शतेन ॥ भज० ॥ ६ ॥ सोहं हंसो ब्रह्मै वाहं, शुद्धानंदस्तत्व परोहं ॥ अद्वैतोहं संग विहीने, चेन्द्रिय आत्मनि निखिलेलीने ॥भज० ॥ ७ ॥ शंकर किंकर माकुरुचिन्ता, चिन्तामणिना विरचित मेतत् ॥ यः सद्भक्त्या पठतिहि नित्यं,ब्रह्मणि लीनो भवतिहि सत्यम् ॥भज०॥८॥

इति श्रीशंकराचार्यविरचितं गौरीशाष्टकम् ।

शिवगीतम् अर्थात् संस्कृत शिवजी की गज़ल ।

शिव पाहिमा मनिशं शरण्य तवा ङ्घ्रिमूल

बलम् । भववारिधौ पतितम्प्रदर्शय पादपोतम-
लम् ॥ १ ॥ जगदीश जागरितञ्जग त्कुरुकौ
शलेसततम् ॥ शतधाविभिन्न हृशा ममाह मि-
तिभ्रमङ्गमितम् ॥ २ ॥ तव मायया जितया
जितं जन मीश लुप्त विदम् ॥ सुतदारदेह
निवास वित्त सुहृद्विषक्तहृदम् ॥ भवयावदेव-
तवाङ्घ्रिचिन्तनतो जगद्विमुखम् नहितावदस्ति
शिवंशतन्तुयजीतनाथमखम् ॥ ४ ॥ महिपार
मम्बुज भूपभृत्यमरानचापुरलम् ॥ यदनुस्मृत
म्प्रगतंश्रु तं न्तवनाथहन्तिमलम् ॥ ५ ॥ हरहृ
त्सरोजनिविष्ट मङ्घ्रिसरोज मिष्टद्रिशम् ॥ तव-
चिन्तया चिर मातनोति शिवंशिवेशभृशम् ॥६॥
जप योगयज्ञरताय जन्तिजनानयन्ति सुखम् ॥
भवदीय भावनया विना शिव शुद्धयाधिम
खम् ॥ ७ ॥ जगदुद्भव स्थित संयमायधृतं वपु-
स्त्रितयम् ॥ त्वयकाज विष्णु महेशनाम कृता-
नताहि वयम् ॥ ८ ॥ जनपाल माल निशा

-धिपाल विशाल दृक्त्रयशम् ॥ जगतोविधेहि दयानिधे हित कृन्निधेहि दृशम् ॥ ९ ॥ जयदेवशूल कराद्रिनाथ कपालमाल दृढम् ॥ गिरिजाधवात्त फणीन्द्रहार पुनीहिमामघृणम् ॥ ॥ १० ॥ अघवानसाविति यत्त्वयासमुपेक्षितोहमहम् ॥ हरनामतेकिमुसार्थकन्नमहेशपुण्यवहम् ॥ ११ ॥ यदि मा तमोगुणिनङ्गिरीश नुमन्यसेसमलम् ॥ किमुनागहारकपाल माधरमित्विदं सकलम् ॥ १२ ॥ यदि मन्यसे प्रकृतेर्गुणैरदतादयं सुकृतम् ॥ तदनुप्रवेशनमेविभोकिमुदेवनाभिकृतम् ॥ १३ ॥ वहवोघवन्तइतो विभोस्त्वभतारिता भवता ॥ किमुपेक्षितोहमघीतवास्मियथास्त्वकानवता ॥१४॥ क्वनुयामिकिङ्करवाणि हायनवाङ्घ्रि वारिभवम् ॥ अभिसृत्ययत्तवयन्तिधामशरण्य मुक्तजवम् ॥ १५ ॥ शिवनान्यमत्रभवन्तमीश विनात्मनोजनकम् ॥ अवलोकयामि जनाश्रयंशरणम्व्रजामितुकम् ॥

॥ १६ ॥ पितुरीशपुत्रमिवात्मजंवृणुमामतोज-नक ॥ जगतीत्थमेवनिरीक्ष्यतेयदयञ्जनो-गमकः ॥ १७ ॥ शरणम्व्रजामिशरण्यमीशभव-न्तमिष्टद्रिशम् ॥ परिपाहिमामघिनंविशस्यमना-हसेतिभृशम् ॥ १८ ॥ भवबन्धनच्छिदमङ्घ्रि-वारिज मानतो भवते ॥ शिरसासुरादिभिरीडितं सकलेशभक्तपते ॥ १९ ॥ करुणेक्षणेन निरी-क्षणीय उमाधवा हमघी ॥ नहिविस्मरस्वमहे-शमा मखिलाघहन्ननघी ॥ २० निरुपद्रवायशि-वायशान्ति करायशन्ददते ॥ अगुणाय सन्धृ-तविग्रहाय नमोस्तुयज्ञकृते ॥ २१ ॥ रविवंश-जक्ष्माधीश राज्य पुरप्रसाद इदम् ॥ व्यतनो-दघघ्नमभीष्टदं शिव रम्य सद्म पदम् ॥ २२ ॥

इति

॥ श्रीदेवीसहायवियोगजशोकानन्ददर्पणम् ॥

विघ्नान्तकं विमलबुद्धिप्रदं गणेशम्, भृ-ङ्गावली विलसितेन्दुरुवाहनञ्च । बालेन्दु

शेखर चतुर्भुज मीप्सिताप्त्यै, नागानन ङ्गिरि सुता तनयं स्मरामि ॥ वेदाब्धिरत्न विधुसम्मित विक्रमाब्दे, तार्तीयिकायुत फाल्गुन शुक्लपक्षे ॥ वीरेश्वरान्तिक मवाप्य महास्म शाने, देवीसहाय इतईश पुरं हरंस्मरन् ॥ १ ॥ ब्रह्माण्डमार्गगतप्राणममुंयथाजनाः, वाराणसी मधिगताः शुशुचुः सुवृत्तमः ॥ श्रीविश्वनाथ पदपद्म परागषट्पदाः, वेदान्तगाखलुसमासतया तथाब्रुवे ॥ २ ॥ हा सर्व सत्वसमदृष्टि प्रसन्नमूर्त्ते हा धर्ममूल भवबन्धन भेदशूल ॥ हा शम्भुभक्ति शुचिसोमलताश्रयत्वं, देवीसहाय प्रविहाय गतः कथन्नः ॥ ३ ॥ हेविश्वनाथ करुणाकर शूलपाणे देवीसहाय इह सिंहसमो वनेन ॥ वाव्रज्यमान पुरुष द्विपराज तोऽमी, स्थास्यन्ति धर्मतरवः कथमद्य हाहा ॥ ४ ॥ देवीसहायप्रिय भक्तिलया ऽवलेयम्, भक्तिस्तवाद्य रमणी-तरुणीव दीना ॥ कंयास्यतीह शरणं पुरुष-

म्वरेण्यं, हाहन्तहन्त गिरिजेश महेश शम्भो ॥ ५ ॥ शम्भ्वङ्घ्रि पद्य रसिक भ्रमराभिलीना, भोभोबुधाः कमलिनीव महेश भक्तिः ॥ नोचेद्विकाशमयतान्तु किमत्रचित्रम्, देवीसहाय सुरविहिंगतोऽधुनाहा ॥ ६ ॥ तच्छिष्यवर्गसुत सुनुसुताजनास्ते, संस्थाप्ययानमगन्मणिकर्णिकान्तम्। इत्थम्विलप्यशिवदंशिवविश्वनाथं प्रक्रम्यचात्र कथयामियथातथाहम् ॥ ७ ॥ इतिश्रीमहेशदत्तवाजपेयिविरचिते श्रीदेवीसहायवियोगजशोकाऽनंददर्पणम् समाप्तम ॥

॥ विशेष द्रष्टव्य ॥

सर्व सज्जनों को विदित होकि इसी पुस्तक को पहिले देवीसहायजीने भैरोनाथ जोशी द्वारा छपवाया था परन्तु उसने अपनी बुद्धिमत्ता से सोधा औ शिव चरित्र प्रकाश नाम रक्खा औ उनसे कुछ भी सलाह न लिया इस कारण ग्रंथ अशुद्ध हो गया उसे देख बाजपेईजी अत्यन्त रुष्ट भए और उससे कहा कि तुमने हजार कापी छपवाया है उसे बेच लेना और फिर कभी मत छपवाना तदुपरान्त हमको पुस्तक छपवाने की आज्ञा दी तब हमने छपवाय के उनको दिखाया उसे देख अत्यन्त प्रसन्न भये और कहा कि अब तुम्ही इसे छपवाया करना और रजिस्टरी भी हमारे नाम से करवाय दिया तब से हमी छपाते और बेचते हैं और किसी को छपवाने का अधिकार नहीं है।

अतएव कोई महाशय इस ग्रन्थ को किसी प्रकार उलट पुलट करके छपवाने का उद्योग कदापि न करैं क्योंकि नफा के एवज में नुक्सान न उठाना पड़े इतिशम्।

सदनुगृहीत शा. प्र. पु.	विज्ञापक— पण्डित मोतीराम औदीच्य।

श्रीगणेशायनमः ।

शैवमनोरंजनी

तृतीय भाग ।

॥ कवित्त गणेशजी का ॥

सिद्धिके सदन गजवदन विशाल तन, दरश कियेतें बेगि हरत कलेश को । अरुण पराग को ललाटमों तिलक सोहै, बुद्धिके निधान रूप तेज ज्यों दिनेश को ॥ मंगल करण भव हरण शरणगये, उदित प्रभाव जाको विदित त्रैलोक को । जेते सुभ काज तामे पूजिये प्रथम ताहि, ऐसो जग वन्दन सुनन्दन महेश को १॥

॥ भैरवी खेमटा ॥

नित वसो हियमें मेरे गुरुके चरन, जामे सदा शिव दे दरशन ॥ टेक ॥ गुरुकी कृपा कटाक्ष कियेते दिन दिन लागी बुधि सुधरन । गुरु महराज की सेवा कीन्हे सुर नर मुनि सब

होय परसन ॥ गुरु पदमे अनुराग करो मन तब शिव सुनि है तेरी वचन । देवीसहाय कह्यो गुरु मोसों निस दिन शिव शिव का सुमिरन ॥ २ ॥

॥ अर्जी ॥

हे शंकर करुणा निधान शिव सुनिये अरज हमारी रे । बार बार कर जोर जोर हम आरत होय पुकारीरे ॥ भवसागर में जन्मपायके भयो मोहि दुख भारीरे । करिये कृपा जानि निज सेवक लीजे वेगि उबारीरे ॥ गिरिजा नाथ हरो दुख मेरो आयो शरण तिहारी रे ॥ विपत विदारण नाम तुम्हारो बेद पुराण पुकारीरे । देवीसहाय दास अपने को दरश देहु त्रिपुरारीरे । आनद वन में वेगि बुलावो चितवो पलक उधारीर॥३॥

॥ लावनी आत्मा वीरेश्वर जीकी ॥

हे आत्मा वीरेश्वर महँराज खबर ल्यो मेरी । दुख हरो उमापति नाथ शरण मैं तेरी ॥ मैं

दोन दुखी हौं नाथ विपत मे घेरी । चितदे चितवो महराज कमल मुख फेरी ॥ तुम दीनन की सुधि लेत करत ना देरी । दुख० ॥ १ ॥ मेरी वड़ी लालसा तुम्हरे दरसन की है । सदा रहों तुव पास यहै बासना मन की है ॥ दिन रैन चैन नहिं परत बिना तुम बिन है । क्या कहौं तुम्हारा हिया सदा शिव धन है ॥ मोहि जान अजान नाथ करत शिव देरी । दुख० ॥ २ ॥ ब्रह्मा अरु विष्णु गणेश शेष सब ध्यावैं ॥ तुम्हरे पद पंकज पूजि सकल सुख पावैं ॥ सब वेद पुराण पुकार प्रगट जस गावैं । भक्तन हित आय महेश कलेश नसावैं ॥ अब काहे लगावत बार हमारी वेरा ॥ दुख० ॥ ३ ॥ जे भक्ति भाव उर आन सुयश यह गावैं । ते परम अभय पद पाय हिये हरखावैं ॥ जे गुरु चरणन चित लाय सुध्यान लगावैं । तब होय प्रसन्न शिव आप में आप लखावैं ॥

देवीसहाय यह अरज दरस हित टेरी ॥ दुख हरो० ॥ ४ ॥

॥ भैरवी ॥

अब मन बसी हमारे काशी ॥ टेक ॥ निस वासर शिव सुमिरण कीन्हे नेकन होत उदासी । असी वरुण के बीच वसतु है विश्वनाथ अविनासी ॥ अब० ॥ सुर पुर सरिस सदन सब केरे मुक्ति द्वारपर दासी । देविसहाय सुनावत शिवको तुम अंतर घट बासी ॥ अब मन० ॥ ५ ॥

॥ भैरवी ॥

प्रभु मेरे सुनो दासकी विन्ती ॥ टेक ॥ तेरे चरण कमल में निसदिन लागी रहै मेरी प्रीती । काम क्रोध मद मोह मिटावो हरो सकल अघ कीती ॥ प्रभु० ॥ दीनबंधु यह नाम तिहारो श्रुति पुराण कह नीती । देविसहाय कहै निस वासर शिव सुमिरण की रीती ॥ प्रभु मेरे० ॥६॥

॥ भैरवी ॥

शिवजी सहाय करो अब मेरो ॥ टेक ॥ शोक सिन्धुने आयं दयानिध कियो चहुँ दिस घेरो । अपनो दास जानिये मोकों दया दृष्टि करि हेरो ॥ शिवजी० ॥ आयो नाथ शरण में तेरे दीन दुखी है टेरो । देवीसहाय बसे आनँद वन दरश करे नित तेरो ॥ शिवजी० ॥ ७ ॥

॥ भैरवी ॥

शिव शंकर जी को जो सुमिरैं । भवसागर से तेइ पार उतरैं ॥ टेक ॥ जिनके शिव भक्ति नही उरमे दुख देखि देखि नित वो कहरैं । तनमे मनमे जिनके वो बसें सुख संपत पाय करैं लहरैं ॥ शिव० ॥ गुरु देव दया करि जांहि लखैं तिनको गौरीश दिखाइ परैं । देवीसहाय काशीमे आय तन त्याग करैं जनमें न मरैं ॥ शिव० ॥ ८ ॥

॥ भैरवी ॥

हमारे प्रभु ऐसे गरीब निवाज ॥ टेक ॥ दीनन की सुधि वेगि लेत हैं, करत सफल सब काज । संकट हरत दासको अपने, राखत जनकी लाज ॥ हमारे० ॥ भक्तिभाव अनु-राग देत है दानिन के सिरताज। देवि सहाय कहत कर जोरे दरस देउ महराज ॥ हमारे० ॥६॥

भैरवी खेमटा ॥

भोले बाबा हमारे गोरे बरन, ताहीसो मोरी लागी लगन । जाके चरन कमल की सेवा ब्रह्मादिक सब आये करन । बाम अंग गिरजा महरानी सोई मेरे मन को कियो है हरन ॥ भक्ति भाव देहैं प्रभु मोकों याही ते आयो सांब सरन । देवीसहाय कह्यो गुरु मोसो शिव शंकर को ध्यान धरन ॥ १० ॥

॥ गजल ॥

लगालो चरण अपने में सदाशिव सांब तुम

मुझको। मैं पाउं भक्ति वर अब तो दरस देनाजी तुम मुझको ॥ प्रेमप्रीतकी डोरी बहुत दिनसे लगीमोरी। जरा अबतो दया करकें निहारो नाथ तुम मुझको ॥ आशा तजी सकलकेरी भयो मैं अब शरण तेरी। भरोसा आपहीका है सम्हारो नाथ तुम मुझको ॥ कामक्रोधकी ढेरी हियेमे आनकरघेरी। अपार अपनी मायासे उबारो नाथ तुममुझको ॥ हरो भ्रम जालका फाँसा करो हियमें मेरे वासा। देवीसहाय दरश दीजे उमापति नाथ तुम मुझको ॥ लगालो० ॥ ११ ॥

॥ प्रभाती ॥

राखिये महँराज लाज आनदवन बिहारी, दयादृष्टि से हरो सकल अघओघ भारी ॥ टेक ॥ वंदत चरणारबृन्द जोहत मुखारबृन्द, कमलनैन मेरीओर देखिये उघारी। राखिये० ॥ मनमे बसजाहु मेरे लागुँ मैं चर्ण तेरे, प्रेममें दिखावो नाथ आस है हमारी ॥ राखिये० ॥ भक्तिभाव

दीजिये वेगिकृपा कीजिये, अरजि सुनिलीजिये शंभुजटाधारी ॥ राखिये० ॥ शरणमें बोलाय-लीजै दरश दिखाय दीजै, देविको सहाय मेरे शंकर त्रिपुरारी ॥ राखिये० ॥ १२ ॥

ठुमरी खम्माच ॥

सदाशिव चरन कमल रति मान, तुमारा भला करैं भगवान ॥ जे मुनिवर पूर कहि सम्हारैं करहि सदा तुव ध्यान । तिनके बिमल बिबेक होत उर मिटै मोह अज्ञान ॥ नेम प्रेम शिव हेत करत जे तिनकी कीर्ति बखान । अन्त काल प्रभु लोक जायके पावत पद निर्वान ॥ देवीसहाय उमापति को जस बेदन कीन्ह बखान । ताते जगत पवित्र भयो है ऐसे शंभु सुजान ॥ १३ ॥

॥ श्रीगुरुदेवकी लावनी ॥

श्रीगुरुचरण कमलमे निशदिन मन को खूब लगाये हैं । उन्हीको भक्ति, मिली है शिवकी

वो शिवभक्त कहाये हैं ॥ सेवा पूजा गुरुकी कर के उर आनन्द बढाये हैं । कृपानीर से, निरमल हियकर कलिमल धोय बहाये हैं ॥ भौसागरसे पारजानको नामशिवाशिव पाये हैं । उसीका सुमिरण करते निसदिन गुरूमहराज बताये-हैं ॥ उन्हीको० ॥ १ ॥ वेद पुराण गुरूकी महिमा जानत सोई गये हैं । पापीके मनमें, नहिभावै पुकार पुकार सुनाये हैं ॥ बड़े भाग्यसे गुरूकीसेवा जोजनसे बनिआये हैं । उन्हीसे-राजी, है शंकर उनहीके मनभाये हैं ॥ जिन-की कृपाकटाक्ष कियेसे शंभुजी अपनाये हैं । ऐसे गुरूके चर्ण, कमलमें निसदिन शीश नवायेहैं ॥ गुरु शिवमें कछु भेद नहीं है जिन अस बुद्धि बनाये हैं । उन्हीको० ॥ २ ॥ उनके गुण कहांलगि बरणो बेदहु पार नहि पाये हैं । शेष गणेश, औ नारद शारद महिमा देखि लजा-ये हैं ॥ मन वाणीको गम्य जहाँ नहि ब्रह्मा-

विष्णु थकाये हैं । मो पामरकी, कौन चलावे निज मनको समुझाये हैं ॥ कृपा करके गुरुदेव हमारे शिवके भजन सिखाये हैं । निसदिन मगन रहों मैं उसमें भौबंधन छुटवाये हैं ॥ अपने संग राखिके निसदिन मनका भरम नसाये हैं ॥ उन्हीको० ॥ ३ ॥ गुरुमें प्रीत नहीं है जिनकी वृथा वो जगमें जाये हैं । त्रिषै वासना मैं, वो फसके निसदिन पाप कमाये हैं ॥ परनिंदा पर धन परदारा इनहीं संग लुभाये हैं । जिनके खातिर, जगत में आये उनहीको बिसराये हैं ॥ जमदूतन की मारखायके फिर फिर वो पछिताये हैं । जन्म मरण दुख, पायपायके बहुतै कष्ट उठाये हैं ॥ देवीसहाय अपने हियमें शिवको स्वरूप बसाये हैं ॥ उन्हीं को भक्ति० ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ लावनी आत्मा वीरेश्वरजीकी ॥

आत्मा वीरेश्वर के दरशन जो नेम प्रेमसे करते हैं । कृपाकटाक्षसे, शिवशंकरजी उनके

दुखको हरते ह ॥ प्रेमप्रीतसे पूजा करके भव सागरसे तरते हैं । जमराजा तो, आपी उनसे निसदिन डरते रहते हैं । नाम सुने से कोटिन पोतक जिनके भयसे जरते हैं । ध्यान कियेसे, आपी घटमें भक्तनको लख परते हैं ॥ पूरण-भक्त वही है जिनको पल भर नहीं बिसरते हैं। कृपा० ॥ १ ॥ उनकी सेवा उन्ही को मिलती गुरुपदको जो ध्याते हैं। परनिन्दा परधन परदारा इनको खूब बचाते हैं ॥ गुरूकी कृपा नीरसे अपने मनका मैल छुडाते हैं । प्रेम रंगमें वो भलके नित आनंद हृदय बढाते हैं॥ भक्तिभाव अनुराग रंगमें मनको खूब रँगाते हैं शिवके चरण कमल बिन देखे औरन कछू सुहाते हैं ॥ उन की आस लगाये निसदिन जहां कहीं वो फिर ते हैं ॥ कृपा० ॥२॥ कलियुगमें तुमरी महिमा को सब कोई नहिं जानेंगे । जिनके ऊपर, कृपा तुम्हारी उनही तो पहिचानेंगे ॥ बड़े भाग्य हैं

उनके जो जन सेवा तुम्हरी पावेंगे । तुम्हरे गुणको, प्रेम प्रीतसे निसदिन जो नर गावेंगे॥ तुम्हरे चरण कमल में अपने मनको वास करावेंगे । दीनदयाल दयाकर उनको बेगहि दरस दिखावेंगे ॥ गुरु पदमें अनुराग बढाये निसदिन जोजन रहते हैं । कृपा कटाक्षसे० ॥३॥ तुम्हरे ऐसे दानीशंकर सुने नहीं नहि देखे हम । ब्रह्मा विष्णु असुर सुन नर मुनि सबै बरदान दिये हो तुम ॥ तुमरे शरणमें आये हैं हम हमरो दुःख हरो अब तुम । दीननको अपनाते हो तो हमहूंको अपनावो तुम ॥ आपतो ऐसे दानीहो के हमरी बेर क्यों होतेहो सुम। हमतो आस लगा के आये सब दिन के हो दानी तुम ॥ देविसहाय महेश उमाको ध्यान हृदयमें धरते हैं । कृपाकटाक्षसे० ॥ ४ ॥ १५ ॥

लावनी ।

शिव शंकर के चरण कमलमें गुरूके बिना।

लगावे को। बार बार यह, चंचल मनको उनके बिन थिर करावै को ॥ शिवका नाम सार है कलि में भवसागर तर जावे को । नरतन पाय,उपाय यही है उनके बिनाबतावै को ॥ सकल वासना जगकी झूठी गुरुके बिना हटावे को। कामादिक ऐसे बैरिनसे उनके बिना बचावै को ॥ चिंता अगिन लगी उर अंतर गुरुके बिना बुझावे को ॥ वार बार० ॥ १ ॥ सुन्दर मूरत गौरी शंकर मेरे मन में भाये हैं । आप हमारे हियमें आके आपिसे वो समाये हैं॥ गौर अंगकी छबि नहिं भूले भस्म सर्वांग रमाये हैं। व्यालनके, भूषण की सोभा देखनको ललचाये हैं॥ जटा सीसमें पिंगल सोहै गंगधार लहराये हैं। माथे में है तिलक चंद्रमा सीतलता अतिछाये हैं ॥ नैनन की है सुन्दरताई गुरुके बिना लखावे को ॥ बार बार० ॥ २ ॥ बाम अंग में गौरि बिराजै कोमल जिनकी बानी है। सदा दया दास पर

करती दया सिंधुकी खानी है ॥ सकल जगत की कारज करतीं वोही आदि भवानी है । सुर नर मुनि, के दुःख हरण को सबकी अस्तुति मानी है ॥ बड़े बड़े अपराधिन के वो काटत नरक निसानी है । मेरी आस लगी शंकर से सो सब तुपने जानी है ॥ मेरो मन तरसत है जननी तुम बिन दुःख छुडावे को । बार बार० ॥ ३ ॥ और सकल सुरन सों बिनती मेरी यही है हर वार । सहाय करो, सब कोई मिलके सब जग सुनिये मोर पुकार॥ मनकी भटक मिटे सब मेरी हरल्यो पातक सकल विकार । दृढ विश्वास, होय उर मोरे चाहे कोइतो सकेन टार ॥ सबकी कृपा कटाक्ष किये से अपने मनमें करू विहार । गौरी शंकर, हियमें बैठे निसदिन उनको रहूं निहार ॥ देवीसहाय शिवशंकर जीसे गुरुके विना मिला-नैको । बार बार० ॥ ४ ॥ १६ ॥

—:०:—

॥ लावनी ॥

शिव शिव सुमिरै सब अघ भागे जागै उर में ब्रह्म ज्ञान। शिव की कृपा, भक्ति वर पावै प्रेम करै शंभु भगवान॥ चारो वेदने येही गायो छओ शास्त्र मिल कियो है छान। शिव शंकर के, नामकी महिमा कलियुग में कहते परधान॥ वेदव्यास पुराण बनायो सबमें यही कियो बखान। भौसागर से, पार जानको शिव सुमिरों तजि के अभिमान॥ सबके मनसे येही ठहरयो शिवके नाम लिये कल्यान। शिव की कृपा० ॥ १ ॥ नाम लिये तें कोटिन पापी वालमीक से भये ब्रह्म समान। अरे मन मूढ, चेत कर अबहूं माया में क्यों फिरे भुलान॥ जिनको ध्यान धरै जोगी जन तिनको बेगि करो पहिचान। बारबार, समुझाय कहत हो शिव की महिमा को अब जान॥ संत नाम सुधारस पीवत देखत शिवमय सकल जहान। आसा उन्को, उन्ही की रहती पावत हैं

उत्तम अस्थान ॥ शिवशिव सुमिरे बुद्धि विमल व्है मिटि जावै अंतर अज्ञान । शिवकी कृपा० ॥ २ ॥ नाम लिये से सब सुख पावे कामक्रोध भागैंलै जान । नाम लियेसे, सुर नर मुनी सब आपी से करते सनमान ॥ ध्यान किये से अपसे मन की मिटे भटक होवे बुधवान ॥ नाम रटेसे, भय भव भागे सत संगत पावै सुख खान ॥ नाम को भजन करै जो कोई वोही है भक्त चतुर सुजान । प्रेम रंग में वोही झलकै सदा करै शिव को गुणगान ॥ जिनकी लौ लगी शंकर सो नाम सुधा रस करैं वो पान ॥ शिवकी० ॥ ३ ॥ नाम भजो सब काम तजो संग तेरे कोई नहि जावेगा । वृथा संग, दुनियाँ का कर के अन्त फेर पछ-तावेगा ॥ ममता मोहमे फसि के जोतूं शिवसे नेह न लावेगा । जमराजके, जाचन से फिर तोको कौन बचावेगा ॥ गुरूकी सेवा किये

बिना भव बंधन को छुड़ावेगा। जन्म जन्म तूं, पाप कमा के नरक कुंडको पावेगा॥ देवीसहाय कहैं जिनके उर शिव सुमिरन की पड़ी है बान। शिवकी कृपा० ॥ ६ ॥ १७ ॥

॥ लावनी पारवतीजी की ॥

सुनिये गिरजा महराणी मेरी शिवके संग तुम रहती हौ। यह मेरो, दुख दारुण लखिके क्यों नहि उनसे कहती हौ॥ हम तो आसा तेरी रखते तुम हमसे क्या चहती हौ। मान बडाई, की धन विद्या किस्का दुख तुम सहती हौ॥ बड़े बड़े अपराधिन का तुम आपी पातक दहती हौ। जो कोई, तेरे शरण में आवे उस्का कर तुम गहती हौ॥ सब की टेर सुनी है तुमने मेरी क्यों नहि सुनती हौ। यह मेरो० ॥ १ ॥ बालकके अपराधको मनमें तुमको नहि रखना चहिये। संकटबेगि, मिटे यह मेरो सो तुमको करना चहिये॥ सदां ध्यान चरणों मे तेरे

हमको अन्न धरना चहिये । शरण मे ते रे, आये हैं मां तुम को दुख हरना चहिये ॥ तेरी कृपासे खोटी गति अब मेरी सब टरना चहिये । तुमरी दया. हमारे ऊपर सदा बनी रहना चहिये ॥ शंकरजी की महराणी होके जगजन नी कहलातीहो । यहमेरो०२ ॥ कोइनही सहायक मेरो तुमरे बिना हो माताजो । सकल आस, विस्वास भरोसा तेराही है माताजी ॥ तुम्ही हो शक्ति तुम्ही हो दुर्गा तुम्हीहो गिरिजा माताजी । भक्तनको, बरदान देतहो गणपत का हो माताजी ॥ बेद पुराण भनत जस तेरो शेष शारदा माताजी । दीनन को दुख दूर करत हो दयासिंधु हो माताजी ॥ सब देवनके कारज कीन्हे मुझपर देर क्यों करती हो । यह मेरो० ॥ ३ ॥ तेरी शरण में आये हैं मां तेरी आस हम रखते हैं । सुनो अब तुम हमारी विनती दोऊ कर जोरके करते हैं ॥ कल नहिं

परत रैन दिन मोंकों अतिशय दुखको सहते हैं। शंकरजीसों, बेगि कहौ मां येही तुम सो कहते हैं॥ कैसे दिन अब कटे हमारे सेवा विनां तरस्ते हैं। गौरी शंकरस्वामी मेरे दरसन उन्का चहते हैं॥ देवीसहाय कहै ऐसे में धीरज केसे धरतीहो। यह मेरो० ॥ ४ ॥ १८ ॥

॥ होरी ॥

हमतो शिवको सुमिरैंगे ॥ जन्म जन्म के पाप पुरातन नाम लियेसे जरैंगे। तब देहैं मोहि भक्ति सदा शिव, गुरुजी कृपा करैंगे॥ सकल दुःख मेरे हरैंगे। हमतो०॥ दरसन विना बहुत दिन बीते ध्यान हृदयमें धरैंगे॥ दीन दयाल उमा पति मेरे, प्रेमसे देखि परैंगे॥ द्रिगनसे छिनन टरैंगे। हमतो० ॥ शरण में आय सदा शिव तेरे चरण में धाय परैंगे। तुम से प्रीत लगी बहु मेरी; अब दिन मेरे फिरैंगे॥हमतो०॥उमा पति मोपर ढरैंगे॥ देवीसहाय

शिवो शिव सुमिरत भौसागर उतरैंगे । अंत समय तन त्यागके अपनो, शंकर रूप धरैंगे । आनद बन में बिहरैंगे ॥ हमतो० ॥ १९ ॥

॥ घांटो ॥

शिवजी से नेह लगायो हो रामा, गुरु ने बतायो ॥ शि० ॥ और कछू मोहे नाहि सोहावत गिरिजापति मन भायो हो रामा ॥ गुरुने० ॥ पूजन भजन करत निस वासर उनहीं मोहि सिखायो हो रामा ॥ गुरु० ॥ तब से प्यार कियो शिव शंकर नाम रतन धन पाया हो रामा ॥ गुरु० ॥ देवी सहाय उमापति को यश प्रेम मगन होय गायो हो हो रामा ॥ गुरु० ॥ २० ॥

॥ घांटो ॥

अब मोर लगल जियरवा होरामा, शिवके चरणवा ॥ अ० ॥ गौरीपति को नाम सुधारस पीवत आठो पहरवा होरामा ॥ शि० ॥ उनही

के पदपंकज पूजे भाजत सकल बिकरवा हो रामा ॥ शि० ॥ ऐसे सांब सदाशिव मेरे जग हित पिए जहरवा होरामा ॥ शि० ॥ देवी सहाय दास अपने को हिय में करत बिहरवा होरामा ॥ शि० ॥ २१ ॥

॥ घांटो ॥

सदा शिव हमसे लगाय गये रामा । अपनी सनेहिया । गौरी शंकर मूरति सुंदर मन में हमरे समाय गये रामा । अपनी० ॥ गंगाधर के चरण की शोभा देखत नैना लोभाय गये रामा । अपनी० ॥ उनहीको नाम सुधारस मोकों गुरु महराज चिखाय गये रामा । अपनी० । देवीसहाय भजो शिवजीको मिलिजै हैं समुझाय गये रामा ॥ अपनी० ॥ २२ ॥

॥ घांटो ॥

शिवजी को नमवां रामा । मोहें अधिक सोहाय, २ मोरे रामारे ॥ शिव० ॥ जन्म जन्म

के पातक तनके, जपतें नसिजाय, २ मोरे रामारे ॥ शिव० ॥ गोरे अंग सदा शिव शंकर, रहे मोरे मन भाय २ मोरे० ॥ शिव० ॥ जटा जूट में गंग छटा छबि शोभा वरणि न जाय, २ मोरे० ॥ शिव० ॥ वांम अंगमें गौरी विराजे, गणपतजी की माय, २ मोरे० ॥ शिव० ॥ देवी सहाय दास अपने को, दीजे दरस दिखाय, २ मोर० ॥ शिवजी को० ॥ २३ ॥

॥ कजरी ॥

अब तो लाग्यौ है मन मेरो तोरे चरणों में त्रिपुरार ॥ टेक ॥ अपनो दरस दिखाके मोकों वेगि विपत द्यौ टार । बहुत दिनन से आस लगी है अब मत मोहिं बिसार ॥ अब० ॥ दीनदयाल दयानिधि शंकर बिगरी मोर सुधार । देवीसहाय कहैं कर जोड़े भवसागरसों उबार ॥ अब तो० ॥ २४ ॥

॥ कजरी ॥

सावन आये हैं मनभावन शंकर हो तुम दीनदयाल ॥ टेक ॥ वेगि विपत प्रभु काटो मेरी अब मत करो निहाल । बहुत दिनों से आस लगी है करुणा करो कृपाल ॥ सावन० ॥ शरणागत में आये हम तो सुनिये मेरी सवाल । देवीसहाय दरसको लोभी करिये वेगि निहाल ॥ साव० ॥ २५ ॥

॥ कजरी ॥

मनवां शिव शिव शिव शिव सुमिरो आई सावन की बहार ॥ टेक ॥ परब्रह्म परमेश्वर शंकर तिनही को पुकार । सकल जगत की आसा तजिके उनहीको निहार ॥ नर तन पाय फेर मत भूलो चेतो अबकी बार । देवी सहाय नाम शंकर को देख्यो जग में सार ॥ मनवां० ॥ २६ ॥

॥ कजरी ॥

मनवां तोरे रे कारणवां शंकर नाहीं मिल-लै मोर ॥ टेक ॥ जन्म जन्म से भरमत आयो ठहरत नहिं एक ठौर । अब तो प्रीत करो शिव जीसे चंचलपना बटोर ॥ मन० ॥ ऐसे चरण कमलको तजिके विहरतुहो चहु ओर । देवी सहाय कहै प्रभु मेरो देखो अपनी ओर ॥ मनवां० ॥ २७ ॥

॥ कजरी ॥

मनमें आवेगी कब तेरे स्वामी मिलने की उपाय । गर्भवासमें बोल्यो जो तूं सो तो दियो बिसराय ॥ बालापन तरुणाई खोई माया में लपटाय । वृद्ध भये आलस तन घेर्‍यो मनही में पछिताय ॥ मनमें० ॥ जमराजा के पूछत वेरी देहो मुह लटकाय । देवीसहाय शम्भु गुरु सेवा भजन किये बनिजाय ॥ मनमें० ॥२८॥

॥ कजरी ॥

शिव गुण गावे पाप आपै नसि जावै रामा ॥ मनमें जो चाहै सोई पावै रे हरी ॥ गुरू को जो ध्यावै भक्ति आपै उर आवै रामा । गंगाधरजी सों लौ लगावै रे हरी ॥ गिरजा को मनाव दुख वोहीसो सुनावै रामा । शम्भूजीसे जाकेवो जनावै रे हरी ॥ देवीको सहाय शिव ताहीं को बुलावैं रामा । दरश दिखाके अपनावैं रे हरी ॥ २६ ॥

॥ कजरी ॥

मोरे मनवाला वोही गौरी संग वाला रामा । जाके गले सोहै मुण्डमाला रे हरी ॥ नैन है विशाला अंग लपटे नाग काला रामा । नन्दी पर विराजैं डमरूवाला रे हरी ॥ दीन को दयाला प्रेम जादू ऐसा डाला रामा । माया में से मोको तो सम्हाला रे हरी ॥ देवीको

सहाय शम्भु ऐसे कृपाला रामा ॥ दरस दिखाके करै निहाला रे हरी ॥३०॥

कजली शिवजी की ।

मोरी लागीरे सनेहिया बाबा शिव शंकरके साथ । जाके चरण कमल के ऊपर धरत सुरासुर माथ ॥ मोरी० ॥ गौर शरीर त्रिभूत रमाये मन्द मन्द मुसुकात । कोटिकाम तन तेज बिराजै शोभा बरणि न जात ॥मोरी०॥ कर डमरू डिमि डिमिक बजावै नाचैं भोलानाथ । देवीसहाय दास अपनेको थामि हाथसों हाथ ॥ मोरी० ॥ ३१ ॥

॥ कजली ॥

भोला डमरूवाला जोगी मेरो मन हर लीन्ह चुराय । शोभा चरण कमल की निरखत हरख न हिये समाय ॥ भोला० ॥ इत शिवशंकर आप विराजै उत गौरी मेरी माय । बिन देखे नहि परत चैन अब छिन छिन जिय घबराय

॥ भोला ॥ शिव गिरिजा को लखत लालची नैन हमार जुड़ाय। देवीसहाय मगन निसवासर गौरीपति को पाय ॥ भोला० ॥ २२ ॥

॥ कजली ॥

भजु मन काशी पति अविनाशी जिनकी महिमा अपरंपार ॥ टेक ॥ वेद पुरान बखानत महिमा है शिव नाम उदार। जाकी जटाजूट मे सोहै गंगमाय की धार ॥ भजु० ॥ जाके गले मुंड की माला सोहै चन्द लिलार। बाम अंग गिरिराज पियारी निजपुर करत विहार॥ भजु० ॥ शिव शिव नाम सदा जो गावै उतर जायँ भवपार। देवीसहाय उमापति को यश कहत पुकार पुकार ॥ भजु० ॥ २३ ॥

॥ कजली ॥

गौरी शंकर जी सदा शिव मेटौ संकट बेगि हमार ॥ टेक ॥ ममता मोह फास को बन्धन तुमहिं छुड़ावन हार। काम क्रोध मोहि अधिक सतावे

ताहि करौ संहार ॥ गौरी० ॥ शरणागत मैं नाथ तिहारे कहत पुकार पुकार । देवीसहाय दास अपने को वेगि मिलो त्रिपुरार ॥ गौरी० ॥ ३४ ॥

॥ कजली ॥

गौरीशंकर को सुमिर मन तेरो याही मे कल्यान । जाको सुयश कहत सुरनर मुनि गावत बेद पुरान ॥ विधि हरि सब शिव ध्यान करत हैं परम अभय पद जान । बड़े भाग्य मानुष तन पायो अब क्यों फिरत भुलान ॥ बार बार समुझाय कहत हौं कही हमारी मान । देवीसहाय भजन के कीन्हे मिलि हैं शिव भगवान ॥ ३५ ॥

॥ कजली ॥

इतनी अरज है हमारी मनमें जपत रहो शिव नाम ॥ टेक ॥ धन परिवार देखि मत भूलो ये नहिं ऐहैं काम ॥ शिव शिव नाम लियेसे प्यारे खर्च होत नहिं दाम ॥इतनी०॥सुनत सुयश

गौरीपति को जो तू कर ताहि परणाम। देवीसहाय भजत शिव को जे तिनको मैंहुं गुलाम ॥इतनी०॥ ३६ ॥

॥ कजली ॥

शिव शिव सुमिरन कर मन मेरे तेरो भव बन्धन छुटिजाय। लखचौरासी फेरा करिके पायो नरतन आय ॥ भजो चरण शिव साम्ब उमाके ममता मोह बिहाय। जाको ध्यान धरत सुरनर मुनि ब्रह्मादिक सब आय ॥ याही ते मैं कहत टेरिके सब सौं बिनय सुनाय। देवीसहाय पाय नर तन यह भजन करो मन लाय ॥३७॥

॥ कजली ॥

बाबा तोरे रे शरणवा ऐले दुखवा मिटि जाय ॥ पाप ताप जरिजाय हमारो सुख संपति अधिकाय। भक्ति भाव अनुराग जागि हैं बुद्धि बिमल हुइ जाय ॥ पूजन भजन बिना शिव तुम्हरे और कछू न सुहाय। देविसहाय दास

अपने को दीजै दरस दिखाय ॥ ३८ ॥

॥ कजली ॥

आए सावन मास सुहावन सब कोइ शिव पूजो मन लाय। गंगाजल केसरिया चंदन पुष्प सुगंध चढ़ाय॥ भांति भांतिके भोग लगाओ सुमनहार पहिराय । पूजन करि पुनि करो आ· रती सब कलेश नसि जाय । देवीसहाय आप गुरु मों को दीन्ही राह बनाय ॥३६॥

॥ कजली ॥

ऐसे सावन में शिव शिव सुमिरत क्यों नाही मनमोर ॥ जाकी महिमा सब जग माही छाय रही चहुं ओर। प्रेम करो गौरीपतिजीसों जन्म सुफल होय तोर ॥शिव शिव नाम लियेसे प्यारे पाप कटत अति घोर। देवीसहाय दरस शिवजी से मागत दोउ कर जोर ॥ ४ ॥

॥ कजली ॥

शिव शिव नाम कहो कर निसि दिन तेरे

सफल होंय सब काम ॥ सुख संपति सब देय सदा शिव अन्त मिलै शिवधाम। ब्रह्मादिक ध्यावत हैं जाको निशि दिन करत प्रणाम॥ विश्वनाथ पद पूजन कीन्हे अति आनंद अराम। देवी सहाय दयो गुरु मोको शिवपद में विश्राम॥ ४१॥

॥ कजली ॥

तोरे रे कारनवां बाबा भैल्यो बदनमवां रामा। तेहू पर नाहीं दिहल्यो दरशनवाँ रेहरी॥ जग के कारनवा बाबा कीयो विषपनवाँ रामा। विष को अहारी पायो नमवाँ रे हरा॥ मेरो मन लाग्यो बाबा तोरे रे चरणवाँ रामा। राखौ मोहि अपने सरनवाँ रे हरी॥ देवी के सहाय आये काशी चौथेपनवां रामा। शिवजी से करै के मिलनवाँ रेहरी॥ ४२॥

॥ कजरी गंगाजी की ॥

सुनिये गंगाजी की महिमा जाको नाम लेत अघ जाय। जाकी धूम धार सुनि शंकर

लीन्ही सीस चढ़ाय ॥ जाके तट पर ध्यान लगावत सुरनर मुनि सब आय । गंगाजी को सुमिरन कीन्हे जमदाग छुटि जाय ॥ काशी विश्वनाथकी नगरी बास कियो तहँ आय । देविसहाय न्हाय नित जो नर ब्रह्मरूप ह्वै जाय ॥ ४३ ॥

सुमिरो गंगाजी को निसि दिन तेरो पाप आप नसिजाय ॥ बेद विदित है जाकी महिमा कहत पुराण सुनाय । जो नर ध्यान धरत हैं उनको ताको दुख मिटि जाय ॥ सफल मनोरथ सब के करती ऐसी सुरसरि माय । देवी सहाय भजत निसबासर शिव दर्शन हितलाय ॥ ४४ ॥

॥ प्रभाती ॥

आत्मा वीरेश्वर समान और नहिं कोई । टेक ॥ श्रुति पुराण कह पुकार है प्रभु ये अति उदार गुरुदेव कह्यो गाय गाय सुजस उनकोई ॥ आत्मा० ॥ शेष औ गणेश आय ध्यावत तन मन लगाय पावत नहि पार नाथ ब्रह्मादिक कोई

॥आ०॥ उनहीको नाम जपतं, सुर नर मुनि प्यार करत, गावत उनको सुयस हृदय विमल होई ॥ आत्मा० ॥ देवीको सहाय ध्यावत तन मन लगाय ताको प्रभु दरशदेत तुरत प्रगट होई ॥ आत्मा० ॥ ४५ ॥

॥ कजरी ॥

ध्यावो ध्यावो रे मन मेरे बाबा विश्वनाथ पदको। ब्रह्मा विष्णु सकल सुर नर मुनि सेवतहैं जिनको ॥ प्रेम प्रीतसे पूजा करते भक्ति मिले तिनको। गावेजो शिव नाम निरंतर भय न रहे उनको ॥ भवसागर से तोहिं बचैहैं बिन शिव शंकर को। देविसहाय उमा महेश दोउ दरस दिये जनको ॥ ४६ ॥

॥ कजरी ॥

गौरीशंकरजी से प्रीती अबतो लगी हमारी है ॥ टेक ॥ बाम अंग गिरिजा महराणी जननी सगी हमारी है। उनके चरण कमल के पूजे

शुभ मति जगी हमारी है ॥ उनकी कृपा कटाक्ष किये से भव भय भगी हमारी है । देवीसहाय भक्ति रस स्वाती यह वर मगी हमारी है ॥ ४७ ॥

॥ कजली ॥

लागो लागोरे मन मेरो गौरी शंकर जीकी ओर ॥ टेक ॥ जपो सदा शिव नाम निरन्तर मान सिखावन मोर । सकल मनोरथ पूरण करिहैं पारवती पति तोर ॥ दीन दयाल दया करि दीहैं चरण कमल में ठौर । देवीसहाय भक्ति वर मागत शिव सनमुख कर जोर ॥ ४८ ॥

॥ कजरी ॥

शिवजी दया करि निहारो मेरो संकट देहु छुड़ाय ॥टेक॥ अपने चरण कमल में मेरे मन को लेहु लगाय । तुह्मरे दरश बिना शिव शंकर जिय मेरो तरसाय ॥ सबकी बेर बार नहि लायो मोहि दियो बिसराय । देवीसहाय

द्वार पर तेरे बैठे आस लगाय ॥ ४९ ॥

॥ कजरी ॥

भोले बाबाकी मूरतिया मोरे नैनोमें रही समाय। मुख प्रसन्न तन गौर भस्म छवि बैठे ध्यान लगाय ॥ टेक ॥ तीन नैन शिर गंग जटामें चंद्रभाल झलकाय। मातु पारवती करैं आरती शोभा वरनि न जाय ॥ बसो हमारे उरमे शंकर ऐसो रूप बनाय। देवी सहाय दास अपने को दरस देहु हरखाय ॥ ५० ॥

॥ कजरी ॥

सावन आये सब दुख जावै शिव गुन गवैजो मन लाय ॥ टेक ॥ जन्म जन्मके पाप ताप सब आपैसे नसि जाय। गौरी पतिके चरण कमल में प्रेम प्रीत अधिकाय। शरणागत में आये जनकी बिगरी देत बनाय। देविसहाय शिवा शिव सुमिरत दीनी वैस

विताय ॥ सावन० ॥ ५१ ॥

॥ कजरी ॥

विनती हमरी सुनो सिया रघुराई । रामा माया मेसे मोको ल्यो बचाई रे हरी ॥ तुमरि बड़ाइ वेद चारो मिल गाई रामा । दीनन की करत हौ सहाई रेहरी ॥ बड़े बड़े पापी प्रभु लियो अपनाई रामा । मोरी सुध काहे बिसराई रेहरी ॥ करी निठुराई देर काहेको लगाई रामा । संकट हमारो त्यो छुडाई रेहरी ॥ देवीसहाय कहै काशी में बसाई रामा । गौरी पतिसे द्यो मिलाई रेहरी ॥ विन्ती० ॥ ५२ ॥

॥ कजरी ॥

मनमे हर हर शिव शिव सुमिरो नरतन फेर नहि पावोगे ॥ जा शिव नाम लेत अलसै है पीछे पछताओगे । पूजा करो शिवा शिव जीकी जमपूर नहि जावोगे ॥ पैहो पद निर्वाण जाय जग जोनि न जाओगे ।

पैहो पद निर्वाण जाय जग योनि न आओ-
गे। देवीसहाय दरस तव पैहो शिव गुन गा-
वोगे॥ ५३॥

॥कवित्त श्रीशिवजी का॥

मारा है जलन्धर को त्रिपुर को संहारा
जिन, जारा है काम जाके शीश गंग धारा है।
धारा है अपार जासु महिमा है तीन लोक,
भाल नयन इन्दु जाके सुखमा सारा है॥ सा-
राहै बात सब खायो हलाहल जाहि, जगतके
अधार जाहि बेदन उचारा है। चारा है भांग
जाके दाराहै गिरीश कन्या, कहत शिवदास
सोइ मालिक हमारा है॥ ५४॥

॥ कवित्त ॥

चारि वेद गुण गावै ब्रह्मा विष्णु जेहि
ध्यावै, शेष पारहू न पावे दयासागर कहावै है।
भस्म अंगमें लगावै व्याल कंठमें सोहावै, कर
डमरु बजावै सिद्धि सकल बढावै है॥ भक्त

आपदा नशावै मन वांछित दिवावै, जाहि परम प्रभावै सब पापन घटावै है ॥ भक्त शंकर कहावै चन्द्र मौलि गुण गावै, मनवांछित को पावै करि अस्तुति सुनावै है ॥ ५५ ॥

॥ कवित्त ॥

सब देवनमें आला अर्ध आसन में वाला, आप ओढे व्याघ्र छाला सदा दीनन दयाला है। कण्ठ सोहै नाग काला भाल चन्द्रमा विशाला, गले धारे मुण्डमाला करै दीनन निहाला है ॥ भक्त मानस मराला मेटि अंक विधि भाला, नयन तीसरेमें ज्वाला मारि दारिद को डाला है । जन शंकर प्रतिपाला सब मेटति कशाला, बहु रोगन को घाला शम्भू मुरती विशाला है ॥ ५६ ॥

सवैया ॥

छहरै शिर पै छबि गंग इतै, सुउतै तिलरी नथुनी लहरै । फहरै गजचर्म कपाल इतै, सु

उतै पट विद्युत सो फहरै ॥ थहरै अंग गौर दयाल इतै, सु उतै रंग केशरिको भहरै। विहरै यह रूप शिवा शिवको जन शंकरके हिय में ठहरै ॥ ५७ ॥

॥ सवैया ॥

शिव की मन आस लगाय रह्यौं, नहिं औरनते कछु नेक चहौं। सरिता पतिके ढिग जाय बसौं, फिरि तालनमें कस लाभ चहौं ॥ सुररूख मिले तेहि छोड़ि कहा, अब आकन को लपटाय गहौं। आधीन कहौं तुम से को बड़ो, जेहि के दरबार में जाय रहौं ॥ ५८ ॥

॥ सवैया ॥

तुम्हरे पदपंकज के बल से, न गनौं कछु दारिदकी कटकाई। हे शिवजी यह दुष्टदरिद्रपै, क्यों न त्रिशूल की धार चलाई। बेगि सनाथ करो शिवजी, न अधीनपै एती धरो कठिनाई। ठाढ पुकारत हौ शिवजी हमरी सुधि क्यों बिसराई॥५६॥

॥ कवित्त श्रीकालीजी का ॥

भूखी जो होउ तो दुष्टनको भक्षण करु होउ जो अघानी अभयदान मोहि दीजिये धर्मिनको छोड़िके अधर्मिनको बीनखाउ चुगुल को चबाउ मात देर नाहिं कीजिये । एहो जगदम्बे मात दासन की रक्षा करो ऋद्धि सिद्धि दान करि कीरति बढ़ाइये । देवीको सहाय मात हाथ जोरी अर्ज करैं काज करो मेरे देर काहेको लगाइये ॥ ६० ॥

॥ कबित्त ॥

एक हाथ खड्ग एक खप्पर विराजमान, एक हाथ रुंड एक मुंडन की मालिका । सिंघपै सवार मात करमे त्रिसूल लिये, आठ भुजा धारिणी रूप धार बालिका ॥ देखिके स्वरूप तेरो योगिनि प्रचंड भई, हूजिये सहाय मातु कीजै प्रतिपालिका । दुष्टन को काटि काटि

धरो त्रिच खप्पर में, चुगुलन को चौंतरा बनाउ मात कालिका ॥ ६१ ॥

॥ श्री गंगाजी का कवित्त ॥

नीचे हैं वारि ता वारिपै कच्छप सवार ता कच्छपकी पीठपै सवार शेष कारा है। शेषपै सवार अवनि भारसो दबाय रहै, अवनिपै सवार सिंधु पर्वत विस्तारा है ॥ पर्वतपै सवार कैलाश शिवधाम जहाँ, कैलाशपै सवार नन्दी असुर समर मारा है । नन्दीपै सवार शंभु शंभुपै सवार जटा, जटापै सवार भागीरथीजी की धारा है ॥ ६२ ॥

॥ आरती श्री विश्वनाथ जी की ॥

ॐ जयदेश्व जयदेश्व ॥ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीशा । शिव जय गिरिजा-धीशा ॥ त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ॥ जयदेश्व ॥ १ ॥ कैलाशे गिरि शिखरे, कल्प-द्रुम विपिने । शिव क० ॥ गुंजत मधुकर पुंजे

कुंजवने गहने जयदेश्व ॥ २ ॥ कोकिल कूजति कलयति हंसावन ललिता । शिव हं० ॥ रचयति कला कलापी नृत्यति मुद सहिता ॥ जय० ॥३॥ तस्मिन् ललित सुदेशे, शाला मणि रचिता । शिव शा० ॥ तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता । जय० ॥ ४ ॥ क्रीडति रचयति भूषा, रंजित निज मीश । शिव रंजि० ॥ इन्द्रादिक सुर सेवित चरणे धृत शिरसं । जय० ॥ ५ ॥ विबुध वधू बहु नृत्यति, हृदये मुद सहिता । शिव-हृ० ॥ किन्नर गानं कुरुते सप्त स्वर सहिता । ज० ॥ ६ ॥ धुनंग थेनां ,ध्वनिनां मृदंग नादयते। शिवमृ ० ॥ कुणु कुणु कुणु कुणु ललिता वी-णां वादयते । ज० ॥ ७ ॥ रुणु भुणु रुणु भणु रचयति नूपुर मुज्वलिता । शिवनू ०॥ चक्रावर्तं भ्रमयति कुरुते तांधृकता । ज० ॥ ८ ॥ तां तां लुपुचुप चक चक, ताल ध्वनि रुणुते । शिव ता० ॥ अंगुल्या मगुष्ठां घननादं कुरुते । जय० ॥ ९ ॥

शंख निनादं कृत्वा, झल्लरि नादयंते । शिव झ ०॥ आरति रचयति ब्रह्मा वेदध्वनि पठते । ज ०॥ १० ॥ अतिमृदुचरण सरोजं हृदिकमले धृत्वा । शिव हृ ० ॥ अवलोकयनिजरूपं ईशं अति नत्वा । ज ० ॥ ११ ॥ कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितं । शिव पं० ॥ त्रिनयन शशिधर मौले विषधरकंठयुतं । ज० ॥ १२ ॥ सुन्दर जटाकलापं पावकयुत भालं । शिव पा० ॥ वाम विभागे गिरिजा रूपं अति ललितं । ज० ॥१३॥ सकल शरीरे मनसिज, कृत भस्माभरणं । शिव कृ० ॥ इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणं । ज० ॥ १४ ॥ वज्रं खड्गं शूलं, परशु धारयते शिव पर ० ॥ अंकुश वराभय पाशं घंटां नादयते । ज० ॥ १५ ॥ मूर्द्धनि राजत गंगा देवसङ्घ वीतं । शिवदे ०॥ रुद्राक्षांकित वक्षसि पन्नग मुपवीतं । ज० ॥ १६ ॥ ध्यानं आरति समये, हृदये यः कुरुते । शिव हृ० ॥ शिव सायुज्यं ग-

च्छति यो भक्त्या शृणुते ॥ जयदे ३ व जयदे व ॥ १७ ॥ हर हर हर महादेव ॥ इति श्री शंकराचार्य कृता आरती समाप्ता ॥ शिवार्पणमस्तु ।

॥ दोहा ॥

मन लगाय या भजनको, नित्त प्रात जो गाय।
बहुत शीघ्र वह जीवकी. बुद्धि निर्मल ह्वैजाय॥
श्री महेश सुमिरण करौं, धरूं उमाको ध्यान॥ बार
बार गुरु पदगहूँ देहु अचल दृढज्ञान ॥ २ ॥

॥ इति ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

शैवमनोरञ्जनी

चतुर्थ भाग ।

॥ रागिणी भैरवी ॥

गणपति विघन निवारण हारे टेक ॥ मंगल करण अमंगल नाशन सुखके सदन उमाके बारे । एकदन्त गजमुख लम्बोदर सेंदुर तिलक नयन रतनारे ॥ जाकोध्यान धरत सुर नर मुनि लोकहु बेद बिदित संसारे । होउ प्रसन्न मनोज-दहन सुन काम क्रोधके नाशन हारे ॥ मम इच्छा तुम जानत हौ प्रभु तातें सेवत चरण तिहारे । देविसहाय दास अपने को करहु अनन्द महेश दुलारे ॥ १ ॥

॥ राग देस ॥

मन अब सुमिरे गणपति चरण ॥ टेक ॥

प्रथम पूजन नारि नर सब जानि मंगल करण। सन्तजन को कल्पतरु मम खलनको दल हरण ॥ लहहिं बुधिवर सकल विद्या भजहिं सो करि परण । सुखद अधिक पुनीत पावन भक्त तारण तरण ॥ जानि मंगल मूलको जन ध्यान लागे धरण । ताहि क्षण त्रय ताप भागे पाप लागे डरण ॥ गौरिलाल गणेश सुन्दर महा अर्जुन बरण ॥ देविसहाय दास जाके रहत नितप्रति शरण ॥ २ ॥

॥ राग बिलावल ॥

गाइये गणपति जगवंदन । शंकर सुवन भवानीनंदन ॥ टेक ॥ सिद्धिसदन गजबदन विनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥ मोदक प्रिय मुदमंगल दाता विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥ देविसहाय देउ कर जोरे । बसहि उमावर मानस मोरे ॥ ३ ॥

॥ राग भैरव ॥

उठ प्रभात प्रथम सुमिर श्रीगणेश देवा। माता जाकी पारवती पिता महाँदेवा॥ एकदन्त दयावंत चारभुजा धारी। माथे पर सिन्दूर सोहे मूषक असवारी॥ अन्धन को आँख देत कोढिन को काया। बाँझिन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ धूप दीप अरु नैवेद्य भोग लगन मेवा। सकल सृष्टि ध्यान धरत तुलसी करत सेवा॥ ४॥

॥ प्रभाती ॥

जय गणेश जय गणेश सकल विघ्नहारी॥ टेक॥ दुःख हरण सुक्ख करण, आँनद उर मोदभरण, ऋद्धि सिद्धि संगलिये भक्तन हितकारी। धूम्रकेतु गणाध्यक्ष, भालचंद्र सबरक्ष, विघ्नराज हरो विघ्न ली शरण तिहारी॥ मैं तो अति दीनानाथ, तुमहो प्रभु दीननाथ, कीजिये हमको सनाथ सकल कष्टहारी। मस्तक सिंदूर लाल, सोहे तन चोलालाल, मस्तक पै चंद्रभाल

चार भुजा धारी ॥ सन्तन के काज करन, मंगलमय रूप सदन, शंकर सुत गौरिलाल मूषक असवारी । देखिको सहाय दास, कीजिये पूरण सुआस, मेटो भव दुःखत्रास सुधि लीजो हमारी ॥ ५ ॥

राग झँझोटी ।

गौरि सुत करो विघन सब दूरि ॥ टेक ॥ बिपतिहरण तुम शरण सुखद, मै भरो विपति सों भूरि । सुभग शुंडादंड गहि डारो, सघन अघन करुं तूरि ॥ विदित वानि जगदानि शिरोमणि, सुजन सजीवन मूरि । तुमतजि दीन हितू नहि देखों, निज चित माहिबिसूरि ॥ गणनायक सुख दायक जनको, रहे सुयशसों पूरि । मद बुधिसदन चन्दयुत राजत, जगतवंद मति रूरि ॥ हिनकरि नित सब दास चहत है, चरण कमलकी धूरि ॥ ६ ॥

॥ लावनी ॥

शम्भु सुत गौरीके नन्दन । नाम गणपती जगत बन्दन ॥ टेक ॥ सीस पर सोहे मुगुट आला । तिलक चन्दन का छबिवाला॥ गलेमें मोतिनकी माला ॥ नैनमें काजर दिये काला॥

* दोहा *

मूषक वाहन गजबदन, शोभित जिन को अङ्ग ॥
छबि वर्णन कवि कोकरै, लाजत काम अनङ्ग ॥

मैंधरू ध्यान तासु चरणन । नाम गणपति जगत वंदन ॥ १ ॥

रूपमहिमा जिनकी न्यारी । छूटी अलके घूंघरवारी ॥ ओढेशिर पीताम्बर सारी । अधर मुसक्यान भुजाचारी ॥

॥ दोहा ॥

थिरक थिरक नाचत फिरैं, श्रीगणपति मँहराज ॥
पायन वाजे पैजनी, घुंघुरुनकी आवाज ॥

साजोंकी होरही जहाँ खननन् । नामग०

॥ २ ॥ हाथमें सोहे गदा त्रिशूल। मिटावैं सब सुजननकी शूल ॥ नाम जिनका सुख दायक मूल। तिन्हैं नहि भजें बड़ी है भूल ॥

॥ दोहा ॥

सेवहि अमर नरेश तेहि, नारी नर समुदाय ॥
आरति निशिदिनतें करहि, धूप दीप बहुलाय ॥

चढावें फूल रोरी चन्दन। नामगणपति जगबंदन ॥ ३ ॥ प्रथम पूजा जिनकी भारी। दियोबर तिन को त्रिपुरारी ॥ बिना तुमरे नही शुभकारी मनावें तुमको संसारी ॥

॥ दोहा ॥

विघ्न हरण मंगल करण, श्रीगणपति महँराज ॥
जगबिच लज्जा राखिये, गौरीसुत गणराज ॥

काटि देउ सकल भव बन्धन। नाम गण-पति० ॥ ४ ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

नितप्रति गुरु पद भजे, पाप होत सब लुंज ॥
भव बाधा बाधे नाही, बने तेजमय पुंज ॥ ८ ॥

॥ ठुमरी खम्माच ॥

करोरे मन गुरु पदपंकज प्रीत ॥ टेक ॥ गुरु की सेवा करो अब पामर बैस गई सब बीत । सुत परिवार धाम धन गृहनी ना कोउ तेरो मीत ॥ करोरे० ॥ कुटिल काल अचानक जब ऐहै लीहै पलमें जीत । देविसहाय गुरु भजन भाव तब करिहै तोहि अभीत ॥ करो० ॥ ६ ॥

भैरवी ।

बिन गुरु कौन महेश मिलावे ॥ टेक ॥ काल व्याल सिर ऊपर गाजे, ताको मर्म लखावे । करि उपदेश दृढावत मनको, औघट घाट बचावे ॥ बि० ॥ गुरु की महिमा अधिक शम्भुते, वेद विदित यों गावे । शम्भु देत निज धाम आपनो, गुरु बिनु भेद न पावे ॥ बि० ॥ जब लगि गुरु पद नहि भावे, तब लगि जग भटकावे । देवि सहाय चरण गुरु के मोहि, सागर पार लगावे ॥ बि० ॥ १० ॥

॥ स्तुति भगवतीजीकी ॥

उमा नवकोटि रूपगण गौर नमो भगवती शक्ति शिरमौर ॥ टेक ॥ करै सुरवधू सकल शृंगार । मांगभरी गजमुक्तन इक सार ॥ गुही बेनी प्रसून सुकुमार । महाँवर चरणन विविध प्रकार ॥

* दोहा *

सीस मुकुट नवरतनयुत, चपलाचमक लजाय ॥ श्रवन फूल युग चन्द्र सम, नकबेसर पहिराय ॥ १ ॥ लसत मस्तक मलयागिरि खौर । नमो भगवती० ॥ १ ॥ त्रिविध गुणके तीनों लोचन । तापत्रय हरण तिमिर मोचन ॥ कुटिल भृकुटी आनन रोचन । कहत छवि लगे शेष सोचन ।

* दोहा *

लसत चतुर कर कमल सम, नख शिख रूप गँभीर । विविध भांति भूषण वसन, राजत अम्बशरीर ॥२॥

उपमा तुम समान नहिं और । नमो भगवती शक्ति० ॥ २ ॥ खड़े सब देवता दर्बार । करत अस्तुति अपरम्पार ॥ पौरि पै खड़े छडीबरदार । शक्ति है यक तुही संसार ॥

* दोहा *

रमा लिये करबीजनी, ढौरैं त्रिबिध बयार । स्वर्ग से आई इन्दिरा, आरति रही उतार ॥ ३ ॥ विष्णुकर छत्र करै विधि चौर । नमो भगवती शक्ति० ॥ ३ ॥ खड़ी कोई सेवामें खासी । लिये कोइ पीकदानदासी ॥ कोई लिये अतर गुलाब पाँसी । लखे कोइ अनुसासनपासी ॥

* दोहा *

नारद सारद सप्त ऋषि, सनकादिक सुरसर्व ॥ स्तुतिकरत सदाँ मातुकी । कार जय जय तजि गर्व ॥ ४ ॥ करै सेवक सेवकाई दौर । नमो भगवती शक्ति० ॥ ४ ॥ तपसी तप करै तुव धाम । जपै योगिजन आठो याम ॥ त्रिभुवन करत

तुमहि परणाम लहत अर्थ धर्म माते काम ॥

* दोहा *

जहँ जहँ संकट परो, टारी भारी भीर ।
दास निज पर सहाय ह्वै, देहु ज्ञान गंभीर ॥ ५ ॥
करो निशदिन गणेश पर गौर । नमो भ०
॥ ५ ॥ ११ ॥

अर्जी सूर्यनारायण जी की ।

द्विज दीनन के दुख दलन दिवाकर स्वामी । दरशावो ज्ञान गंभीर सुअंतरयामी ॥ निशिदिन कामीमन दुष्ट कर्म चित लावैं । लोचन की वृष्टि सदैव पाय उपजावैं ॥ नित काम क्रोध मद लोभ अधिक दरसावैं । इन कर्मनसे स्नेह-मान सुख पावे ॥ हौं महामूढ़ अज्ञान कुटिल खल कामी । दरसावो ज्ञान गंभीर सु अंतरयामी ॥ १ ॥ ममता मायावस भयो जगत मन मेरो । आशा अनुकुलनिवास आनि मोहिं घेरो ॥ तृष्णाने तन करि त्रसित मोह मे गेरो ।

हो रह्यो घोर तम हृदय माह इनकेरो ॥ मोहि जानि दीन दुख हरो दिवाकर स्वामी। दरशावो ज्ञान गंभीर सु अंतरयामी ॥ २ ॥ हमसे खल अधिक अधम अजापी। उनके दुख हरत सुख करत हो आपी। निशिवासर कर्म कुकर्म करत जो पापी उनहूं को तारत तुमहीं करत अपापी। मोहि जानि अधम अभिमान युक्त मम स्वामी। दरसावो ज्ञान गंभीर सु अंतरयामी ॥ ३ ॥ तुम्हरे प्रतिबिंबहि देखि रूप अलबेला। नसिजात सकल पाप शाप के हेला ॥ दुख दूरि दर्श है होत स्वरूप नवेला। सुख पावत सेवक सदा तुम्हारे ज्वेला ॥ किरणन से कटे कलेश मनोहर धामी। दरशावो ज्ञान० ॥ ४ ॥ तुमहौ सब भव के भार नसावन हारे। सुनि तुम्हरे सुमिरण के किये कटें दुखसारे ॥ तुमहौ जगदीश्वर जगत के पालनहारे। तुमहौ जगदीपक देव दयानिधि भारे

॥ जगपालन पोषण करत तुह्मी वसु यामी । दरशाओ ज्ञान गंभीर सुअंतरयामी ॥ ५ ॥ तुमहौ देवन के देव देवता भारी । तुमहौ प्रत्यच्त भगवान सुखकारी ॥ तुम भक्तन को सुखदेत भक्ति हितकारी । तुह्मरो प्रताप गंभीर सकल असुरारी ॥ मोहि देहु भक्ति महराज दिवाकर नामी । दरशावो ज्ञा० ॥ ६ ॥ जो जन उठि प्रभात करे तुह्मारी सेवा । तन त्यागि जाँय जहाँ राजत योगी देवा ॥ तिल चंदन चावल सुमन चढ़ाये मेवा । सुख संपति शुभ सन्तान प्राप्त होय एवा ॥ तुह्मरी सेवकाई में सदैव आरामी । दरशावो ज्ञान गंभीर सुअंतरयामी ॥ ७ ॥ तुम दीनबन्धु सुखसिन्धु हरण विपदा के । जगजाहिर यश महँराज सकल प्रभुता के ॥ निगमागम वेद सहित गीता के । सुर नर मुनि ध्यावैं तुम्हें सुरसरिता के ॥ तुह्मरी महिमा माया दाया सरनामी । दरशावो ज्ञान० ॥ ८ ॥

अब करो कृपाकी छाँह हेरि मम ओरी । जानि मोहिं भगवान दीनकर जोरी ॥ बर मागत मैं प्रभु यही निहोरि निहोरी । हमरे चित माहिं महेश दिनेश बसोरी ॥ रवि चरण शरण निज दास ललन पिय थामी । दरशाओ ज्ञान० ॥ ९ ॥ १२ ॥

॥ स्तुति गङ्गाजी की, राग आसावरी ॥

महिमा अनंत, जग जानी । जय जय श्रीगंगा महराणी ॥ टेक ॥ तप कियो भगीरथ भारी । सुरसरि आवें संसारी ॥ जन जानि आनि सुख चारी । वरदान दियो यकवारी ॥ छंद॥ ब्रह्मलोक से बही सुरसरि मृत्युलोक आई । लई सीसपर धार ईश तहाँ रही लुभाई ॥ भगीरथ वहु भाँति विनय शिवशंकर की गाई । दीन्हो वूंद निचोर तीनों त्रिभुवन महँ छाई ॥ टूट ॥ सगर भूपति सुत साठि हजार । भागीरथ को परिवार ॥ सागर महँ आय समानी । जय

जय श्रीगंगे महरानी ॥ १ ॥ जननी अति पतित निवाजे । त्रैताप आप से भाजे ॥ जो भजे सदा तुम काजे । शिवपुर में जाय विराजे ॥ छंद ॥ जटाजूट शिर गंग लसत मस्तक मयंक आला । लाल २ लोचन विशाल उर परी मुंडमाला ॥ अंग अंग लिपटे भुजंग विष पिये भंग प्याला । बाघंबर विस्तर वृषवाहन ओढे मृगछाला ॥ टूट ॥ दयावर बदल दिया चोला । किया कितनो को बम्भोला ॥ तुम कामधेनु कल्यानी । जय २ श्री०॥ २ ॥ यम गये विष्णु के पासे । कर जोर कहा इतिहासे ॥ हम डरे बड़े गंगा से । पापी पहुंचे कैलासे ॥ छंद ॥ मृत्युलोक में अदल अदालत गंगाकी सारी । लग रहे दर्बार पुण्यका परवाना जारी ॥ पापिनकी अर्जी पर मर्जी है जिनकी प्यारी । अधम अभागे कुटिल करै सुरपुर की तैयारी ॥ टूट ॥ हुकुम गङ्गाजी का नाटक । नरक का बंद किया फाट-

क ॥ तुम चारि पदारथदानी। जय २ श्री० ॥ ३ ॥ हैं चरित तिहारे नीके। दर्शन है तुल्य अमी के ॥ निर्मल जल गंगाजीके। पी पाप कटत पापीके ॥ छंद ॥ जो करैं असनान निकट गंगाजीके आवे। पग बोरत पुनि सीस हरि हर की पदवी पावे ॥ अब जिसने घटभरा चाल चतुरानन कहलावे। ब्रह्मा विष्णु महेश रूप तीनौं का दरशावे ॥ टूट ॥ निकट सुरसरि फ़रुखाबाद। करे अस्तुति गणेशपरसाद ॥ देहु चरण भक्ति मन मानो। जय जय श्रीगंगे महरानी ॥ ४ ॥ १३ ॥

॥ ख्याल ॥

जौलों पृथ्वीपर है गंगा की धारा। तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ टेक ॥ मत डरो कोई यमदूतसे मेरे भाई। रक्षा करने को हैं श्रीगंगा माई॥ जब से शंकरने अपने सीस चढ़ाई। तब ईश और जगदीश की पदवी पाई ॥ शिव बना वही

जिसने यक गोता मारा। तौलों यम० ॥ १ ॥ कुछ जोर न यमको चले पाप नहिं लागे। जो काल भी देखे तो वह दूरही सों भागे। जिन गंगा स्नान कियो तिन्हे त्यागे। वह अमरलोक में बसे अलख ह्वै जागे। यह निश्चय कर मानों बचन हमारा। तौलों यमराजाक० ॥ २॥ चाहे हो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले। कुछ कर्म अकर्म न उस्के देखे भाले ॥ जो एकबार प्राणी गङ्गा मे न्हाले। वह जन्म जन्म के सकल पापों को टाले ॥ है श्रीगंगा की महिमा अपरंपार। तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ ३ ॥ मत चलो हमारे मित्र किसीसे डरके। निर्भय हो दर्शन श्रीगंगा के करके ॥ देवीसहाय गंगा को ध्यान धरके। जैहौं भवसागर सहजही पार उतर के ॥ गंगा के बलसे दल सब यम का हारा। तौलों यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा ॥ ४ ॥ १४ ॥

॥ महादेव जी की प्रभाती ॥

जय महेश गिरिजापति शंकर त्रिपुरारी ॥ टेक ॥ उमाधर जटाधर चंद्रधर मुंडधर गंगाधर त्रिलोचन पंचवक्र शूलधारी। डमरुधर पिनाकधर गरल गजचर्मधर शम्भुहर वृषभधर चिताभस्मधारी ॥ सर्व शिव दिगम्बर हे गिरीश ईश डाकिनीश गौरी अरधङ्ग नाथ हिमालय विहारी। शंकर उर करहु बास आवें नहि दुःख पास व्यालधर कृपाल सुरत लीजिये हमारी॥१५॥

॥ भैरवी ॥

शंकर महादेव देव सेवक सुर जाके। भस्म अंग शीश गंग वाहन अति बल चंड गौरी अर्धंग सग भंग रंग छाके। लपटि लपटि जात व्याल ओढे तन मिरगछाल मुंड माल चंद्र भाल दृग विशाल बाँके॥ ध्यावत सुरनर मुनीश गावत गिरिजा महेश पावत नहिं पार शेष ब्रह्मादिक थाके। वर्णत जन तुलसिदास गिरिजा

पति चरण आस ऐसे बर वेष नाथ भक्ति हेतु राखे ॥ १६ ॥

॥ भजन ॥

भजुरे मन गौरी पति कृपाल । मिटि जाय सकल भ्रम मोहजाल ॥ टेक ॥ कैलास शिखर-पर्वत विशाल । जहाँ बसत सदा शिव तीनि काल ॥ तहँ पीवत है नित घोटि भंग शिर लसत गंग भूषण भुजंग रीझे है जल दल फल फूल चाल । अनुकूल प्रसन्न बजाय गाल ॥ भजुरे मन० ॥ जिनके विधि लिखी सम्पति न भाल । तिनको शिव दीन्हो होय दयाल ॥ हिय मे धरु शंकर चरणरेणु । फलदायक सुर तरु कामधेनु ॥ मन वांछित पावत वृद्ध बाल । निर्धन धन वांछित पुत्र हाल ॥ भजु० ॥ करि विश्वनाथ कीरति उदार । सुन याचक वर होय दीन द्वार । मोहि नयन खोलि हर करू निहाल । दर्शन प्रभु दीजे चंद्र भाल ॥ भजु० ॥ १७ ॥

॥ ठुमरी खम्माच ॥

शंकर शिव बं बं भोला । कैलास पती माहाँराजाधिराज ॥ शंकर शिव बं बं भोला ॥ अंतरा ॥ ओढे मिरग छाल, गले मुंडमाल, लोचन बिशाल, हैं लाल लाज, इत चंद्र भाल सोहत बिराज। शंकर शिव बं बं भोला ॥ कैलास पती० । अधंग रूप जैसे छाँह धूप, निरखत अनूप भये छकित भूप, कर डमकि छुपगति डमरु वाज । शंकर शिव बं बं भोला ॥ कैलास पती० ॥ कहे दास नित्य कर जोरि जारि, देहुभक्ति दान रखु मान मोर, शिव चर-ण छाँडिकहँ जाहुँ आज ॥शंकर०॥ कै० ॥१८॥

॥ रागिणी खम्माच ॥

हर हर बंबं शिव चंद्रभाल । महिमा अपार संसार सार ॥ टेक ॥ नयना रसाल भृकुटी विशा-ल । माला कपाल उर लसत व्याल दीनदयाल करुणावतार । चढे बेल पती वृषपर सवार ॥ छबि-

अंग अती सोहे पारवती । लिये योगी यती कैलास पती ॥ सुरसरी जटान शोभायमान । लिये डमरू पान अति करत गान ॥ हरि विधि सुरेश नित रटत शेष। निशि दिन कलेश काटत महेश ॥ भाषत पुराण यश बेद चार । गावत गणेश प्रभु सुन पुकार ॥ १६ ॥

॥ इकताला प्रभाती ॥

शंकर संसार सार बंबंबं भोला । सीस गंग चन्द्रभाल चिताभस्म चोला ॥ टेक ॥ लोचन विशाल लाल, जटामुकुट मुंडमाल, नीलकंठ कर निवास महा स्मशान टोला ॥ राजत भुजंग अंग, लीन्हे प्रभु गौरि संग, प्यावत बहुत घोटि घोटि भर भंगझोला ॥ चरण पद्म वृष विमान, डमरू कर करत गान, गावत अति ललित राग सुनि मुनि मन डोला ॥ निशि दिन करि प्रणाम, सुमिरत शिव आठयाम, रटत शेष बेद भेद जिनको नहिं खोला ॥ नारद शारद सुरेश,

शिव गुण गावत गणेश, चतुरानन विष्णु करत अस्तुति मृदु बोला ॥ शंकर संसार सार बंबंबं भोला ॥ २० ॥

॥ रागिणी धनाश्री ॥

दानी शंकर सम कोउ नाहीं ॥ दीनदयाद देत जोइ भावै याचक सदा सुहाहीं । मारिके मारु थप्यो जगमे जाकी प्रथम रेख भटमाहो । ताठाकुर को रीझि नेवाजिवो कहि क्यों परत मोपाहीं ॥ योग कोटि करि जोगति हरिसों मुनि मागत सकुचाहीं । वेद बिदित तेहि पद पुरारि पुर कीट पतंग समाहीं ॥ ईश उदार उमापति परिहरि अनतजे याचन जाहीं । तुलसीदास ते मूढ मागनें कबहुँ न पेट अघाहीं ॥ २१ ॥

॥ सोरठ ॥

गिरिजापति चरण मनाये ॥ टेक ॥ ते करि दूरि त्रिविध ताप भव सुलभ परम पद पाये । सुयस छाय तिहुँलोक में अति आनँद भूरि

बहाये । अतिहि शोक के पुंज जगत के सब निज हाथ नसाये ॥ मगन ध्यान रत रहत सदा मन नेक विकार नहि आये । दारुण दाह दूरि करि भरि मुद हँसि हर लोक सिधाये ॥ यही जानि हित मानि नित हरषि रोम तनु छाये देवी सहाय शरण चाहत मन करो काज मम भाये ॥ २२ ॥

॥ राग बिलावल ॥

को याचिहे शंभु तजि आन । दीनदयाल भक्त आरत हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ टेक ॥ काल कूटते जरत सुरासुर, निज जन लागि कियो विष पान । दारुण दनुज जगत दुख दायक जारेउ त्रिपुर एकहि बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान । सोइ गति मरण काल अपने पुर देत सदा शिव सबहिं समान ॥ सेवत सुलभ उदार कल्पतरु पार्वती पति परम सुजान । देहु

सम्पद नेह कामरिपु तुलसी कहै कृपा निधान ॥ २३ ॥

॥ सोरठ राग ॥

जो नहि नेह शंभु सों कीन्हो। तो कत वृथा जन्मि या जगमें जननि जनक दुख दीन्हो ॥ टेक ॥ निशि दिन भ्रमति रह्यो माया में छल बल मे परवीनो। शंकर नाम अमृत रस परिहरि विषय महाविष पीनो॥ निज कर काटि समूल कामतरु धै बबूर मति हीजो। निलज अभाग काम कृत रे शठ हित अनहित नहि चीन्हो। जौन सार संसार एकही, सुख समूह सों भीनो। तेहि तजि चहत अराम अरे जड़, कस बलभद्र मलीनो ॥ २४ ॥

॥ सोरठ ॥

जपो शिव शिव शिव सुखदाई। देह धरेको यहै फल भाई, यातें सब बनिजाई ॥ टेक ॥ मन भाये फल लहौ गहौ मति चहौं

जो जगत भलाई ॥ तौ गिरिजा पति चरण कँमल में राखो मनहिं लोभाई ॥ सुत दारा परिवार धाम धन ये ना कोउ सुखदाई । अंत समय सब सपन सरिस ये परि है तोहिं लखाई ॥ परम कृपाल देत मन भाये फल हिय अति हरखाई । देविसहायकरोताहीसोंमुदभरि नेह सगाई ॥२५॥

॥ रागिणी दादरा ॥

बृथा भवहिमें भरमि भुलानो हे मन मूढ़ । कवन मत ठानो, जो हित ताहि न जानो ॥टेक॥ शंकर नाम कामतरु परिहरि फिरत मोह मति सानो । अधम अयान मान मद गहि के निज हित ना पहिचानो ॥ गृह कारंज जालन में फसिके बृथा यह मोह दिखानो । नितहि कुसंग परो पामर जड धनमें क्या ललचानो ॥ अबतो चेत हेत करि भजिले मन कुमंत्र में ठानो । देबिसहाय नेह शंकर पद और ठौर मंति मानौ ॥ २६ ॥

॥ रागिणी झंझोटी ॥

कियो जिन शम्भु चरण अनुराग ॥ टेक ॥ सो सपूत जननी जग जायो सोई अति बड़ भाग ॥ सो गुणज्ञ सोई कृतज्ञ सो परम चतुर युगराग । ज्ञानवान मतिमान सोई जग सोई जन निरदाग ॥ सुजन पुण्य सन्मान सहित सो धरे धर्म की पाग । सोई सराहन योग्य संत सो निर्मल सहित विराग ॥ सो ज्ञाता दाता सो सुखनिधि किये अमित सोयाग । देविसहाय लगत प्यारो सो किये विषयको त्याग ॥ २७ ॥

॥ झँझोटी ॥

शिवापति शिव शिव रट तजि क म । शिव समान जनि जान आन कोउ देन हार विश्राम ॥ टेक ॥ को उदार शङ्कर समान जग प्रणत कल्पतरु नाम । जो न भजे हत भाग्य महाजड़ तेहि सम कौन निकाम । करुणा कर कोमल चित दूजो कौन भक्त अभिराम । तारक नाम

लेत अनन्दसौं देत तिन्है धन धाम ॥ बिन याचै याचकन अयाचक करत आठहू याम । देविसहाय भजे नहि शंकर तेहि समकोउ नहि ॥ २८ ॥

॥ रागिणी सारङ्ग ॥

शङ्कर करहि मनोरथ पूरे ॥ टेक ॥ शीश गंग छके भंग रंग गौरी अर्धंग बधूरे । नील-कंठ गल मुण्डमाल दृग लाल लाल छबि चूरे ॥ कटिवर अभय डमरुवर मुक्ति भक्ति करैं ते सूरे । देविसहाय प्रात उठि भजिये सुख लहिये दहिये दुख दूरे ॥ २९ ॥

॥ रागिणी वसन्त ॥

सेवहु शिव चरण सरोजरेणु । कल्यान अखिल प्रद कामधेनु ॥ टेक ॥ कर्पूरगौर करुणा उदार । संसार सार भुजगेंद्रहार ॥ सुख जन्म भूमि महिमा अपार । निर्गुण गुण लायक निरा-कार । त्रयनयन मयन मर्दन महेश । अहंकार

निहार उदित दिनेश ॥ वर बालनिशाकर मौलि भ्राज । त्रैलोक्य सुखद हर प्रथम राज ॥ जिन-कह विधि सुगति लिखी न भाल। तिनकी गति काशीपति कृपाल ॥ उपकारी को पर हर समान । सुर असुर जरत कृत गरलपान ॥ बहुकल्प उपायन करि अनेक। बिनु शंभु कृपा नहि भव विवेक ॥ विज्ञान भवन गिरिसुता रवन । कह तुलसीदास मम त्रास शमन ॥३०॥

॥ वसन्त ॥

नर का रे कियो जग जन्म पाय। मुख शिवको नाम तोमे लियो न जाय ॥ टेक ॥ है नाम कल्पतरु कर विचार । इच्छा फल पल में देन-हार ॥ तरिगे कोटिन गुन गाय गाय। नर का रे० ॥ भय भंजन हर को यश अनूप। नर भए रंकसे केते सुभूप ॥ सेवें सुर मुनि मन लाय लाय । नर का रे० ॥ जग जस प्रसिद्ध परघट पुरान। लखि दीन द्रवत करुणा निधा-

न ॥ दूजो न देव ऐसो दिखाय। नर का रे० ॥ देवीसहाय हर हर भजन्त। हारे केते नहिं पायो जु अन्त ॥ रहें सदा सेवक पर सहाय । नर का रे० ॥ ॥ ३१ ॥

॥ बसन्त ॥

विनवों शिव चरण बार बार। जाकी महिमा गावत वेद चार ॥ टेक ॥ शोभित जटा में गंगधार, है चन्द्र भाल गले मुंडहार ॥ तन लिपटे भुजंग फन हजार। नित भांग धतुरन को अहार। रतिपति के मन आयो विकार। ले युद्ध करन आयो पसार ॥ दियो नैन तीसरो जब उघार। तब काम भयो तन जरके छार ॥ त्रिपुरासुर को पृथिवी पै भार। सब देव भगाये मार मार ॥ ब्रह्मादिक कीन्ही तब पुकार। दियो दुष्ट मार लिये सुर उबार ॥ मैं अधम आप अधम उधार। मोहि कीजे भवसागर से पार ॥ देविसहाय तव आयहु द्वार। सुनि

लीजे उमावर पुकार ॥ ३२ ॥

॥ बसन्त ॥

सुमिरौ स्वरूप शिवको विशाल । विनशैं सगरे कलिमल कराल ॥ करि कृत्ति नील नूतन तमाल । चंपक द्युति शोभन व्याघ्रछाल ॥ है तीन नयन आभरण व्याल । मुख पांच बाहु दश मुण्ड माल ॥ अंग गौर नीलगल चन्द्रभाल । हरि लेत ताप तम हिय के कराल ॥ सुमिरौ० ॥ ३३ ॥

॥ चाल होली की ॥

जै गंगाधर दया तिहारी ॥ सुर और असुर मथ्यो रत्नाकर, निकस्यो सकल विषारी । आप उठाय आचमन कीनो, तुमहि कृपा विस्तारी ॥ खबर प्रभु लीजो हमारी । जै गं० ॥ १ ॥ ब्रह्मलोक ते धाईं गंगा, त्रैपथ गामिनी भारी । जटा मध्य तुमहीने धारी, तुम सम को तप धारी ॥ सुनिये विनती त्रिपुरारी ॥ जै गं० ॥२॥

शिव शिव रटत कटत सब संकट, निकसत सकल विकारा। हर हर कहत करत प्रभु सेवा, मेवा मिलत रुचिकारी ॥ चारिहु बेदमें बिचारी ॥ जै गंगा० ॥ ३ ॥ देबीसहाय आस चरणन की, बार बार बलिहारी । कैलासी काशीके बासी, लखौ सुदृष्टि निहारी ॥ कष्ट भक्तन के निर्वारी । जै गंगाधर दया० ॥ ४ ॥ ३४ ॥

होली ।

उमा रमा दोउ फाग मचायो ॥ टेक ॥ कर कंचन सोहत पिचकारी, भरि भरि रंग उडायो । अतर अरगजा चंदन केसर, बीथिन बीच बरसायो ॥ मानो मेघवा झरलायो ॥ उमा० ॥१॥ सननन् सननन् चलत कुमकुमा, उडि गुलाल नभ छायो । दोउ ओर प्रीत मुदित मन हरखित, अंग रंग लपटायो ॥ सुभग तन परम सुहायो ॥ उमारमा० ॥ २ ॥ ठनकत ताल मृदंग झांझ डफ, सारद बी बजायो । निरत करत

अप्सरा राग रस, उमगि उमगि उपजायो । सुमन सब सुरन बरसायो ॥ उमा० ॥ ३ ॥ धन धन धन धन उमारमा यश, तीन लोक गुण गायो । निरखि निरखि सोभा हरिशंकर प्रेम मगन गुणगायो ॥ नयो नित नेह लगायो ॥ उमा रमा० ॥ ४ ॥ ३५ ॥

॥ होली ॥

शिवको निरभय नाम जपोरी ॥ टेक ॥ मोद मृदंग ताल द्रढता डफ, सुमति सितार वजै घन घोरी । रसना राग अलाप सुनावो, उपजै रस सुनि २ चहुँओरी ॥ शिवको० ॥१॥ ग्यान गुलाल उड़ावहु गावहु, मुदित मगन मन खेलहु होरी । दोउ कर गहे प्रेम पिचकारी, त्रिगुन ताहि बिच रंग भरोरी ॥ शिवको० ॥२॥ कुमति काठ बहु बिधि बटोरिकै, एकठौर धरि धीर धरोरी । जोग अगिन करि प्रगट ताहि बिच, हरखित हरको भजन करोरी ॥ शिवको०

॥ ३ ॥ कहत हरीशंकर शंकरकी, कीरन ललित कहो कर जोरी । जीवत सुख मिलि हैं यह जगमें, होइहै सुगत अन्त में तोरी ॥ शिव को० ॥ ४ ॥ २६ ॥

॥ होली ॥

शिव पद नेह न जाना । सोई नर पशू समाना ॥ टेक ॥ शिव पद सेवत मिलत चारो फल, सारद सेस बखाना । अर्थ धर्म औ काम मोच्छ पद, पावत नर निरवाना ॥ विमल उर आवत ग्याना ॥ शिव० ॥ १ ॥ सेइ शंभु पद भयो बाणासुर, सहस्त्रबाहु बलवाना, तीनो लोक जाके डर काँपै ऐसो तेज निधाना ॥ जाखो वाको अभिमाना ॥ शिव० ॥ २ ॥ हरि जानत हर पद की महिमा, भक्ति भेद पहिचाना । एक पलक सो नहि विसरावत, धरत सदा उर ध्याना । चरण चित लखि लिपटाना। शिवपद० ॥ ३ ॥ जे गिरिजापति गुण गन

गावहिं, सुख पावहिं मन माना, कहें हरिशंकर अन्त समै में, लागत ठीक ठिकाना ॥ निर्गुन भयो निरखि दिवाना । शिवपद० ॥ ४ ॥ २७ ॥

॥ होली ॥

शिवको धरत न ध्याना । फिरत नर भरम भुलाना ॥टेक॥ लख चौरासी भरमत भरमत, कतहुँ न लगत ठिकाना । शिवकी कृपा भई तब पायो, नरतन परम सुजाना ॥ सकल गुण ज्ञान निधाना । शिवको० ॥ १ ॥ भजन प्रताप प्रबल यह जग में, भाखत वेद पुराना । जीवत जीव सदा सुख भोगत, तजि ममता मद माना ॥ जासु जस जात बखाना । शिवको० ॥ २ ॥ जो नर भजत भावसे जगमें, होत उदय उर ज्ञाना । करि अपनो ताको अपनावत, तुरत शंभु भगवाना ॥ हरत पुनि गर्भ गुमाना । शिवको० ॥ ३ ॥ जप तप जोग जग्यँ व्रत संयम, करत नेम बिधि नाना । भजन बिना

फीको हरि शंकर, लागत सकल जहाना ॥
कविन कुल देत प्रमाना । शिव० ॥४॥२८॥

॥ होली ॥

भरि भरि रंग कमोरी । शिवा शिव खेलत होरी ॥ जोग अगिन बिच होरी जरत है, अद्भुत चरित लखोरी । सुमन काठ औलौ की लकड़ी, लहकि रही चहु ओरी ॥ शिवा० ॥१॥ शंभु सीस त्रिपुंड विराजे, गौरि दिये मुख रोरी। इत गजचर्म बघंबर सोहै, उत लखि पीत पिछौरी ॥ शिवा० ॥ २ ॥ उमा कुंकुमा तकि २ मारत, हँसत लखत पति ओरी । हरके हाथ कनक पिचकारी, जामे रंग भरोरी ॥ शिवा०॥३॥ दोउ तन अरुण नीरमें भीने, मची जंग घन-घोरी ॥ हरि शंकर शंकर यश मुखसे, होय हर भक्त भजोरी ॥ शिवा शिव खेतल होरी ॥४॥२९॥

॥ होली डफकी ॥

बौरहवा बाबा की छबि न्यारी ॥ बौरहवा०॥

लपटे अंग भुजंग भस्म तन, त्रिभुवन पति किये भेख भिखारी। छाने भंग संग गन गाजैं, राजैं उमा परम प्रिय प्यारी॥ बौरहवा०॥ १॥ अबीर गुलाव भरे झोरिन में, उमगि उड़ावत गगन निहारी। बजत मृदंग ताल गत डमरू, गावत सुजस संत ललकारी॥ बौरहवा०॥ २॥ होइहै मनसा पूरण पलमें, जापर सानुकूल त्रिपुरारी। खेलत फाग राग रँग भीने, सकल भुवन आनंद भयो भारी॥ बौरहवा०॥ ३॥ अति अनूप रस छाय रह्यो है, प्रेम प्रवाह बहत सुखकारी। हरिशंकर शंकर की महिमा, कहि न सके विधि विश्नु विचारी॥ बौरहवा०॥४०॥

॥ होली॥

मैं कछु औरन जानौ, है शिव नाम अधार॥ जंत्र न जानो, मंत्र नहिं जानौ, नहिं जानौ उपकार॥ मैं०॥ जप तप, ज्ञान योग नहि जानौ, नहिं व्रत नेम अचार॥ मैं०॥ बैर प्रीत

एकहु नहि जानौ, नहि कुलको व्यवहार ॥ मैं कछु० ॥ हरिशंकर शंकर पद तजि के, वृथा जीवन संसार ॥ मैं० ॥ ४१ ॥

॥ होरी ॥

होरी होय रही बाबा विश्वनाथ के द्वार ॥ होरी० ॥ गूँजि गुलाल गयो चारो दिसि, रंगन की बौछारे ॥ होरी० ॥ ढोल मृदंग ताल डफ डमरू, बाजत बीन सितार ॥ होरी० ॥ बरसत सुमन बहत तेहि अवसर, सुंदर त्रिविध बयार ॥ होरी० ॥ कहत हरिशंकर शंकर की, है गति अपरंपार ॥ होरी० ॥ ४२ ॥

॥ होरी—डफकी ॥

शंकर के शरण रहो बाबा ॥ शंकर के० ॥ झूठ वचन मुख से मत भाखो, दया धरम हृदय में राखो, यह गुण गूढ गहो बाबा ॥ शंकर के० ॥ यह जग जलनिधि अगम धार है, जाकी गत अदभुत अपार है, क्यों तेहि माहँ बहो बाबा ॥

शंकर के० ॥ शंभु सुजस नौका अति खासी. जापर छूट जात जमफाँसी, चढि सुख सकल लहो बाबा ॥ शंकर के० ॥ कहें हरिशंकर कर्म बचन मन, सहित सनेह बसहु आनन्द बन, कलि दुख दहो बाबा ॥ शंकर के० ॥ ४१ ॥

होरी दुर्गाजी की।

देहु दरस दुरगा महरानी । अजित अनादि अखिल पति रानी ॥ देहु दरस० ॥ इच्छा से पालत जग जननी । तेज प्रताप न जाय बखानी ॥ अजित अ० ॥ द्विज देवन को दूर कियो दुख । दल्यो असुर अमित अभिमानी ॥ अजित० ॥ चरणसरोज राखि उर विनवों । करहु कृपा सिसु सेवक जानी ॥ अजित० ॥ शंकर भक्ति देहु हरि शंकर । बरणत तव शुचि सुजस बखानी ॥ अजित अनादि० ॥ ४२ ॥

॥ होरी उमा महेशजी की ॥

आनदबन में धूम मचोरी। खेलत शंभु

शिवा संग होरी ॥ आनद० ॥ निरत करत भैरो गणनायक, षटमुख बरसावत रँगघोरी ॥ खेलत०॥ सुर समूह गावत सब ठाड़े, ताल मृदंग बजत चिटकोरी ॥ खेलत० ॥ लाल गुलाल भयो बीथिनविच उडत अबीर भीर चहुँओरी ॥खेलत०॥ लखपतकुंवर निरखि यह शोभा. बरनत सुजस जुगल कर जोरी ॥ खेलत० ॥ ४३ ॥

॥ होरी ॥

आनदबन मन जाय लोभाना । सुखनिधान जस वेद बखाना ॥ आनदब० ॥ निरमल नीर बहत गंगाको, निरखि २ उपजत उर ज्ञाना ॥ सुखनि० ॥ परमधाम पावहि येहि पुर बसि, प्राण पुरुष जब करत पयाना ॥ सुख० ॥ भव-बंधन छुटत इक छन मे, जो नर करत शंभु गुणगाना ॥ सु० ॥ लखपतकुँवर कहै जप तप मख, नहिबिराग शिवभक्ति समाना ॥सु०॥४४॥

॥ होरी अन्नपूरनाजीकी ॥

अन्नपूरणा माई। हरखि हिय होरी मचाई ॥ जेतनी शक्ति पुरी काशीमे, लीन्हे सबहिबुलाई ॥ बागेसरी लछमी ललिता सुनत श्रवन उठिधाई ॥ हरखि० ॥ विंध्याचल दुर्गा बाराही, रहीं अबीर उड़ाई । भरी कुंकुमा कमच्छा काली, मारतमुख मुसुकाई ॥ हरखि० ॥ चौसठ जोगिन ले चौसठ्ठी, बिहसत रंग बरसाई ॥ श्री संकटा शारदा त्रिपुरा, जुरी जालिपा आई ॥ हरखि० ॥ त्रिभुवन पति पारवती उठि उमगि उमगि उर लाई ॥ लाल लाल फूलन की माला, सबके गरे पहिराई ॥ हरखि० ॥ सहस चार चंडी चौरासी, सिद्ध रहे गुनगाई। नओ नाथ डमरू मृदंग डफ, नाचत ताल बजाई ॥ हरखि० ॥ तेंतिस कोटि देवता नभ से, रहे सुमन बरसाई । लखन कुंवर लखि यह सोभा, आनँद उर न समाई ॥ हरखि हिय होरी मचाई ॥ अ०॥ ४५ ॥

॥ होरी ॥

हे शंकर भगवाना। नाथ मैं अधम पुराना ॥ कबहुँन दान दिये निज करसों नहिं बिप्रन सनमाना । सतसंगत कीन्हेंहु नहि कबहूं सुनेहुँ न वेद पुराना ॥ वृथा मम जन्म सिराना ॥ नाथ मैं० ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में यह मन जाय लुभाना । निन्दित कर्म करत नित जग में फिरत रहेउ बौराना ॥ नहीं तुम कह पहिचाना ॥ नाथ मैं० ॥ क्रूर कुटिल खल अधम मोहि प्रभु जानत सकल जहाना ॥ अब सब छाड़ि चरण तव आयहुं देहु अभय बरदाना ॥ होई जेहिमें कल्याना नाथमैं० ॥ अधम उधारन विरद सह्मारो हे शिवशंभु सुजाना । देके दरस अंत मथुरीकहँ ताडक मंत्र सुनाना ॥ देहु निज पास ठिकाना ॥ नाथ मैं० ॥ ४६ ॥

॥ होरी ॥

होरी के दिनन मन अति अनुरागे। खुलि

गई ताडी सदा शिव जागे ॥ टेक ॥ भांग धतूरा घोलि एकही में। पारवती राख्यो पति आगे ॥ होरी० ॥ पियत नसा छायो शंकरको। प्रेम मगन उठि नाचन लागे ॥ हो० ॥ डमरू मे छत्तास रागनी। सुन्दर सुर निकरत षट रागे ॥ हो० ॥ कहत हरीशंकर शिवदानी। इच्छा फल दी हैं बिनमागे ॥ हो० ॥

होरी।

होरी खेलत शंभु कृपाला। डमरूवाला ॥ टेक ॥ लाल गुलाल जटा बिच भरि गयो। बरसत रंग बिसाला ॥ काननकुँडल झलकत हलकत। गर मुंडन की माला ॥ सोभित जम केहरी छाला ॥ डम० ॥ नाचत प्रेत पिशाच मगन मन। बिपुल भूत बैताला ॥ डिमि डिमि डिमि डिमि डमरू बाजत, राजत दीन दयाला ॥ भयो चहुँदिशि लालगुलाला॥ डमरू० ॥ भैरो बीर अबीर की झोली, लिये पिये

मद प्याला । आनद बनमें घूमत झूमत, जैसे गज मतवाला ॥ कर कमलहि बीच कपाला ॥ डमरू० ॥ हरिशंकर सब विप्र बृन्द मिलि, गावत शिव जस आला । मानहु सरवर तीर मुदित मन, मुक्ता चुगत मराला ॥ जस लखि लखि होत निहाला ॥ डमरू० ॥

घाँटो श्रीगुरुमहाराज की ।

गुरु बिन ज्ञान न आवै । ब्रह्मपद कौन लखावै ॥ टेक ॥ गगन गुफामे होत शुद्ध इक। तहाँ जीव नहिं जावै ॥ ब्रह्म० ॥ है शिव नाम कल्पतरु जगमें । सन्तन के मनभावे॥ब्रह्मपद०॥ धन धन गुरु धन ज्ञान गुरूको । धन जो ध्यान लगावै ॥ ब्रह्म० ॥ हरि शंकर वापर शिवरीझै। जोगुरुको गुन गावैं ॥ ब्रह्मप० ॥

घाँटो श्रीकाशीपुरी की ।

शिवकी नगरिया काशी । जहँ छुटट जम फांसी ॥ टेक ॥ काशी अमर पुर आनद बन

है। मिलत मुक्त अति खासी ॥जहँ०॥विश्व-नाथ दाता जहँ बैठे। आदि ब्रह्म अविनाशी ॥ जहं छु० ॥ ऐसी पुरी कोई नहि त्रिभुवन में। पूरण तेज प्रकासी ॥ जहँ० ॥ कहत हरीसंकर यह महिमा। है काशी के वासी ॥ जहँ छूटत० ॥

घाँटो श्रीशिवजी की।

शिवको धरत नहिं ध्याना, फिरत नर भरम भुलाना ॥ टेक ॥ प्रबल प्रताप विदितत्रिभुवन में। सारद बेद बखाना ॥ फिर० ॥ ब्रह्मा आदि मध्य विष्णु हैं। अन्त शम्भु में जाना ॥फिर०॥ आदि लख्यो कोउ मध्य लख्यो कोऊ। अंतन कोउ पहिचाना ॥ फिर० ॥ कहें हरि शंकर गूढ़ ज्ञान यह गहु मतरहू अलसाना ॥ फिर०॥

घाँटो।

शिव शिव कहु बंभोला। विमल होइ हैं तोरा चोला ॥ टेक ॥ जटा जूट में गंग विराजै

छानत भंगको गोला ॥ विमल० ॥ आठ सिद्धि नव निद्धि भरे हैं ॥ लिये बगल में झोला ॥ ॥ विमल० ॥ जाको आदि अंत नहिं लागे । बेद भेद कछु खोला ॥ विमल० ॥ कहत हरी शंकर हर सुमिरहु । बनिबैठहु अनबोला ॥ विमल० ॥

॥ घाँटो ॥

जोग जुगुत से करले । नाम शिवको उर धरले ॥ टेक ॥ यह जग में कोई नहिं अपना । समुझि बूझि जिय भरले ॥ नाम० ॥ सुमिर शंभु जस भवसागर से । एहि बिधि पार उतर ले ॥ नाम० ॥ माया मोह त्यागि के तृष्णा । खासी राह पकर ले ॥ नाम० ॥ कहत हरी संकर काशी बसि । हर जस गाय लहर ले ॥ नाम शिवको० ॥

॥ घाँटो ॥

शिवको सुजस सोहावन । बिधि हरि मुनि

मन भावन ॥ टेक ॥ चित चिन्ता नहि रहत उरपुर बसि । संशय शोक नसावन ॥ विधि० ॥ उदय प्रकाश होत घटपट में । दिन दिन ग्यान बढावन ॥ विधि० ॥ बेद भेद सूझै बिनु बूझै । लागत अलख लखावन ॥ विधि० ॥ कहैं हरि शंकर गाय शम्भु गुण । होत पतित नर पावन ॥ विधि० ॥

॥ घाँटो ॥

जागि जागि करबै बिहनवाँ । की पूजन शिवके चरणवाँ ॥ टेक ॥ चुनि चुनि बेल के पतिया चढ़ैवे । गंगाजल से असननवाँ ॥ की पूज० ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती । करबै करि दरसनवाँ ॥ कीपूजा० ॥ पल में प्रभु इच्छा फल देइहैं । होय मनमाहि मगनवाँ॥की पूज०॥ लखपत कुँअर रच्यो हर रचिके । यह जग अ-लख रचनवाँ ॥ की पूज० ॥

॥ घाँटो ॥

आनदवन मन भूला । फूल जहँ शिव यश फूला ॥ टेक ॥ आनदवन आनदहै बिहरैं । क्या अंधो क्या लुला ॥ फूल ज० ॥ जादिन जन्म लियो घट भीतर । क्या क्या कौल कबूला ॥फूल०॥ यह जगमें निर्भय नर झूलत। पड़ा भरम का झूला ॥ फूल जहँ० ॥ लखपत कुँअर कहें प्रभु मो पर । रहहु सदा अनुकूला ॥ फूल० ॥

॥ घाँटो ॥

पनियाँ भरत पनिहारी । गगर शिर सोहत भारी ॥ टेक॥ भरि भरि जल थल पर ढरकावत । चपल चतुर नवनारी ॥ गगर० ॥ ऊपर कूप जगत वाके अध । स्वाँसा डोर सवाँरो॥गगर०॥ ओहि ठैयाँ अद्भुत बाग लग्यो है । फूलरही फुल वारी ॥ गगर० ॥ लखपत कुँअर ग्यान दीपक बिन । मिटत न उर अँधियारो ॥ गगर शिर सोहत भारी ॥

॥ घाँटो ॥

नैया मोरी पार लगादे। मलहवा मंजिल पहुँचादे ॥ टेक ॥ झुरझुर बायु बहै पुरवैया। प्रेम पाल तनवायदे ॥ मलहवा० ॥ पाँच पचीस लदे नैया परे। तिनहि ढकल डुबाय दे ॥ मलहवा० ॥ गहरी नदि अगम जल लहरै ॥ छोड़ लंगर ठहरायदे ॥ मलहवा० ॥ दृढ़ना डाँडा खेइ खुमीसे। अब मोरे पियसे मिलायदे॥मलहवा०॥ लखपत कुँअर अरज शंकरसे। अद्भुत अलख लखाय दे ॥ मलहवा० ॥

॥ घाँटो ॥

टप टप टपकै नयनवाँ। पिया मोरा मागे गवनवाँ ॥टेक॥ मिलि ल्योगी मिलिल्यो सखियाँ सहेलर। अब नाहिं होइहै मिलनवाँ ॥पिया०॥ सोर हो सिंगार बदन पर करिबै। पहिरिबै ध्यान गहनवाँ ॥ पिया मो० ॥ चढि डोलिया ससुर हम जैवै। सून कै के बाबा कै भवनवाँ॥पिया०॥

लखपत कुँअर कहैं धीरज धर। लागि रहो शंभु के चरणवाँ ॥ पिया० ॥

॥ मल्लार ॥

विलोकहु शिव की जटा अकाश ॥ टेक ॥ भिन्न भिन्न सब लोक बने हैं। करत देवता वास विलोकहु० ॥ उदरमें मृत्युलोक की रचना ॥ दिनकर तेज प्रकाश ॥ बिलोकहु० ॥ प्रेम पयोधि लखो आनदवन झलकत गिरि कैलास विलो० ॥ पगपताल अखंड अलख गति । बावन बलिको वास ॥ विलो० ॥ कहत हरीशंकर शंकर पद । सेवहु करि विश्वास ॥ विलो० ॥

॥ मल्लार ॥

नहि जाको शम्भू चरण चितलगा । टेक। कहा भये तन भस्म रमाये। कहा त्रिपुण्ड जग जगा ॥ ब्रह्म रंग में रंग्योन तन मन गेरुआ वस्तर रँगा ॥ नहिंजाको० ॥ कपट बनाय भेष

यह जग में । फिरि फिरि के सब ठगा ॥ यह अनरीत उचित नहि अनुचित । अन्त समै दग दगा ॥ नहि० ॥ तरुनिन को तेज निरखि निरखि के । प्रेम मगन मन पगा ॥ भजन न भावत गावत सुनिके जात स्वान इव भगा ॥ नहिं जाको० ॥ यह रसना षटरस बस होयके जात दिवस निसि डगा ॥ कहत हरीशंकर नहि कोई । है अपनो नर सगा ॥ नहि जाको शं० ॥

॥ मल्लार ॥

रिमि झिमि बुंदन बरसि रहेरी । रिमिझिमि ॥ टेक ॥ करत शंभु जल शयन उमासंग । गगन घटा घनघेरी ॥ रिमि० ॥ लागत अधिक अषाढ सोहावन । सावन भरन भरेरी ॥ रिमि० ॥ बन घन हरित महामहि शोभित । भादों रयन अँधेरी ॥ रिमि० ॥ कहें हरिशंकर कार विगत रितु । अलख शम्भु गति तेरी ॥ रिमिझिमि०

॥ मल्लार ॥

शम्भु सम कोउ नहिं दीनदयाल ॥ टेक ॥ जन्म जन्म को संकट काटत। छन में करत निहाल ॥ शम्भु० ॥ रतनारे सरोज द्दग सुंदर। भृकुटी बिकट बिसाल ॥ शम्भु० ॥ जोगी जटिल अनंग अंगछवि । राजत केहरि छाल ॥ शम्भु० ॥ कहत हरिशंकर सुमिरणसे छूट-जात जम जाल ॥ शम्भु सम० ॥

॥ मल्लार ॥

शिवको अधम उधारण नाम ॥टेक॥ अधम उधारन सन्त उबारन। पायहुँ मैं बेदाम॥शिव०। कब भयो तरुण रह्यो कब बालक। कहाँ जन्म को ठाम ॥ शिव० ॥ चौथो पन आयो कब व्याह्यो। सती बिराजत वाम ॥ शिव० ॥ कहत हरी शंकर केहि कारण। जास्यो तृण इव काम ॥ शिव० ॥ ६६ ॥

॥ मल्लार ॥

देहँ धरि कीजे शम्भु सनेह ॥ टेक ॥ त्रिभु-

वननाथ वरसिहे तोहि पर । सुख संपत्त को मेह ॥ देह० ॥ करिहैं कृपा सकल दुख हरिहैं । भरि है अन धन गेह ॥ देह० ॥ कहत हरी शंकर शंकर से । राखहु निर्भय नेह ॥ देह० ॥ ६७॥

॥ मल्लार ॥

झमकि झर लाय रहे बदरा ॥टेक॥ रंग रंग के निरखहु नभपै । छाय रहे बदरा ॥झमकि०॥ घेर घेर नभ घेर घेर । घहराय रहे बदरा ॥ ॥ झमकि० ॥ आनदवन विच अति आनंद । उपजाय रहे बदरा ॥झमकि०॥ कहैं हरिशंकर लहर लहर । लहराय रहे बदरा ॥झमकि०॥६८॥

मल्लार हिंडोला की।

शिव के भजन विन भवनिधि कैसे उतरब पार ॥ टेक ॥ येहि रे सगरवा अगम जल,भवँर अथाह अपार ॥ शिव० ॥ नाहि जहाँ नाव न बेड़ा रे, नाहिं कोउ खेवनहार ॥ शिव० ॥ घाट सुथल जल गहँड़िल, झुर झुर बहत बयार ॥

शिव० ॥ कहत सुजस हरिशंकर, शंकर नाम उदार ॥ शिव० ॥ ६९ ॥

॥ मल्लार ॥

पतित जन तारन को यह देस ॥ टेक ॥ है जितने आनदबन वासी, आनद रहत हमेस ॥ पतित० ॥ मनसा पूरण करत हरत दुख, त्रिभुवन नाथ महेस ॥ पतित० ॥ मानहु साँच आँच नहिं लागत, छूटत पाँच कलेस ॥ पति० ॥ तारक मंत्र देत लगि कानन, हरिशंकर उपदेस ॥ पतित० ॥ ७० ॥

कजरी।

झूलैं झूलैं हो हिंडोला, भोला रूप बने अरधंग ॥ टेक ॥ विधि हरि पग लगावत गावत, सुरगण शिव के संग ॥ झूलैं० ॥ हरा सिंगार हरा झूलन है, हरो डोर को रंग ॥ झूलैं झूलैं० ॥ सावन मास सोहावन बरसत, चढ़ि नभ मेह उतंग ॥ झूलैं झूलैं० ॥ कहत

हरिशंकर हर हरखित, विहँसत पी के भंग ॥ झूलैं झूलैं० ॥ ७१ ॥

कजली।

तेज के निधान शंभु बनके विहारी रामा। रामा सोहैं बूढ़े बैल की सवारी रे हरी ॥ हरि हरि सोहैं० ॥ चन्द्रभाल सीसपै सदा त्रिपुंड धारी रामा। रामा छाने भंग विष के अहारी रे हरी ॥ हरि हरि सोहै० ॥ जटाजूट में घटा घमंड घेर भारी रामा ॥ रामा निरखि नयन छवि न्यारी रे हरी ॥ हरि० ॥ गौरी के समान और नाहीं दूजी नारी रामा। रामा शिव के अधीन आज्ञाकारी रे हरी ॥ हरि० ॥ कहै हरी-शंकर सहाय त्रिपुरारी रामा। रामा लागी नेह हिरदे से हमारी रे हरी ॥ हरि हरि सोहैं ॥ बूढ़े० ॥ ७२ ॥

कजली।

भोला डमरू हो बजावें, गावें नई नई गत

तान ॥ टेक ॥ ताथेइ ताथेइ थेइ थेइ नाचैं, पावस ऋतु पहिचान ॥ भोला० ॥ पग पथ ज-नियाँ छमाछम् बाजै, लंबी सुंड समान ॥ भोला०॥ माता गौरी हँसि छबि निरखैं, प्रेम सहित धर ध्यान ॥ भोला० ॥ गावैं हरिशंकर लखि लीला, को जग शंभु समान ॥ भोला डमरू० ॥ ७३ ॥

कजली ।

शोभा तीन लोक से न्यारी, भारा है त्रिपु-रारी की । छहर रही चहुँओर छटा है, क्या निशि कारी की ॥ शोभा० ॥ कहैं कृष्ण जग माहि ज्योति है, अति उजियारी की ॥ शोभा० ॥ कोटि काम लज्जित लखि होते, छबि मदनारी की ॥ शोभा० ॥ ७४ ॥

कजली ।

तुम सम त्रिभुवन में त्रिपुरारी, जनदुखहारी कौन कृपाल । चार पदारथ देत छनक में, तनक बजावत गाल ॥ तुम० ॥ विष्णु को

लक्ष्मीपती कीन्हो, सरस्वती चतुरानन दीन्हो, दियो बनाय सची दै शक्रहिं, सुरपुर को महिपाल ॥ तुम० ॥ देवनकाज कंठ विष धार्‌यो, त्रिपुरासुर एकै सर मार्‌यो, रावन कियो लंकपति पल में, बुधि बल वकसि बिसाल ॥ तुम० ॥ कृष्ण कहै बरदायक दानी, नहिं दिखात प्रभु तुमरी सानी, दास जानि निज पदपङ्कजसों, दुख काटो ततकाल ॥ तुम० ॥ ७५ ॥

॥ कजली ॥

शिव को नाम जपो तूँ प्यारे, नाहक उमर बिताते हौ ॥ टेक ॥ चंद रोज की यह जिंदगानी, क्यों भरमाते हौ । जाको तूँ अपना करि मानत, तासो लाभ न पाते हौ ॥ शिव को०॥ झूठी आसा में फसि फसि कर, कष्ट उठाते हौ मारकंडे प्रभु से ध्यान लगावो, क्यों भटकाते हौ ॥ शिव० ॥ ७६ ॥

॥ कजली ॥

डिम् डिम् डमरु बजावैं गावैं, नाचैं भूतगणों

के संग ॥ टेक ॥ भाँग धतूरा खूब जमाये, भस्म रमाये अंग । मस्तक ऊपर चन्द्र विराजे जटा जूट में गंग ॥ डिम् ० ॥मुण्डन के गुंजित है माला, लपट्यो बहुत भुजंग । मारकंडे प्रभु शोभा निरखत, लोचन भरे उमंग ॥ डिम्० ॥ ७६ ॥

कजली ।

शंकर खूब बनाई काशी, जहाँ नहीं तनक उदासी है । वर्ण वर्ण के मंदिर सोहै, झलके खासी है ॥ पचगंगा स्नानको करके, कटत चौरासी है । मारकण्डे प्रभु पुरी सोहावन, सब सुख रासी है ॥ शंक० ॥ ७७ ॥

कजली ।

चलो देखि आई शिवके बरात ललना ॥ टेक ॥ जहँ जुटल बाटै सकल जमात ललना । तहँ नन्दी के सवारी किये जात ललना ॥चलो०॥ जहँ देखि देखि बालक डेरात ललना । तहँ मने

मने देव मुसुकात ललना ॥ चलो० ॥ जहँ प्रथक प्रथक विलगात ललना । यह मारकंडे प्रभु के सोहात ललना ॥ चलो देखि० ॥ ७७ ॥

कजली ।

देख्यो खोजि तीनि लोकन में, दानी विश्वनाथ भगवान ॥ टेक ॥ दुखित बिलोकि दनुज देवनकों, कियो हलाहल पान ॥ देख्यो० ॥ भे प्रसन्न रावण के ऊपर, दीन्हो राज सु महान ॥ देख्यो० ॥ त्रिपुरासुर वर लेके शिवसो, लघ्यो वैर को ठान ॥ देख्यो० ॥ छनमें ताहि कोप करि मारो, त्रिपुरारी जग जान ॥ देख्यो० ॥ दै हजार कर बाणासुर को, कीन्हो अति बलवान देख्यो० ॥ कृष्ण कहैं जाके यश को नित, करते सुर मुनि गान ॥ देख्यो० ॥ ईश अनन्त अलख अविनाशी, भाषै वेद पुरान ॥ देख्यो० ॥ ७८ ॥

कजली ।

सेवा करो सदा शङ्कर को, सुख से रहो हमेशा

यार। सकल पाप संताप तुरतही, जरके ह्वै है छार ॥ सेवा० ॥ पूरण काम होयगो तेरो, मिले पदारथ चार। यातें नेह लगावो शिव सों, तजिके कपट विकार ॥ सेवा० ॥ करुणा के सागर त्रिपुरारी, यामे नाँहि विचार। अति अपार गुण वाको जानो, शेष न पावैं पार ॥ सेवा० ॥ विश्वनाथ की भक्ति कियो कर, यही जगतमें सार ॥ कृष्ण कहै चेतो अभिमानी, मानो सीख हमार ॥ सेवा० ॥ ७१ ॥

॥ कजली गंगाजी की ॥

ऐसी गङ्गाजी की महिमा तीनो लोकन में छाई। देखि भगीरथ को तप भारी भूतल में आई ॥ ऐसी० ॥ शारद गुण गावत है जाको सुर मुनि समुदाई। एकबेर जलपान किये नर होते सुर राई ॥ ऐसी० ॥ बड़े बड़े पापिन को तारे हरपुर पहुँचाई। पाप विलोकि दूरते काँपै छन में जरिजाई ॥ ऐसी० ॥ लखि चरित्र

जमराज कृष्ण कह मन में सकुचाई। देव मनुज शंकर सनकादिक सबको सुखदाई॥ ऐसी०॥ ८०॥

॥ कजली श्रीभैरोनाथजी की॥

जै जै भैरोनाथ कृपाल॥ दुष्ट दलन संतन हितकारी, काशी के कोतवाल॥ टेक॥ जटा जूट सिर माहिं सवाँरे, भस्म त्रिपुंड भाल में धारे, भृकुटी कुटिल चारु रतनारे, लोचन तीन बिसाल॥ जै जै०॥ कोटि काम छवि मुख पर राजै, तेज निहारि दिवाकर लाजै, रूप विलोकि विकट डर भाजै, कंपित होके काल॥ जै जै०॥ खप्पर एक हाथ में सोहै, एक हाथ में दण्ड धरो है, कृष्ण रंग देखत मन मोहै, उर कपाल को माल॥ जै जै०॥ व्याल यज्ञ उपवीत सोहायो, प्रगट दिगंबर भेष बनायो, जो कोई शरणागत आयो, कीन्हों ताहि निहाल॥ जै जै०॥ ८१॥

कजली ।

शिव के नगरिया की डगरिया लागे खासी रामा । रामा शोभाधाम जाको नाम कासी रे हरी ॥ हरि हरि शोभा धाम० ॥ बसैं विश्वनाथ वहाँ जाकी शक्ति दासी रामा । रामा पुरी है पवित्र सुखरासी रे हरी ॥ हरि० ॥ रहत निसंक सब पुरके निवासी रामा । रामा पारबती शंभु के उपासी रे हरी ॥ हरि० ॥ गंगा को प्रवाह लखि कटत उदासी रामा । रामा निरखि सिहाइं स्वर्गवासी रे हरी ॥ हरि० ॥ कीरत उदित हरिशंकर प्रकासी रामा । रामा फैरी रही चन्द्र के कलासी रे हरी ॥ हरि हरि शोभा० ॥ ८२ ॥

कजली ।

तेज की प्रभा है हिमवान के सुता की रामा । रामा निरखि सुघर वर झाँकी रे हरी । हरि हरि निरखि० ॥ रती की न रंभा की न रूप में रसाकी रामा । रामा त्रिभुवन बीच लीक जाकी

र हरी ॥ हरि हरि० ॥ कहत सुजस मनिमानी सारदा की रामा। रामा भावना भरी है बुद्धि वाकी रे हरी ॥ हरि हरि० ॥ कोऊ कहीं कहूँ कही रही वाको रामा। रामा प्रगट छरी है छवि जाकी रे हरी ॥ हरि हरि० ॥ कहैं हरिशंकर चरणरज ताको रामा। रामा नैनों से नदी बहै दया की रे हरी ॥ हरि० ॥ ८२ ॥

॥ कजली ॥

भाव से जो भजब भैया शिवशंकर को नमवाँ रामा। रामा गाढ़े दिनवाँ अइहैं तोरे कमवाँ रे हरी ॥ हरि हरि० ॥ सकल सुलभ जामे लागे नाहीं दमवाँ रामा। रामा छूटि जैहैं जियरा के भरमवाँ रे हरी ॥ हरि हरि० ॥ पुन्य के प्रताप पौली काशी में जनमवाँ रामा। रामा पुरी है पवित्र सुखधमवाँ रे हरी ॥ हरि हरि० ॥ गंगा के नहाये अधिक अरमवाँ रामा। रामा चमकै लगिहै चम् चम् तन कै चमवाँ रे हरी ॥ हरि

हरि ० ॥ कहै हरिशंकर हर हर सुमिरौ आठौ जमवाँ रामा । रामा तजि देहु खोटा सब करम वाँ रे हरी ॥ हरि हरि ० ॥ ८४ ॥

कजली ।

शिव को भव भय भंजन नाम । नाम निरंजन जन मन रंजन अगम अगोचर ठाम ॥ टेक ॥ एक नाम है जगपालन को, एक नाम संघारकरण को, एक नाम सेवक सज्जन को, देत सदा आराम ॥ शिव को० ॥ एकरूप को रंग न रेखा, एक रूप लख अलख अलेखा एक रूप सुर नर मुनि देखा, शक्ति बिराजत बाम ॥ शिव को ० ॥ मुक्ति हेतु तव नाम महेशं, शिव कल्यानकरं शुचि भेषं, हर हर हर दम् हरत कलेशं, सोहं शब्द सुखधाम ॥ शिव को० ॥ महिमा अखिल अखंड अपारं, कहत हरि शंकर संसारं, सुजस सुनत होवे निस्तारं, निशि दिन आठो याम ॥ शिव को भव ० ॥ ८५ ।

खेमटा ।

आनदघन को न कोई बन पावै ॥ टेक ॥ कर्म धर्म के वृक्ष लगे हैं, सत साखा जामे लहरावे ॥ आनद० ॥ प्रमपान जस फूल फूले हैं, निरखत ही भव रोग नसावै ॥ आनद० ॥ एहि तरुमाहिं मुक्तिफल लागे जाके चाखे अमर होय जावै ॥ आनद० ॥ मन्द सुगन्ध बयार बहुत है, हरिशंकर मेरे मन भावे ॥ आनद० ॥८६॥

खेमटा ।

हर हर भजले लहर हर करिहैं ॥ टेक ॥ जन्म जन्म के पाप प्रगट होय, योग अगिन में तुरंत सब जरिहैं ॥ हर० ॥ दीन दयाल काल कालहु के, दाया करि दारुन दुख दरि हैं ॥ हर० ॥ कहन हरिशंकर बिगड़ी जो, बातें लखि निज हाथ सँवरिहैं ॥ हर हर० ॥ ८७ ॥

खेमटा ।

हर हर कहना मगन मन रहना ॥ टेक ॥

भाव को भूषन सब तन सोहै, परहित नेम प्रेमपट पहना ॥ हर० ॥ दुख सुख एक भाव करि जानो, मानो बात पड़े सोइ सहना ॥हर०॥ दौलत की कछु चाह न राखो, राखो शंभु चरन की चहना ॥ हर० ॥ कहत हरीशंकर धृग जायो, जो नहिं दान दिये कर दहना ॥ हर० ॥ ८८ ॥

खेमटा।

जाको शिव के चरन चित लागै ॥ टेक ॥ बलिहारी धन धन वह नर को, जो यह मोह निसा से जागै ॥ जाको० ॥ लगत चरन चित होत परम हित, भवसागर को भरम भय भागै ॥ जाको० ॥ सब देवन देत है मागे से, भोला दानी देइहैं बिन मागे ॥ जाको० ॥ तुरतै रिझिहैं उमापति शंकर, गाल बजाय नाचहु आगे ॥ जाको० ॥ हर को हरीशंकर दम् पर दम्, सुमिरे संसै सकल दुख त्यागै ॥ जाको० ॥ ८९ ॥

खेमटा ।

ऐसी काशी मेरे मन भाई ॥ टेक ॥ सब गलियों में शिवा शिव थापे, महिमा अमित रही छबि छाई ॥ ऐसी० ॥ जित देखों तित आनद उपजे, सुर दुर्लभ सुख देत दिखाई ॥ ऐसी० ॥ निर्मल नीर निरखि गंगा को, जात दोष दुख दूर पराई ॥ ऐसी० ॥ कहत हरीशंकर गिरिजापति, पाँच कोश के बीच बसाई ॥ ऐसी० ॥ ६० ॥

खेमटा ।

हरदम भोला तोहार गुन गैबै ॥ टेक ॥ आनद वन के बीच बसावहु, राखहु आनन में लव लैबै ॥ हरदम० ॥ काशी बास त्रास नहिं यम की, रचि रचिके जस रुचिर बनैबै ॥ हर० ॥ होइहैं सुन्दर नाम चहूँ दिस, बिदित जगत शिवभक्त कहैबै ॥ हर० ॥ कहत हरीशं-कर काशी बसि, भजि हर हर कतहुँ नहिं

जैबे ॥ हर० ॥ ९१ ॥

गंगाजी का खेमटा ।

गंगा तोरि लहर लगै प्यारी ॥ टेक ॥ सुर-पुर त्यागि देव सब आवहिं, प्रेम बिमल बरसैं वारी ॥ गंगा० ॥ भूप भगीरथ जप तप कीन्हो, लीन्हो सुजस जग में भारी ॥ गंगा० ॥ पाप पापियन के काटन को, धार बनी जैसे आरी ॥ गंगा० ॥ हरिशंकर निज राख्यो जटा में, अति आनद होय त्रिपुरारी ॥ गंगा० ॥ ९२ ॥

खेमटा ।

काको टेरौं सुनत नहि कोई ॥ टेक ॥ दीन-दयाल दया के सागर, कासो कहों अपनो दुख रोई ॥ काको० ॥ कीधो भाँग चढ़ी है अति गाढ़ी, कीधो ताड़ी लगि गए सोई ॥ काको० ॥ शंभु सरन आयो चौथेपन, विरथा नाथ उमर सब खोई ॥ काको० ॥ कहत हरीशंकर शिव महिमा, है जग विदित नहीं गुण गोई ॥ काको० ॥ ९३ ॥

पुरबी ।

सुंदर आनदवन सुखदाई, शिवा शिव के मन भाई रे ॥ टेक ॥ बारानसी कहै कोउ काशी, वेद विदित जस गाई रे ॥ सुंदर० ॥ मुक्तिप्रवाह बहै जहँ गङ्गा, लखहु महाछवि छाई रे ॥सुंदर०॥ सब तीरथ निज निज थल तजिके, सेवहि ध्यान लगाई रे ॥ सुन्दर० ॥ कहत हरीशंकर यह पावन, पुरी पवित्र बसाई रे ॥ सुन्दर आनद बन० ॥ १४ ॥

पुरबी ।

कठिन कलिकाल कराल सतायो, दुखित जग जीव बनायो रे ॥ टेक ॥ पुण्यमान हैरान दिखाते, लंपट लहर मचायो रे ॥ कठिन० ॥ पुत्र पिता से रार करै जब, निरखि नारि सुख पायो रे ॥ कठिन० ॥ बेटी बेचन लगे ऊँच सब, नीच निगम पथ धायो रे ॥ कठिन० ॥ पाप प्रगट होय घट घट घूमै, धरनी धर्म समायोरे

॥ कठिन ० ॥ हरिशंकर करि कृपा मोहि पर, शम्भु कृपाल बचायो रे ॥ कठिन ० ॥ ९५ ॥

भैरवी।

मैंने तो न देखा कहीं, ऐसा जोगी जागता । टेक ॥ दीन जो अधीन होके, लौमे वाके लागता । करै काम रूरो पूरो ताको नहीं त्यागता ॥ मैंने ० ॥ राजा रंक छोटा बड़ा, वासे सब मांगता । सबहीको देता भोला, देने में न भागता ॥ मैंने ० ॥ सीलता सनेह साँचो देखि अनुरागता कहै हरिशंकर सुजस प्रेम पागता ॥ मैंने ० ॥ ९६ ॥

भैरवी।

हमारी सुधि लीजे दीनानाथ ॥ टेक ॥ तुम हो नाथ विश्व के दाता, मैं हूँ निपट अनाथ ॥ हमारी ० ॥ हानि लाभ जग में जस अपयस, है सब तुम्हरे हाथ ॥ हमारी ० ॥ विहरत हो आनद वन निसि दिन, भूत प्रेत

लिये साथ ॥ हमारी ० ॥ लखपत कुँअर कहैं करजोरे, नाय पदुम पद माथ॥ हमारी० ॥ ९७॥

भजन।

देत मोहिं तुमको लागत लाज ॥ टेक ॥ जाके पग पनही नहिं देखी, ताहि दियो गज-राज ॥ देत० ॥ जो कर दियो कर्म सँग मेरे तो तुमरो का काज ॥ देत० ॥ कहत चराचर हैं शिव समरथ, बड़े गरीबनिवाज ॥ देत० ॥ लखपत कुँअर बिपत गति लखि प्रभु, राखि लेहु पति आज ॥ देत० ॥ ९८ ॥

भजन।

शिव पद रज दृग अंजन देरी ॥ टेक ॥ नैन दोष भंजन यह अंजन, जन मन रंजन बसन हियेरी ॥ शिव० ॥ डूबत थाह सिन्धु की लागे, कटत कठोर विपत की बेरी ॥ शिव० ॥ जो यह रज रमाय रसना से, गावत शंभु सुयस शुभ टेरी ॥ शिव० ॥ लखपत कुँअर मेरो दुख

सुनि गुनि, करहु कृपा करुणाकर हेरी ॥ शिव० ॥ ९९ ॥

भजन ।

लगन लगायहु क्यों नहि हर से ॥ टेक ॥ का समुझाय कहों वह नर से, जाको उर कठोर पत्थर से ॥ लगन० ॥ पहले चेत कियो नहिं चित में, अब तो उठि न सकत तन दर से ॥ लगन० ॥ शिव की कृपा दृष्टि से अपयस जग जस अमृत होन जहर से ॥ लगन० ॥ लखपत कुँअर जन्म ले शिवपद, पूजहु दान देहु निज करसे ॥ लगन ० ॥ १०० ॥

भजन ।

शिव पद रज रुज सकल नसावे ॥ टेक ॥ रज की महिमा सुनत श्रवन से, तन मन मुख निर्मल व्है जावै ॥ शिव० ॥ यह रज राज देत त्रिभुवन को, चितवत रिपु सनमुख नहि आवै ॥ शिव ० ॥ राखी रज विधि विष्ण

हिये में, जाको सुयश चराचर गावै ॥ शिव०॥ लखपत कुँअर प्रताप रेगु को, भवनिधि को भय भरम नसावै ॥ शि० ॥ १०१ ॥

अथ कवित्त प्रारम्भः।

फूल के चढ़ाये व्है प्रसन्न फल चार देत, जल के चढ़ाये जमलोक से उबारिहैं। भनै हरिशंकर यों अच्छत चढ़ावतही, करिहै अनन्द बात बिगरी सुधारिहैं॥ नाथहैं अनाथनिके काशीपति विश्वनाथ, धीर धरु बेप्रयास तेरो दुख टारिहैं। तारे हैं अनेक जीव तारिबेको तार लग्यो, मोंकों ये अकोन है कि तैसे तोहिं तारिहैं॥ १ ॥

कवित्त।

तीरथ बरत नेम धरम करम करि, चाहे कोऊ तुला बैठि बाँटै जो रुपैया को। मिलिहै ना मुक्ति जुक्ति जतन अनेक किये, भूषन बसन दिये बिप्रन सुगैया को॥ भनै हरिशंकर जो

तरिबेको चाहै नर, दुर्लभ न कुछ यहाँ काशी के बसैया को ।.प्रात होत गंग अंग धोय शंभु नाम जपै, प्रेम से जो पूजै पग पारवती मैया को ॥ २ ॥

कवित्त ।

बसुधा में काशी की सुखासि छबि छाय रही, लागे गिरि जैसे धवल बिसाला हैं । घाट घाट हाट बाट बीथिन में थापे शिव, गंगा को प्रवाह धार कठिन, कराला है ॥ ऊँचो नव खण्ड माधोराय को धरेरा बन्यो, जाको मजबूत काम पोखता मसाला है । भनै हरिशंकरजू झल झल झलकत, कंचन को बाबा विश्वनाथ को शिवाला है ॥ ३ ॥

कवित्त ।

शंकर के दास सों भयंकर भै दूर रहै, बीर-भद्र जाको सुत प्रबल प्रतापी है । जन्मतही कोप करि यग्य को विध्वंस कियो, गर्द मर्द गर्व दच्छ

सीस धाय कापी है ॥ जाको बर पाप भयो रावण उदंड दंड, देवदल जीते लंक राजधानी थापी है । भने हरिशंकरजू इष्टदेव मेरे हर, कीरत विमल जाको तीनलोक व्यापी है ॥ ४ ॥

कवित्त ।

धन के घमंड में प्रचंड मद छाय रहे, नेकहू न दीनता विचारत गरीब की । भाखैं हरिशंकर जू वसुधा मै कोऊ नर, बिगरी बिलोकिके सुधारत गरीब की ॥ नाथ हैं अनाथन के विश्वनाथ गौरीपति, हरें पीर पल में निहारत गरीब की । करुणा के सिन्धु उदै मस्तक पै इन्दु जाके, राखि लेत टेक नाहिं टारत गरीब की ॥ ५ ॥

कवित्त ।

रसना ये रस चाखिबेको चाहै बार बार, खाइबेको पावे तहाँ तीन बेर खाती है । भाखैं हरिशंकर जू बाद करै झूठ मूठ, ऐसी निरलज्ज

लाज नेकहू न आती है ॥ वैरिहू बत्तीस सीस ठाढ़े जेहि पीसिबेको, रहत निसंक डर ताके ना डराती है । निमकहराम काम ऐसे ये निकाम करे, शंभु नाम लेत चेत काहे अलसाती है ॥ ६ ॥

सवैया ।

आये चलाव के बासर ये, गज बाजि इमारत संगन जैहै । सारी बिभूति रहैगी परी, मिलि पूत सपूत न कोऊ लुटैहै । भाई तिया परिवार सबै, मन मै दिन चारि कलौं पछितैहै । तोसों कहौं हरिशंकरजू, यमदंड सों शंकरनाम बचैहै ॥७ ॥

दोहा ।

जो चितदै गावै पढ़ै, धरे उमा शिव ध्यान ।
सकल मनोरथ पूजही, बिमल होय उरग्यान ॥

इति श्रीशैवमनोरञ्जनी चतुर्थ भाग
प्रथम अंक समाप्तम् ।